अतींद्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि

श्रीराम शर्मा आचार्य

अतींद्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि

*

लेखक :

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : १९.०० रुपये

विषय-सूची

मनुष्य स्वयं ही एक जादू है। उसकी चेतना चमत्कारी है। उसकी दौड़ जिधर भी चल पड़ती है, उधर ही चमत्कारी उपलब्धियाँ प्रस्तुत करती है। बाह्य जगत् की अपेक्षा अंतर्जगत् की शक्ति और सक्रियता अदृश्य होकर भी कहीं अधिक प्रखर और प्रभावपूर्ण होती है। मस्तिष्क में क्या विचार चल रहे होते हैं ? यह दिखाई नहीं देता, पर क्रिया व्यापार की समस्त भूमिका मनोजगत् में ही बनती है।

अंतर्जगत् विशाल और विराट् है, उससे एक व्यक्ति ही नहीं, बड़े समुदाय भी प्रेरित और प्रभावित होते हैं।

भविष्यवाणियों से सार्थक दिशा बोध

"पूँजीवाद तथा साम्यवाद एक कमरे में कैसे रह सकते हैं ?" इटली में वह शक्ति कहाँ, जो वह विश्व युद्ध में भाग ले ? मुसोलिनी का उदय एक अपराजेय शक्ति के रूप में हुआ है। उसका पतन असंभव है ? विश्व-संस्था का निर्माण एक असंगत कल्पना है, जिसकी स्थापना कभी भी संभव नहीं ?" एक पत्रकार ने दृढ़ शब्दों में इटली के सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता फादर पियो का प्रतिवाद किया। पियो का कथन था—

"द्वितीय विश्व युद्ध की अनेक विचित्रताओं में अमेरिका और रूस दोनों का एक साथ मित्र सेना के रूप में युद्ध में भाग लेना भी सम्मिलित है। इस युद्ध में इटली को भी भाग लेना पड़ेगा और भाग ही नहीं, युद्ध समाप्ति की पहल भी वही करेगा। तब तक मुसोलिनी का पतन हो चुका होगा और एक बार इटली को भयंकर मुद्रा स्फीति, महँगाई तथा देशव्यापी संकटों का सामना करना पड़ेगा। इस विश्व युद्ध का आखिरी चरण इतना भयंकर होगा कि दुनिया के सभी शीर्ष राजनीतिज्ञ यह सोचने को विवश होंगे कि युद्ध समस्याओं का अंतिम हल नहीं है। वार्ताओं से भी समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं, इस भावना से प्रेरित एक विश्व संस्था का निर्माण होगा; किंतु उसमें राजनैतिक अखाड़ेबाजी के अतिरिक्त होगा और कुछ भी नहीं।"

ऊपर जिस पत्रकार ने फादर पियो से इन भविष्यवाणियों की संभावनाओं पर आशंका व्यक्त की थी, तब तक अधिक ख्याति प्राप्त न होने के कारण बहुत अधिक लोगों को तो विवाद का अवसर नहीं मिला, किंतु जब उसी पत्रकार द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित फादर पियो की भविष्यवाणियाँ एक-एक कर सच होती गईं तो एकाएक उनके नाम की इटली में धूम मच गई। इटली के एक

गिरजाघर में पादरी श्री पियो अत्यंत विनम्र स्वभाव, मधुरभाषी, ऊँचा शरीर, स्वस्थ गौर वर्ण और विनोदप्रिय स्वभाव के थे। परमात्मा पर उनकी अनन्य आस्था थी। अपनी निश्चिंतता का आधार भी वह इसी आस्था को मानते थे। उनका कहना था कि जब परमात्मा को अपनी हर संतान के हित की चिंता आप है, तो मनुष्य व्यर्थ की कल्पनाओं में क्यों डूब मरे ?

उन दिनों अमेरिका में प्रेसीडेंट निक्सन चुनाव लड़ रहे थे। इटली में भी उनके पक्ष-विपक्ष की बातें चलती रहती थीं। एक दिन यह प्रसंग फादर पियो के समक्ष भी उठा, तो उन्होंने कहा—"शक नहीं, निक्सन अब तक के सब अमेरिकी शासनाध्यक्षों की अपेक्षा अधिक बहुमत से विजयी होंगे; किंतु जिस तरह उफान आग को बुझा देता है और स्वयं भी तली में चला जाता है, उसी प्रकार निक्सन महोदय उतने ही बदनाम राष्ट्रपति होंगे और उन्हें बीच में ही गद्दी छोड़ने तथा जनसत्ता के अधिकारों के हनन का अपयश भोगना पड़ेगा।"

उस समय कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इतने शक्तिशाली प्रेसीडेंट निक्सन को वाटर गेट कांड ले डूबेगा और उस कारण उन्हें महाभियोग तक का सामना करना पड़ेगा; पर इतिहास ने यह सब कुछ कर दिखाया।

फादर पियो की तरह ही उत्तर-पूर्वी कनाडा के हायलैंड प्रदेश की निवासिनी माल्वा डी. भी अपनी सही भविष्यवाणियों के लिए विख्यात रही हैं। उन्हें अनायास ही वह शक्ति प्राप्त हो गई, जिससे वह लोगों के फोटो या हाथ की लिखावट देखकर उसके सुदूर भविष्य को जान लेती हैं। इन भविष्यवाणियों के द्वारा न केवल उन्होंने अनेक लोगों को उनके खोये बच्चों से मिलाया, आजीविका के रास्ते बताए, अपितु सैकड़ों लोगों की आकस्मिक दुर्घटनाओं से भी रक्षा की। ऐसे व्यक्तियों में स्वयं उनके पति भी थे, जो उनसे परामर्श लिए बिना कभी भी कोई काम नहीं करते थे।

उनकी भविष्यवाणियों में केनेडी की राष्ट्रपति चुनाव में विजय तथा उनकी मृत्यु की पूर्व घोषणा का अत्यधिक महत्त्व रहा। उन्होंने सन् १९६१ में यह भविष्यवाणी कर दी थी कि २२ नवंबर १९६३ को राष्ट्रपति केनेडी की हत्या कर दी जायेगी। घोषणा को लिखकर उन्होंने एक लिफाफे में बंद कराकर—उसे सरकारी प्रामाणिकता में रजिस्ट्री कराई। पीछे जब उनकी हत्या के दिन उसे खोला गया तो लोग आश्चर्यचकित रह गये कि वह वही तिथि थी, जो माल्वा डी० के पूर्व रजिस्ट्री कराये लिफाफे में थी।

इस चर्चा का एक रोचक अध्याय यह था कि उसी दिन उन्होंने वह भी घोषणा करा दी कि—"३ अगस्त १९६४ को चर्चिल की मृत्यु हो जायेगी तथा ८ जून १९६५ को कनाडा में एक ऐसी जबर्दस्त विमान दुर्घटना होगी, जिसमें एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा।" पूर्व कथन से प्रभावित होने के कारण इस बार तो उनकी घोषणाओं को विधिवत् टेलीविजन में भी दिखाया गया। जिस दिन उनका यह कार्यक्रम प्रसारित हो रहा था, उस दिन एक भी टी० वी० सेट बंद नहीं था। लोग भारी संख्या में पहले से ही टी० वी० सेट घेरकर खड़े हो गये थे। यह दोनों भविष्यवाणियाँ अखबारों में भी प्रकाशित हुईं और जब निश्चित तिथियों सहित वे पूर्ण सच निकलीं, तो लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। लोगों में अपूर्व जिज्ञासा विकसित होती जा रही है, आखिर मनुष्य शरीर और उसकी बुद्धि में ऐसे कौन से तत्त्व विद्यमान हैं, जो बहुत अधिक समय बाद में होने वाली घटनाओं का भी बोध करा देते हैं। अब तक मनुष्य शरीर और उसकी रचना को मात्र भौतिक दृष्टि से देखा जाता था, पर समय की इन सिमटती हुई दूरियों ने मनुष्य को अब इतना ध्यानस्थ कर दिया कि उसे मनुष्य जीवन के प्रति सुनिश्चित दृष्टिकोण प्राप्त किये बिना चैन न मिलेगा।

इन भविष्यवाणियों से जहाँ उच्च सत्ता की उपस्थिति, मानवता के उज्ज्वल भविष्य, इसे देश की अकल्पित प्रगति और इससे आध्यात्मिक पुनरुत्थान की आशा बँधती है, वहीं हमारे चिंतन

में स्वस्थ अध्यात्मवादी दृष्टिकोण का भी समावेश होता है, जो व्यक्ति, समाज और संसार सभी के लिए उज्ज्वल संभावनाओं का अध्याय है। संसार की शांति और प्रगति इसी दृष्टिकोण पर आधारित है, यह सुनिश्चित मानना चाहिए।

इन भविष्य वक्ताओं की ही कोटि की एक और पश्चिमी महिला पराज्ञान की शक्ति से संपन्न होने के कारण ख्याति अर्जित कर चुकी थी। उक्त महिला का नाम था—फ्लोरेन्स।

फ्लोरेन्स की अतींद्रिय सामर्थ्य पीटर हारकोस की तरह विस्मयकारी थी। वह हाथ से किसी वस्तु को छूकर उस वस्तु से संबंधित व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ बता सकती थी।

न्यूजर्सी नगर की रहने वाली फ्लोरेन्स से उसके साथी नेबेल ने एक बार कहा कि—"आप संत के बारे में तो बताती ही रहती हैं। मेरे बारे में भी कुछ बताइए।" नेबेल प्रसारण-सेवा का कर्मचारी था। उसने माइक फ्लोरेन्स की ओर बढ़ाया तो फ्लोरेन्स ने उसे दाहिने हाथ में थाम लिया। १५-२० सैकंड तक वह शांत रही। फिर बोली—"आप शीघ्र ही किसी दूसरे राज्य के प्रसारण करेंगे।"

नेबेल हँस पड़ा। उसने कहा कि—"आपसे मैं यह अच्छा मजाक कर बैठा। अब अगर हमारे इस कार्यक्रम को हमारी कंपनी के किसी संचालक ने सुना होगा, तो दूसरे राज्य में भेज दिया जाऊँगा। यहाँ से अवश्य मेरा कार्यकाल समाप्त समझिए।"

कुछ मिनटों बाद कंट्रोलरूम में फोन घनघना उठा। वह नेबेल के लिए ही फोन था। कंपनी के जनरल मैनेजर ने उसे बताया कि "शीघ्र ही न्यूयार्क से एक कार्यक्रम शुरू किया जायेगा। वहाँ तुम्हें ही भेजने का निर्णय लिया गया है, किंतु यह घोषणा कल होगी। अभी इसे गुप्त ही रखना है।" फ्लोरेन्स ने जो कुछ बताया है—वह है तो सच, पर उसे यह बात ज्ञात कैसे हुई ? यही आश्चर्य का विषय है। नेबेल फ्लोरेन्स से यह भी नहीं कह पा रहा था कि आपकी भविष्यवाणी सच है।

फ्लोरेन्स ने अपनी पराशक्ति के बल पर खोये हुए व्यक्तियों, वस्तुओं और हत्या के मामलों जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर संबद्ध व्यक्तियों तथा पुलिस को आवश्यक जानकारी देकर मदद की।

न्यूयार्क की टेलीफोन कंपनी के कुछ दस्तावेज गुम हो गये। ढूँढ़ने पर मिल ही नहीं रहे थे। अंत में कंपनी ने फ्लोरेन्स से प्रार्थना की कि वह उन कागजातों के बारे में बताएँ। फ्लोरेन्स कंपनी के दफ्तर गई, वहाँ फाइलों की केबिनेट को छुआ और बतलाया कि कागज कहीं गये नहीं, इसी दफ्तर में है। एक क्लर्क ने भूल से उन्हें अठारहवीं मंजिल पर स्थित स्टॉकरूम में रखी हरे रंग वाली अलमारी में छोड़ आया था। ढूँढ़ने पर वे दस्तावेज वहाँ सुरक्षित मिल गये।

जुलाई १९६४ में ही अमेरिका में बाल्टीमोर शहर की एक ग्यारह वर्षीया बच्ची घर से सहसा गायब हो गई, जिसका कुछ भी पता पुलिस नहीं लगा पा रही थी। वहाँ के अखबार 'न्यूज अमेरिकन' ने अपने संवाददाता को फ्लोरेन्स के पास भेजा। फ्लोरेन्स ने बताया कि उस बालिका के पड़ौस के घर के तहखाने में कुछ दिखाई दे रहा है, उसे देखा जाए।

इसके दो दिन बाद पुलिस अधिकारी जब लड़की की डायरी लेकर फ्लोरेन्स के पास पहुँचे, तो उसे हाथ में लेने के बाद फ्लोरेन्स ने निश्चित रूप से यह घोषणा कर दी कि, इस बालिका की हत्या की जा चुकी है और लाश पड़ौस के घर में तहखाने में दफन है। खोज करने पर लड़की का शव वहीं मिला।

एक बार एक लड़की की हत्या के प्रकरण में पुलिस जब कोई सुराग न पा सकी, तो शव के पास पड़ा एक सिक्का लेकर फ्लोरेन्स के पास पुलिस अधिकारी पहुँचा। उस सिक्के को हाथ में लेकर फ्लोरेन्स ने बताया कि, यह आखिरी बार जिस व्यक्ति के हाथ में था—वह साढ़े पाँच फुट लंबा है, १६० पौंड वजन वाला तथा जिस इमारत में यह शव प्राप्त हुआ है, उसके पास वाले मदिरालय में आता-जाता रहता है। पुलिस ने इस आधार पर खोज

की और शीघ्र ही अपराधी को पकड़ लिया। रूमाल, पुस्तक, डायरी, पैन, अँगूठी आदि कोई भी वस्तु छूकर वह संबद्ध व्यक्ति के बारे में बता सकती थी। पर फ्लोरेन्स ने अनुभव किया कि, ऐसे प्रत्येक परा-दर्शन के बाद, जिसमें यह प्रयत्नपूर्वक अपनी शक्ति खर्च करती है, उसे अपनी अतींद्रिय शक्ति में कुछ ह्रास-सा अनुभव में आता है।

शीघ्र ही उसने अपने को सीमित कर लिया। अपनी शक्ति का प्रदर्शन तो फ्लोरेन्स ने पूरी तरह बंद ही कर दिया, वह लोगों को जानकारियाँ अब नहीं देती। अत्यावश्यक एवं विषम परिस्थितियों में ही वह लोगों को जानकारी देती। उसने ध्यान-उपासना एवं स्वाध्याय में अधिक समय लगाना प्रारंभ कर दिया। न्यूजर्सी के अपने मकान को ही उसने साधना केंद्र ही बना डाला। कुछ वर्षों बाद उसने लेखन क्रम प्रारंभ किया। उसकी पुस्तकें बाजार में तेजी से बिकने लगीं। इसमें से "गोल्डन लाइट ऑफ ए न्यू एरा" तथा "फाल ऑफ द सेंसेशनल-कल्चर" अधिक प्रसिद्ध हुई। मनोचिकित्सक एवं सम्मोहन कला विशारद डॉ० मोरे वर्सटीन से उसकी मैत्री विकसित हुई। वह समाज सेवा के कार्यों में अधिकाधिक रुचि लेने लगी।

भविष्यवाणियों के इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए यह तथ्य स्पष्ट होचला है कि, किन्हीं व्यक्तियों में पूर्वाभास की क्षमता आश्चर्यजनक रूप से पायी जाती है। उनकी भविष्यवाणियाँ असंदिग्ध रूप से समय पर सिद्ध होती हैं। इसका कारण क्या है ? इस शक्ति को प्राप्त कर सकना हर किसी के लिए संभव है भी या नहीं ? है, तो किस प्रकार संभव है ? इन प्रश्नों का उत्तर आज उपलब्ध नहीं है, फिर भी इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि, संसार में असंदिग्ध भविष्यवाणियाँ कर सकने वाले लोग भी हुए हैं।

भविष्यवक्ताओं की परंपरा

सेनेवा कोलंबस से १५०० वर्ष पूर्व जन्मा था, किंतु उसने तभी यह भविष्यवाणी कर दी थी कि, एक दिन पृथ्वी में कभी ऐसे

आयुधों का आविष्कार होगा, जिसके बारे में कल्पना करना भी कठिन है। प्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्दो द विंची ने आज से ४०० वर्ष पूर्व ही यह बता दिया था—"आगे लोग आकाश में उड़ा करेंगे।" इससे भी महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी जोनाथन स्विफ्ट की है। जोनाथन ने 'गुलिवर की भ्रमण कथा' में एक लीलीपुट नामक द्वीप का चित्रण किया है। उसी में बताया है कि, मंगल ग्रह के चारों ओर दो चंद्रमा चक्कर लगाया करते हैं, उनमें से एक चंद्रमा दूसरे से दुगुनी तेज गति से चक्कर लगाता है। उस समय उस बात को गप्प कहा जाता था; किंतु १८७७ में अमेरिका की नोबेल आब्जरवेटरी ने एक शक्तिशाली दूरबीन के द्वारा यह पता लगाया कि यथार्थ ही मंगल ग्रह में दो चंद्रमा हैं, उनमें से एक की गति दूसरे से दुगुनी है। स्विफ्ट ने बिना किसी यंत्र के यह कैसे जान लिया ? इसका उत्तर माँगा जाए तो विज्ञान के पास सिवाय चुप्पी के और कोई उत्तर न होगा।

भविष्यवक्ता कब से होते रहे हैं और सर्वप्रथम अनागत भविष्य का पूर्वाभास किसे हुआ था ? इसका भी कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता, पर बहुत पुराने समय से भविष्यदर्शी हुए हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास में तो भविष्यद्रष्टा ऋषियों का सुविस्तृत विवरण उपलब्ध है। पश्चिमी देशों में भी इस प्रकार के ढेरों उदाहरण हैं। स्पेन की सर्वश्रेष्ठ समझी जाने वाली इमारत "इस्कोनियल" वहाँ के कुख्यात राजा फिलिप द्वितीय ने बनवाई थी। इसने उसे अपनी पत्नी मेरी ट्यूडार की स्मृति में बनवाया था। इस भवन के एक कक्ष में यह व्यवस्था भी की गई थी कि स्पेन के राजाओं की मृत्यु के बाद उनके शव उसी में गाड़े जाया करें और उनके स्मारक बना दिये जाया करें।

फिलिप को एक भविष्यवक्ता ने कहा था कि—स्पेन का राजवंश २४ पीढ़ियों तक चलेगा। उसे इस पर पूरा विश्वास था। इसलिए उसने चौबीस कब्रें ही पूर्व नियोजित ढंग से बनाकर रखी थीं।

सन् १९२९ में स्पेन की रानी मैरिया क्रिस्टिना की मृत्यु हुई। उसका मृत शरीर २३वें गड्ढे में गाड़ा गया। आश्चर्य यह कि वह शताब्दियों से पूर्व घोषित भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य हुई। इसके बाद अलफोनो राजगद्दी पर बैठा। उसे दो वर्ष बाद ही गद्दी छोड़नी पड़ी और साथ ही राजतंत्र का भी अंत हो गया। इसके बाद स्पेन में गणतंत्र स्थापित हुआ और अलफोनो स्पेन का चौबीसवाँ—अंतिम राजा सिद्ध हुआ।

महायुद्ध छिड़ने से पहले की बात है। लंदन के स्पेन दूतावास में एक भोज दिया, जिसमें ब्रिटेन के तत्कालीन विदेश मंत्री लार्ड हैली फैक्स सम्मिलित थे। आमंत्रित अतिथियों में भविष्यवक्ता डी० व्होल भी थे, जो संयोग से विदेश मंत्री महोदय की बगल में ही बैठे थे। उन्होंने चुपके से भावी महायुद्ध और उसके संबंध में हिटलर की पूर्व योजनाओं की जानकारी बताने का अनुरोध किया। उसके उत्तर में व्होल ने कई ऐसी बातें बताईं, जो अप्रत्याशित थीं। हैली फैक्स ने वायदा किया कि, यदि उनकी भविष्यवाणी सच निकली तो उन्हें सम्मानित सरकारी पद दिया जाएगा। भविष्यवाणी सच निकली। तदनुसार उन्हें फौज में कैप्टिन का पद दिया गया।

हिटलर के सलाहकारों में पाँच दिव्यदर्शी भी थे। उनका नेतृत्व विलियम क्राफ्ट करते थे। उनकी सलाह को हिटलर बहुत महत्त्व देता था। इस मंडली के एक सदस्य किसी समय व्होल भी रह चुके थे। वे जानते थे कि, हिटलर के ज्योतिषी उसे क्या सलाह दे रहे होंगे ? उस जानकारी को वह इंग्लैंड के अधिकारियों को बता देता। इन जानकारियों से ब्रिटेन बहुत लाभान्वित हुआ और उसने अपनी रणनीति में काफी हेर-फेर किए। फौज के महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व कुछ फौजी अफसरों को सौंपे जाने थे। उनमें से किसका भविष्य उज्ज्वल है ? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने एक आदमी से जनरल मान्ट गोमरी की ओर इशारा किया। उन्हें ही वह पद दिया गया और अंततः उन्होंने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करके दिखाई। जापान के जहाजी बेड़े को बुरी तरह नष्ट करने की जो सफल योजना बनाई

गई थी, उसमें भी व्होल से गंभीर परामर्श किया गया था। महायुद्ध समाप्त होने तक ही उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भविष्यवाणियों का लाभ दिया। पीछे उन्होंने वह कार्य पूरी तरह छोड़ दिया और अपने पुराने धार्मिक लेखन कार्य में लग गये।

संसार के राजनेताओं में से ऐसे कितने ही मूर्धन्य सत्ताधीश रहे हैं जिन्होंने परखे हुए अतींद्रिय शक्ति संपन्न लोगों से महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम निर्धारण करने के लिए परामर्श लेते रहना आवश्यक समझा और उसकी उचित व्यवस्था बनाई।

अमेरिकी राष्ट्रपति जान्सन और सेक्रेटरी मैकेनहारा, वियतनाम युद्ध की चालें निर्धारित करने में एक देवज्ञ से अक्सर परामर्श करते रहते थे। हिटलर और चर्चिल के बारे में जो रहस्य अब प्रकट हुए हैं, उनसे यह तथ्य भी सामने आया है। उन्होंने विश्वस्त भविष्यवक्ताओं के परामर्शों को सदा असाधारण महत्त्व दिया। चर्चिल ने लुई व्होल को यह जासूसी सौंपी थी कि, वे यह पता लगा दिया करें कि हिटलर के ज्योतिषी उसे क्या-क्या परामर्श देते हैं ? कहते हैं कि गलत भविष्य कथन करने के अपराध में एक भविष्यवक्ता को हिटलर ने मौत के घाट उतरवा दिया था।

राष्ट्रपति केनेडी की हत्या की पूर्व सूचना भविष्यवक्ता पीटर वीडन प्रकाशित कर चुके थे। एक ज्योतिषी ने अन्य आधार पर प्रेसीडेंट केनेडी के ठीक उसी समय मरने की बात प्रकाशित कराई थी, जिस समय कि वे वस्तुतः मर गए। उसका विचित्र तर्क यह था कि, नियति का विधान हर बीस वर्ष बाद अमेरिका प्रेसीडेंट को उदरस्थ कर जाता है। चाहे वह स्वाभाविक मौत से मरे या हत्या से। सन् १८६१ में लिंकन, १८८१ में गारफील्ड, १६०१ में मैकिन्ले, १६२१ में हार्डिंग, १६४१ में रूजवेल्ट मरे थे। इसी श्रृंखला में १६६१ में केनेडी प्रेसीडेंट बने। उस ज्योतिषी का कहना था कि, केनेडी पर भी २० साल बाद वैसा ही संकट हो सकता है। कहना न होगा कि यह आशंका पूर्णरूप से सही हुई। प्रेसीडेंट केनेडी की हत्या की पूर्व

सूचना प्रकाशित करने वालों में श्रीमती जीन डिक्सन और श्रीमती शर्ल स्पेन्सर नामक दो महिला देवज्ञ भी थीं।

दैनिक हिंदुस्तान में श्री परिपूर्णानंद वर्मा का एक लेख छपा, जिसमें उन्होंने एक अंग्रेज वृद्धा की पूर्वाभास शक्ति का अद्‌भुत वर्णन किया है। यह महिला श्रीमती सरोजनी नायडू के घनिष्ठ परिचय में थी। एक दिन श्रीमती नायडू के घर मुहम्मद अली जिन्ना और उनकी नवविवाहिता पारसी पत्नी आए। अंग्रेज वृद्धा आदि से अंत तक उन्हें आँखें फाड़कर देखती रही। जब वे चले गए, तो श्रीमती नायडू ने उस अशिष्टता के लिए बुरा-भला कहा कि, किसी मेहमान की ओर इस तरह घूरकर देखते रहना असभ्यता है।

अंग्रेज महिला ने कहा—मुझे इनमें कुछ आश्चर्य दीखा। यह परम सुंदरी महिला तीन वर्ष में आत्म हत्या कर लेगी और मि० जिन्ना बादशाह बनेंगे। यह मैंने इन लोगों का भविष्य देखा है। इसी तथ्य को मैं उनके चेहरे पर पढ़ रही थी।

उपस्थित सभी लोग हँसे और उन दोनों बातों को असंभव बताया। उस परम सुंदरी पारसी महिला पर जिन्ना बेहद आसक्त थे। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त थे फिर वह आत्म हत्या क्यों करेगी ? उसी प्रकार उन दिनों किसी की कल्पना तक न थी कि, पाकिस्तान की माँग जोर पकड़ेगी और वह किसी दिन एक वास्तविकता बनेगी तथा जिन्ना उसके अध्यक्ष बनेंगे। दोनों ही बातें बुद्धिसंगत न थीं, इसलिए उस महिला की बात को निरर्थक माना गया।

पर कुछ दिन बाद दोनों ही बातें सच हो गईं। उस नवयुवती पत्नी को आत्म हत्या करनी पड़ी। पाकिस्तान बना और जिन्ना उसके अध्यक्ष—बादशाह हुए।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति जैदी को इस भविष्य-वाणी की जानकारी थी। पाकिस्तान बनने के पाँच-छह वर्ष बाद श्री जैदी को लंदन जाना पड़ा। उन्हें उस अंग्रेज महिला की याद आई। पता उनकी डायरी में नोट था। वे उसके घर गए। उन्होंने उस महिला

से भारत तथा पाकिस्तान के भविष्य के बारे में पूछा, तो उसने इतना ही कहा—पूर्वी पाकिस्तान टूटकर अलग हो जायेगा। समय कितना लगेगा, कह नहीं सकती। उन दिनों पाकिस्तान के इस प्रकार विभाजन होने की कोई आशंका नहीं थी, इसलिए वह कथन अविश्वस्त जँचा। पर समय ने बताया कि, वह बात सच हो गई और उस अंग्रेज महिला की पुरानी भविष्यवाणी अक्षरशः सच निकली।

इस संदर्भ में इंडोनेशिया की एक घटना भी उल्लेखनीय है। २२ जून १९५५ के दिन इंडोनेशिया में सूर्यग्रहण पड़ा था। हिंदू और बौद्ध दर्शन से प्रभावित होने के कारण इंडोनेशियाई लोगों में भी धर्म, आत्मा, परमात्मा के संबंध में लोगों की काफी जिज्ञासाएँ रहती हैं। ऐसे अवसरों पर वहाँ भी धार्मिक चर्चाएँ होती हैं। ऐसी ही बातचीतें कुछ लोगों में चल रही थीं। 'पाकसुबु' नामक एक अधेड़ व्यक्ति ने बताया—"यह उसके जीवन के लिए हानिकारक है और ऐसा लगता है कि, मेरी मृत्यु के दिन समीप आ गये हैं।"

पाकसुबु के स्वास्थ्य में कोई खराबी न थी। उसकी आयु भी कोई अधिक न थी, इसलिए लोगों ने उसकी बात को हँसी में उड़ा दिया।

एक सप्ताह बीतने को आया—पाकसुबु सामान्य दिनों की तरह स्वस्थ और भला-चंगा रहा; किंतु सातवें दिन उसे हल्का-हल्का सा ज्वर चढ़ा और थोड़ी ही देर में उसका प्राणांत हो गया। एक सप्ताह पूर्व उसे जिस बात का आभास हुआ था, वह इतना सत्य निकला कि, इस पर उसके मित्रों और परिचितों ने बड़ा आश्चर्य किया।

'लंदन से हांगकांग तक' पुस्तक के विद्वान् लेखक हुसेन रोफे एक बार अपने घनिष्ठ मित्र जे० बी० से मिलने गये। यह अवसर बहुत दिन बाद आया था, इसलिए हुसेन रोफे अनेक कल्पनाएँ, अनेक योजनाएँ लेकर मित्र महोदय के पास गये थे; किंतु जैसे-जैसे वह घर के समीप पहुँचते गये, न जाने क्यों उनके मस्तिष्क में निराशा बढ़ती गई। अपनी इस अनायास स्थिति पर स्वयं रोफे को भी हैरानी थी। धीरे-धीरे उनके मस्तिष्क में न जाने

कहाँ से दबे-दबे विचार उठने लगे कि, जे० बी० अपनी आत्महत्या करने जा रहा है। यह विचार भी इतने जोरदार कि उन विचारों के आगे और कोई विचार टिक ही न पा रहा था।

रोफे के आश्चर्य का उस समय ठिकाना न रहा, जब मित्र के घर पहुँचते ही उसने पाया कि—वह जहर खरीद लाया है और आत्महत्या की बिल्कुल तैयारी में ही है। हुसेन रोफे ठीक समय पर न पहुँच गए होते, तो उन सज्जन ने अपना प्राणांत ही कर लिया होता।

इस प्रकार की अतींद्रिय दिव्य शक्ति कोई भी व्यक्ति अपने में विकसित कर सकता है। उसके लिए योग साधनाओं का विधान है। किन्ही व्यक्तियों में यह शक्ति अनायास ही जाग्रत् हो जाती है। इसे परमात्मा की अनुकंपा या पूर्व जन्मों के सुकृत्यों का सत्परिणाम ही कहा जा सकता है। व्यक्ति के भीतर प्रसुप्त दिव्य शक्तियों का आधार बताते हुए मैत्रायण्युपनिषद् के पंचम प्रपाठक में कहा गया है—

द्विधा वा एष आत्मानं बिभर्त्ययं यः प्राणो यश्चासावादित्योऽथ द्वौ वा एतावास्तां पंचधा नामांतर्बहिश्चाहोरात्रे तौ व्यावर्तेते असौ वा आदित्यो बहिरात्मान्तरात्मां.......... एवाश्रितोऽन्नमत्ति ।।१।।

अर्थात्—"वह परमात्मा दो प्रकार की आत्माओं (स्वरूपों) को धारण करता है, वह जो प्राण हैं और जो सूर्य है, ये दोनों प्रथम हुए। वे भीतर और बाहर दिन-रात फिरा करते हैं, वह सूर्य बाहर का अंतरात्मा है और प्राण अंतरात्मा है। इसकी गति को देखकर यह अनुमान किया जा सकता है कि, यह आत्मा है। वेद कहते हैं कि, यह गति रूप ही है। जिस विद्वान् के पाप नष्ट हो चुके हैं, वह सबका अध्यक्ष होता है, उसकी निष्ठा परमात्मा में ही होती है। उसका ज्ञान-चक्षु खुल जाता है और अंतरात्मा में ही स्थित रहता है। वह गति द्वारा बाहर भी चला जाता है। आत्मा की गति का अनुमान किया जा सकता है। ऐसा वेद कहते हैं.........।"

□ □

अतींद्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि व आधार

अतींद्रिय ज्ञान अब एक वैज्ञानिक तथ्य है। सामान्यतः मात्र ज्ञानेंद्रियों की सहायता से ही ज्ञान संपादन किया जाता है, पर अब विश्लेषण का विषय छठी इंद्रिय भी बन गयी है। मनुष्य कई बार ऐसी जानकारियाँ प्राप्त करता है, जो इंद्रिय ज्ञान की परिधि से सर्वथा बाहर की बात होती है। अमेरिकी मनोरोग चिकित्सक ने अपनी पुस्तक "बियोंड टेलीपैथी" में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है, जिनसे सिद्ध होता है कि कितने ही मनुष्यों को समय-समय पर दूरस्थ स्थानों पर घटित हुई घटनाओं का ज्ञान बिना किसी साधन-संचार के अनायास ही होते देखा गया है।

प्रामाणिक इतिहासकार 'हिरोडोटस' ने ईसा से पूर्व ५४६-५६० में हुए लीडिया के राजा क्रोशस का विवरण लिखा है। उसमें कहा गया है कि, राजा अपने शत्रुओं से आतंकित था। उसने किसी भविष्यवक्ता की सहायता से रास्ता निकालने की बात सोची। प्रामाणिक भविष्यवक्ता को ढूँढ़ निकालने के लिए उसने तत्कालीन सात प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं के पास अपने दूत भेजे और कहा, जिस समय मिलें उसी समय वह पूछें—'अब क्रोशस' क्या कर रहे हैं ? इधर राजा ने अपना घड़ी-घड़ी का कार्य विवरण लिखने की व्यवस्था कर दी।

छह के उत्तर तो गलत निकले, पर सातवें उत्फी नामक भविष्यवक्ता की बात अक्षरशः सही निकली। उसने दूत के बिना पूछे ही बताया—"क्रोशस इस समय पीतल के बर्तन में कछुए और भेड़ का मिला हुआ मांस भून रहा है।" पीछे राजा ने उस भविष्यवक्ता को बुलाया और उसके परामर्श से कठिनाइयों से त्राण पाया।

इटली के एक पादरी अलोफोन्सस लिगाडरी ने अर्धमूर्च्छित स्थिति में दिवा स्वप्न देखा कि—"ठीक उसी समय रोम के बड़े पोप का स्वर्गवास हो गया है।"

उन दिनों सन् १७७४ में यातायात या डाक-तार का भी कोई प्रबंध न था। इतनी दूर की किसी घटना की ऐसी जानकारी जब उन्होंने अपने शिष्यों को सुनाई, तो किसी को इसका कोई आधार प्रतीत नहीं हुआ। बड़े पोप बीमार भी नहीं थे। फिर अचानक ऐसी यह मृत्यु किस प्रकार हो सकती है ? कुछ ही दिन बाद समाचार मिला कि पोप की ठीक उसी समय, वैसी ही स्थिति में मृत्यु हुई थी, जैसी कि लिगाडरी ने विस्तारपूर्वक बताई थी।

सन् १७५६ की वह घटना प्रामाणिक उल्लेखों में दर्ज है, जिसके अनुसार स्वीडन के इमेनुअल स्वीडनबर्ग नामक साधक ने सैकड़ों मील दूर पर ठीक उसी समय हो रहे भयंकर अग्निकांड का सुविस्तृत विवरण अपनी मित्र मंडली को सुनाया था। उस अग्निकांड में घायल तथा मरने वालों के नाम तक उसने सुनाये थे, जो पीछे पता लगाने पर अक्षरशः सच निकले।

खोये हुए मनुष्यों एवं सामानों के संबंध में अतींद्रिय चेतना-संपन्न मनुष्य जब सही अता-पता देने में सही सिद्ध होते हैं, तो यही मानना पड़ता है कि, प्रत्यक्ष साधनों एवं इंद्रिय ज्ञान के सहारे जो कुछ जाना जाता है, बात उतने तक ही सीमित नहीं है, मनुष्य की रहस्यमयी शक्तियों के आधार पर वैसा भी बहुत कुछ जाना जा सकता है, जो सामान्यतया असंभव ही कहा जा सकता है।

विज्ञानी डॉ० मोरे बर्सटीन ने लेडी वंडर के बारे में एक दिन अपने एक मित्र से सुना, इसके पूर्व विमान-यात्रा में उनका बिस्तर व सामान खो गया था, जिसमें जरूरी कागजातों वाला बक्सा भी था। विमान कंपनी ने खोए सामान के न मिलने की घोषणा कर दी तथा मुआवजे का प्रस्ताव रखा था, जिसे बर्सटीन ने अस्वीकार कर खोज जारी रखने को कहा था।

अब मित्र से सुन बर्सटीन को अपने सामान की चिंता तो जाती रही। भीतर की जिज्ञासा—वृत्ति उमड़ उठी। वे चल पड़े लेडी वंडर से मिलने। वहाँ सर्व प्रथम बर्सटीन ने पूछा—बताइये, पेरिस में मैंने जो बिल्ली पाल रखी थी, उसका नाम क्या था ? लेडी वंडर ने उसे विस्मित करते हुए बताया—भर्तिनी। फिर बर्सटीन ने अपने सामान की बाबत पूछा। लेडी वंडर ने बताया—तुम्हारा सामान न्यूयार्क हवाई अड्डे में है।

पहले तो बर्सटीन को अविश्वास हुआ, क्योंकि न्यूयार्क हवाई अड्डा छाना जा चुका था, पर फिर उसने हवाई अड्डे के अधिकारियों को फोन किया—"महोदय, मुझे विश्वस्त सूत्रों से जानकारी मिली है कि मेरा सामान न्यूयार्क हवाई अड्डे के भवन के ही भीतर है। कृपया दुबारा तलाश करें।" तलाशी शुरू हुई और सामान सचमुच मिल गया।

न्यूजर्सी की आत्मवेत्ता महिला फ्लोरेन्स किसी वस्तु को छूकर उससे संबंधित व्यक्ति के बारे में जो कुछ बताती थी, उसका प्रायः ८० प्रतिशत सच होता रहा। गुमशुदा की तलाश, हत्याओं की जाँच तथा अन्य खोज-बीन के मामलों में पुलिस भी उसकी सहायता लेती रही।

पूर्वाभास की यह क्षमता कई व्यक्तियों में असाधारण तौर पर विकसित होती है। द्वितीय महायुद्ध में ऐसे लोगों का दोनों पक्षों ने उपयोग किया था। हिटलर के परामर्श मंडल में पाँच ऐसे ही दिव्यदर्शी भी थे। उनका नेतृत्व करते थे विलियम क्राफ्ट।

प्रत्यक्ष इंद्रिय शक्ति हमारे सामान्य जीवन निर्वाह में अतीव उपयोगी भूमिका संपन्न करती है। वह न हो तो फिर हम जीवित मांस पिंड की तरह इधर-उधर लुढ़कते ही मौत के दिन पूरे करेंगे। मानवी प्रगति में उसकी परिष्कृत ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों का ही प्रमुख योगदान है।

कल्पनाएँ सजीव सक्रिय

मानवी चेतना का मोटा उपयोग वस्तुओं के उपभोग और प्राणियों के साथ व्यवहार कौशल के रूप में ही प्रतीत होता है, पर

जैसे-जैसे रहस्मय पर्दे उठते जा रहे हैं वैसे-वैसे सिद्ध होता जा रहा है कि इस स्थूल के भीतर कोई दिव्य चेतना लोक जगमगा रहा है और उसमें प्रवेश करके बहुमूल्य रत्न-राशि ढूँढ़ लाने की क्षमता भी मनुष्य में विद्यमान है। मन को साधारणतः इच्छा, ज्ञान और क्रिया में संलग्न रखने वाली चेतना के रूप में जाना जाता रहा है, पर अब उसकी अतींद्रिय चेतना पर विश्वास किया जाने लगा है। ऐसे अगणित प्रमाण सामने आ रहे हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि हाड़-मांस का सोचने, बोलने वाला पिंड जो कर सकता है, उससे कहीं अधिक परिधि मानवी चेतना की है। उसमें अतिमानवी असाधारण शक्तियाँ भी सन्निहित हैं।

अमेरिका के टोरंटो टेलीविजन स्टुडियो में एक व्यक्ति की कल्पनाएँ मूर्तिमान् रूप में किस प्रकार दिखाई देती हैं ? इसके प्रामाणिक चित्र लिए गये। ४६ वर्षीय ट्रक ड्राइवर थियोडर सेरिक्षोस का दावा था कि, उसके विचार इतने स्पष्ट होते हैं कि उन्हें शायद चित्र रूप में भी उतारा जा सके। उपरोक्त प्रयोगशाला में उसे प्रस्तुत किया गया। इसके लिए कंपनी में बना सीलबंद पोलारायड कैमरा खरीदा गया और फिल्म बनाने वाली कंपनी से सीधे ही उसमें फिल्म भराई गई। यह कैमरा ऐसा है, जो अपने आप ही एक मिनट में तैयार फोटो हाथ में रख देता है। यह प्रयोग—उपकरण इसलिए ऐसी सावधानी के साथ प्रयुक्त किए गए कि, किसी को यह संदेह न रहे कि—किसी व्यक्ति विशेष की ख्याति के लिए कोई बाजीगरी की गई है। उपकरणों की और फोटोग्राफी की शुद्धता के लिए कई साक्षी भी साथ रखे गये।

थियोडर ने जो-जो कल्पनाएँ कीं, मस्तिष्क के सामने लगे कैमरे ने ठीक उन्हीं चित्रों को उतार दिया। इस विशिष्टता की चर्चा जब अधिक हुई तो कोलरेडो विश्वविद्यालय ने उस व्यक्ति के संबंध में गहराई तक जाँच करने का निश्चय किया और इसके लिए डॉ० आइजनबर्ग के नेतृत्व में एक विशेष विभाग ही बना दिया जो न केवल इस चमत्कार की, वरन् उसके कारणों की भी जाँच करे। जाँच दो वर्ष तक चली और उसका निष्कर्ष इतना ही निकला

कि, उस व्यक्ति में निश्चित ही यह अद्भुत शक्ति है। उसके कारण नहीं जाने जा सके, केवल कुछ संभावनाओं की चर्चा की गई है।

कल्पना, विचार, भावनाएँ और संकल्प कोई हवाई उड़ानें या अवास्तविक बातें ही नहीं है, बल्कि वे भी स्थूल क्रियाओं की तरह प्रभावशाली होती हैं। इनकी सामर्थ्य स्थूल क्रियाओं से अधिक समर्थ होती हैं। प्राचीन काल में ऋषियों-महर्षियों ने इस शक्ति का महत्त्व समझकर उनका उपयोग सरलतापूर्वक करने की विधि खोज ली थी।

विचार संचालन, टेलीपैथी के अंतर्गत बिना यंत्रों, संकेतों या इंद्रियों की सहायता के दूरस्थ व्यक्तियों द्वारा परस्पर विचार-विनिमय की प्रक्रिया इसी शक्ति के अंतर्गत आती है। अतींद्रिय दृष्टि में बिना आँखों की सहायता के दृश्यों को देखा जाना सम्मिलित है। पूर्व ज्ञान से बीती हुई घटनाओं को जानना और भविष्य ज्ञान में भावी संभावनाओं का परिचय प्राप्त करने की बात है। स्वप्नों में व्यक्ति की स्थिति अथवा अविज्ञात घटना क्रमों के भूतकालीन अथवा भावी संकेत समझे जाते हैं। साइकोकाइनेसिस के अंतर्गत मस्तिष्क का वस्तुओं पर पड़ने वाला प्रभाव आँका जाता है। लूथर बरबेन्क ने पौधे, फूल, कीड़े, पक्षी और पशुओं पर अपनी भाव-संवेदनाओं के भिन्न-भिन्न प्रभाव डालने में जो सफलता प्राप्त की है, उससे शोधकर्ताओं का उत्साह बहुत बढ़ा और वे न केवल प्राणियों पर वरन् पदार्थों पर भी विचार शक्ति के आश्चर्यजनक प्रभावों को प्रमाणित कर सकने में सफल हुए।

मैस्मरेजम के आविष्कर्ता डॉ० मैस्मर ने लिखा है—"मन को यदि संसार के पदार्थों और तुच्छ इंद्रिय भोगों से उठाकर ऊर्ध्वगामी बनाया जा सके, तो वह ऐसी विलक्षण शक्ति और सामर्थ्यों से परिपूर्ण हो सकता है, जो साधारण लोगों के लिए चमत्कार सी जान पड़े। मन आकाश (स्पेस) में भ्रमण कर सकता है और उन घटनाओं को ग्रहण करने में समर्थ हो सकता है, जिन्हें हमारी ज्ञानेंद्रियाँ ग्रहण न कर सकें और हमारा तर्क जिन्हें व्यक्त करने में असमर्थ हो।"

अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० जे० बी० राइन ने भी उक्त तथ्य की बाद में विस्तृत खोज की और पाया कि—विचार, चिंतन और किसी भी अभ्यास द्वारा यदि मन को विचारणाओं के सामान्य धरातल से ऊपर उठाकर आकाश में घुमाया जा सके तो वह भूत और भविष्य की अनेक घटनाओं को बेतार के तार के संदेश की तरह प्राप्त कर सकता है। 'न्यू फ्रंटियर्स ऑफ माइंड' नामक पुस्तक में उन्होंने ऐसी अनेक घटनाओं का विवरण भी दिया है, जो उक्त कथन की सत्यता प्रतिपादित करती हैं। यह एक विज्ञान सम्मत प्रक्रिया है, अंधविश्वास नहीं।

इस तथ्य को समझने से पूर्व मन की शक्ति के बारे में जान लेना आवश्यक होगा। जिस प्रकार ध्वनि-तरंगों को पकड़ने के लिए रेडियो में एक विशेष प्रकार का क्रिस्टल फिट किया जाता है, शरीर, अध्यात्म का भी एक क्रिस्टल है और वह मन है। विज्ञान जानने वालों को पता है, ईथर नामक तत्त्व सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है। हम जो भी बोलते हैं, उनका भी एक प्रवाह है, पर वह बहुत हल्का होता है। किंतु जब अपने शब्दों को विद्युत् परमाणुओं में बदल देते हैं, तो वह शब्द-तरंगें भी विद्युत् शक्ति के अनुरूप ही प्रचंड रूप धारण कर लेती है और बड़े वेग से चारों तरफ फैलने लगती हैं। वह शब्द-तरंगें संपूर्ण आकाश में भरी रहती हैं, रेडियो उन लहरों को पकड़ता है और विद्युत् परमाणुओं को रोककर केवल शब्द-तरंगों को लाउडस्पीकर तक जाने देता है, जिससे दूर बैठे व्यक्ति की ध्वनि वहाँ सुनाई देने लगती है। शब्द को तरंग और तरंगों को फिर शब्द में बदलने का काम विद्युत् करती है, उसी प्रकार आध्यात्मिक चिकित्सा और विचार प्रेषण (टेलीपैथी) का कार्य मन करता है।

यों मन शरीर में एक पृथक् सत्ता की भाँति दिखाई देता है, पर वैज्ञानिक जानते हैं कि शरीर के प्रत्येक कोष में एक पृथक् मन होता है। कोषों के मनों का समुदाय ही अवयव स्थित मन का निर्माण करता है। प्रत्येक अवयव का क्रिया क्षेत्र अलग-अलग है, पर वह सब मन अवयव के अधीन हैं। मान लीजिए, गुदा के समीपवर्ती जीवकोष

(सेल्स) अपनी तरह के रासायनिक पदार्थ ढूँढ़ते और ग्रहण करते हैं। उनकी उत्तेजना काम-वासना को भड़काने का काम करती है। किंतु अवयव मन नहीं चाहता कि, इन गुदास्थित जीवकोषों की इच्छा को पूरा किया जाए अन्यथा वह काम-वासना पर नियंत्रण कर लेगा। इसी प्रकार शरीर के हर अंग के मन अपनी-अपनी इच्छाएँ प्रकट करते हैं, पर अवयव मन उन सबको काटता, छाँटता रहता है। जो इच्छा पूर्ण नहीं होने को होती है, उसे दबाता रहता है और दूसरे को सहयोग देकर वैसा काम करने लगता है।

इस बात को और ठीक तरह से समझने के लिए शरीर रचना का थोड़ा ज्ञान होना आवश्यक है। यह भौतिक शरीर सूक्ष्म जीवकोषों से बना है, प्रत्येक जीवकोष प्रोटीन की एक अंडाकार दीवार से घिरा रहता है। उस कोष के अंदर सैकड़ों प्रकार के यौगिक और मिश्रण पाये जाते हैं। नाइट्रोजन और न्यूक्लियक अम्लों का सबसे बड़ा समूह इस सेल के अंदर होता है। फास्फोरस, चर्बियाँ (वसाएँ) और शर्कराएँ भी उसमें मिलती हैं, साथ ही बीसियों अन्य कार्बनिक पदार्थ सूक्ष्म मात्राओं में पाये जाते हैं, जैसे विटामिन और हार्मोन। उनमें बहुत से अकार्बनिक लवण भी होते हैं। यानी प्रोटीन, न्यूक्लियक अम्ल, वसाएँ, शर्कराएँ और लवण ये सांसारिक पदार्थ—जिन्हें रसायनज्ञ एक जीवित कोशिका में पाता है, निश्चय ही ऐसे पदार्थ नहीं हैं, जिससे विचारों का निर्माण भी होता है, फिर भी ऐसे ही पदार्थों के ऊपर उस असंभव विचार का भवन निर्मित होता है, जिसे हम जीवन कहते हैं। अतः उस जीवन की विचित्रता और बढ़ जाती है, यह मान्यता आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं की है।

यह जीवकोषों के मन ही मिलकर अवयव मन का निर्माण करते हैं, इसलिए मन को एक वस्तु न मानकर अध्यात्म-शास्त्र में उसे 'मनोमय कोश' कहा गया है। एक अवस्था ऐसी होती है, जब शरीर के सब मन उसके अधीन काम करते हैं, जब यह अनुशासन स्थापित हो जाता है, तो मन की क्षमता बड़ी प्रचंड हो जाती है और उसे जिस तरफ लगा दिया जाए, उसी ओर वह तूफान की सी तीव्र हलचल पैदा कर देता है।

इन सूक्ष्म जीवों के मन निःसंदेह प्रत्युत्पन्नमति पटल (संस्कार जन्य मन) के अधीन हैं और बुद्धि की आज्ञाओं को भी मानते हैं। इन जीवों के मन में अपने विशेष कार्य के लिए विचित्र योग्यता रहती है। रक्त के आवश्यक सार का शोषण, अनावश्यक का त्याग इनकी बुद्धि का प्रमाण है। यह क्रिया शरीर के हर अंग में होती है, जो जीवकोष संस्थान द्वारा सक्रिय होता है, वह ज्यादा बलवान् रहता है और अपने पास-पड़ौस वाले जीवकोषों की शक्ति को मंद कर देता है। गुदा वाले जीवकोष जो काम-वासना में रुचि रखते हैं, वह सक्रिय होते हैं, तो आमाशय के जीवकोषों की शक्ति का भी अपहरण कर लेते हैं. और इस तरह काम-वासना की प्रत्येक पूर्ति के साथ आमाशय की शक्ति घटती जाती है और वह व्यक्ति पेट का मरीज हो जाता है। जीवकोषों का अनुशासित न होना ही शरीर की कमजोरियों का कारण बनता है। जो भी हो, यह सत्य है कि, पाचन का आसवत्व, घावों का पूरना, आवश्यकतानुसार दूसरे स्थानों पर दौड़ जाना, अन्य बहुत से कार्य कोषगत जीवन के ही मानसिक कार्य हैं। उन्हें विशृंखलित रहने देने से—उनका सम्राट् मस्तिष्क में रहने वाला मन भी कमज़ोर और अस्तव्यस्त हो जाता है; किंतु जब संपूर्ण शरीर के मन उसके अनुशासन में आ जाते हैं, तो शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है।

केवल कोमल स्नायु, पेशियाँ, झिल्लियाँ आदि ही नहीं, हड्डियाँ, दाँत, नाखून आदि कठोर पदार्थ भी सूक्ष्म जीवों के योग से बने होते हैं, अपने कार्यों के अनुसार इनकी आकृतियाँ अलग-अलग होती हैं, पर इनमें भी स्वतंत्र और प्रत्युत्पन्न मन के अधीन काम करने की दोहरी क्षमता होती है। अर्थात् सब जीवकोष स्थानीय कार्य भी करेते रहते हैं और संगठित कार्य भी। जिस प्रकार एक गाँव के सब लोग अपना अलग-अलग काम करते रहते हैं, अपना खेत जोतना, अपना काटना, अपने लिए अलग पकाना, अपने ही परिवार के साथ बसना, अपनी बनाई कुटिया में रहना आदि, केवल अपने तक ही सीमित रहते हैं, पर आवश्यकता आ

जाती है, तो सब लोग इकट्ठे होकर कोई सार्वजनिक कुआँ तालाब आदि भी खोदते हैं। एक आदमी दूसरे की सहायता करता है। ठीक वैसे ही जीवकोषों के मन और प्रत्युत्पन्न मन के भी दो क्षेत्र हैं और दोनों अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। कुछ कोष ऐसे भी होते हैं, जिन्हें शरीर में केवल सुरक्षा की दृष्टि से तैनात किया है, वे गंदगी को दूर करने, कचरा न जमा होने देने की चौकीदारी भी करते हैं और कोई रोग का कीटाणु (वायरस) शरीर में आ जाए, तो उससे युद्ध करने का काम भी वे कोष करते हैं। इस तरह शरीर के मन तो अपनी-अपनी व्यक्तिगत ड्यूटी पूरी करते हैं, दूसरे बाह्य जगत् से संपर्क बनाते हैं, दोनों अलग-अलग काम करते रहते हैं।

शरीर के अंदर इस तरह जीवकोषों का मेला लगा हुआ है। अनुमानतः केवल लाल रंग के कोषों की संख्या कम से कम ७५,००,००,००,००० हैं, इनका काम फेफड़ों से ऑक्सीजन चूसना, धमनियों और वाहिनियों के द्वारा सारे शरीर में बाँटना होता है। यह जीवकोष अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण हैं; क्योंकि यह जगत् से भी शक्ति चूसने के वैज्ञानिक कार्य को पूरा करते हैं। इसलिए मनुष्य शारीरिक शक्ति की कमी के बावजूद भी बहुत दिन तक जिंदा रहता है; क्योंकि यह विश्वव्यापी प्राण सत्ता से शरीर का संबंध बनाये रहते हैं।

प्रत्युत्पन्न मन जब एकाग्र और संकल्पशील होता है, तो सभी कोष स्थित मन जो विभिन्न गुणों और स्थानों की सुरक्षा वाले होते हैं, उसी के अधीन होकर काम करने में लग जाते हैं, फिर उस संग्रहीत शक्ति से किसी भी स्थान के जीवकोषों को किसी दूसरे के शरीर में पहुँचाकर उस व्यक्ति की किसी रोग से रक्षा की जा सकती है। सुनने, समझने वाले मनों में हलचल पैदा करके उन्हें संदेश दिया जा सकता है, किसी को पीड़ित या परेशान भी किया जा सकता है।

जीव-विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान् रिचीकाल्डर ने इस तथ्य का प्रतिपादन इस तरह किया है—इलेक्ट्रॉन हमारा दास है, क्योंकि वे मानवीय प्रतिक्रियाओं में अधिक तेजी से चलते हैं। ये मानवीय नेत्र से भी अधिक देख सकते हैं, मानवीय स्पर्श से अधिक हर्ष अनुभव

कर सकते हैं। मानवीय कान से अधिक सुन सकते हैं, मस्तिष्क की अपेक्षा शीघ्र और ठीक गिनती कर सकते हैं। हमारे सामने दूर आस्वादन (टेलेगस्टेशन), दूर श्रवण (टेलेआडीशन) दूर घ्राण (टेले आल्फेक्शन) सुगंधित पदार्थ तथा बोलते चित्र भी हैं, वह इन्हीं इलेक्ट्रॉनों का काम है। नियंत्रण मोटरों (सर्वोमीटर) के द्वारा इलेक्ट्रॉन किसी रोलिंग मिल के हजारों टन इस्पात को पाव भर वजन की तरह उठा देता है, जबकि वह पदार्थगत मन है। इसके सहारे यदि मानव के जीवकोषों में अवस्थित मन (इलेक्ट्रॉन्स) की शक्ति का अनुमान करें, तो वहाँ तक संभवतः हमारी बुद्धि न पहुँचे, पर अब इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता कि—ऐसी कोई विद्या हो सकती है, जब एक शरीर अपनी विशेष शक्ति या संदेशों किसी और शरीरधारी का दे सके।

हम जानते हैं कि—प्रकाश एक शक्ति है, पर वह अपने मौलिक रूप में पदार्थ भी है, क्योंकि वह टुकड़ों में विभक्त हो जाता है। यह प्रकाश-परमाणु 'फोटो-सेल्स' कहलाते हैं। उनमें भी इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूक्लियस की रचना होती है। अर्थात् प्रकाश से भी सूक्ष्म सत्तायें इस संसार में हैं, यह मानना पड़ता है।

वस्तुएँ हम प्रकाश की सहायता से देख सकते हैं, किंतु साधारण प्रकाश कणों की सहायता से हम शरीर के कोष (सेल) को देखना चाहें, तो वे इतने सूक्ष्म हैं कि हम उन्हें देख नहीं सकते। इलेक्ट्रॉनों को जब ५०,००० बोल्ट आवेश पर सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) में भेजा जाता है, तो उनको तरंग दैर्ध्य श्वेत प्रकाश कणों की तुलना में १/१००००० भाग सूक्ष्म होती है, तब वह हाइड्रोजन के परमाणु का जितना व्यास होता है, उसके भी ४२.४ वें हिस्से छोटे परमाणु में भी प्रवेश करके वहाँ की गतिविधियाँ दिखा सकती है। उदाहरण के लिए—यदि मनुष्य की आँख एक इंच के घेरे को देख सकती है, तो वह उससे भी ५०० अंश कम को प्रकाश-सूक्ष्मदर्शी और १०,००० अंश छोटे भाग को इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी देख सकती है। इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि, मनुष्य शरीर के कोश (सेल्स) का चेतन भाग कितना सूक्ष्म होना

चाहिये ? इस तरह के सूक्ष्मदर्शी से जब कोश का निरीक्षण किया गया, तो उसमें भी एक प्रकार टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई दिया। चेतना या महत्‌तत्त्व इस प्रकार प्रकाश की ही अति सूक्ष्म स्फुरणा है, यह विज्ञान भी मानता है।

मास्को के जीव वैज्ञानिक प्रो० तारासोव ने यह देखकर ही बताया था कि, मनुष्य शरीर का प्रत्येक सेल एक टिमटिमाते हुए दीपक की तरह है। कुल शरीर ब्रह्मांड के नक्षत्रों की तरह—तो यह सूक्ष्मतम चेतना ही उसमें जीवन है।

यह जीवन तत्त्व शरीर के प्रत्येक अंग में छिटका हुआ है, पर उसका एक नियत स्थान भी है, जहाँ से वह प्रभासित होता है। हम देखते हैं कि—आत्मा नामक कोई वस्तु शरीर में है, तो उसे प्रकाश अणुओं के रूप में पाया जाना चाहिए, पर जैसे सूर्य सारे ब्रह्मांड में बिखर गया है, यह चेतना भी सारे शरीर में संव्याप्त है और विचार तथा भावनाओं के रूप में निःसृत होता रहता है। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति के साथ उसके विचारों की तरंग दैर्ध्य चलती रहती है। जो अधिक स्थूल स्वभाव और आचार-विचार के व्यक्ति होते हैं, उनका यह तंरग दैर्ध्य बहुत सीमित और दुर्गंधित होता है, इसलिए बुरे लोग अपने पास वाले को भी प्रभावित नहीं कर पाते, जबकि विचारशील लोग, विशेष प्राणवान् लोग सभा-मंडप में बैठे हजारों लोगों को अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति भाषणों द्वारा इतनी शक्ति और प्रेरणा दे सकते हैं कि—सैकड़ों लोग थोड़ी ही देर में अपने विचार पलटकर रख देते हैं। इस तरह के प्राणवान् व्यक्ति आदि काल से ही लोगों की जीवन दिशाएँ बदलते और युगों में परिवर्तन लाते आए हैं।

हमारा शरीर एक प्रकार से आकाश है। यदि त्वचा के आवरण से बाँधकर उसे एक विशेष गुरुत्वाकर्षण शक्ति द्वारा पृथ्वी से बाँध नहीं दिया गया होता, तो हम आकाश में कहीं विचरण कर रहे होते। सूक्ष्म रूप से हमारी चेतना विचार और संकल्पों के रूप में आकाश तत्त्व में तरंगित होती रहती है। भारतीय योगियों ने उस चेतना को विभिन्न प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि आदि योग

क्रियाओं द्वारा मन के रूप में नियंत्रित किया गया था। आज्ञा चक्र नामक स्थान, जो माथे में दोनों भौहों के बीच पाया जाता है, ध्यान द्वारा देखा गया—तो उस बिखरी हुई ज्योति के एकाकार दर्शन ऐसे ही हुए जैसे हजार दिशाओं में बिखरे होने पर भी सूर्य का एक पुंजीभूत रूप। वह उन बिखरे हुए अस्त-व्यस्त कणों की तुलना में जो कि सारे सौर-मंडल की प्रकृति का निर्धारण करते हैं, कहीं अधिक ऊर्जा (प्रकाश, विद्युत्, ताप) से संपन्न होता है। ऐसे ही मन जब शरीर के सब कोषों की ऊर्जा के रूप में नियंत्रित हो जाता है, तो उसकी शक्ति, सामर्थ्य और विभेदन क्षमता का कोई पारावार नहीं रहता है। इस तरह का मन ही सर्वत्र गमनशील, सर्वदर्शी और सर्वव्यापी होता है। वही क्षणभर कहीं का कहीं पहुँचकर बेतार के तार की तरह संदेश पहुँचाता रहता है।

ऊर्जा का प्रकाश में बदलना एक अत्यंत जटिल प्रणाली है, पर वैज्ञानिक यह जान चुके हैं कि—जब यह ऊर्जा किसी वस्तु में प्रवेश करती है, तो उसके परमाणु उत्तेजित हो उठते हैं। फिर थोड़ा शांत होकर जब वे अपने मूल स्थान को लौटते हैं, तो उस सोखी हुई ऊर्जा को प्रकाश में बदल देते हैं। इस क्रिया को 'संदीप्ति' कहते हैं। यह गुण संसार के सभी प्राणियों में पाया जाता है, हम उसे जानते नहीं; पर यह वैज्ञानिकों को पता है कि—मनुष्य जो कुछ सोचता है, वह कितना ही छुपाए, छुप नहीं सकता। वह इसी प्रकार सूक्ष्म प्रकाश तरंगों के रूप में बाहर निकलता रहता है, यदि हम उन तरंगों से भी सूक्ष्म आत्म-चेतना द्वारा उन तरंगों में प्रवेश पा सकें, जैसा कि ऊपर के प्रयोग में बताया गया है—तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि—अमुक व्यक्ति क्या सोच रहा है ? भविष्य की इसकी योजनाएँ क्या हैं ? आदि-आदि। पर यह सब तभी संभव हैं, जब नितांत शुद्ध रूप में हम मन पर नियंत्रण कर चुके हों।

पहले लोगों का विश्वास था कि—प्रकाश छोड़ने का यह गुण (संदीप्ति) केवल जड़ वस्तुओं का ही गुण है, पर अब यह स्पष्ट हो गया कि यह गुण जीवधारियों में भी पाया जाता है। 'अणु और

आत्मा' पुस्तक में डॉ० जे० सी० ट्रस्ट ने इसी विज्ञान की व्याख्या की और इस आत्म विज्ञान के पहलू को प्रकाश में लाकर उन्होंने वैज्ञानिकों को शोध की नई दिशा भी दी है। हम उस बात को सामान्यतः फुंगी, मधुरिका, जुगनू आदि जीवों से समझ सकते हैं। जुगनू की तरह कई जीव समुद्र में भी पाये जाते हैं, जो अपने शरीर में 'एंजाइमी ऑक्सीकरण' की प्रक्रिया में मुक्त होने वाली ऊर्जा को प्रकाश में बदल देते हैं। यही प्रकाश इनमें टिमटिमाता दिखाई देता है। मादा जुगनू जब कभी कामोत्तेजित होती है तो उसके शरीर में एक जैवरासायनिक क्रिया उत्पन्न होती है, जिसमें रासायनिक द्रव्य लूसी फेरस एंजाइम्, लूसीफिरिन और ए० टी० पी० कंपाउंड भाग लेते हैं। इससे एक विशेष प्रकार की रासायनिक ऊर्जा-तरंग उत्पन्न होती है, अर्थात् उस विद्युत्-तरंग में उस मादा की गंध भी रहती है, इसीलिए उस विशेष सिग्नल को नर जुगनू पहचान लेता है और मादा के पास जा पहुँचता है।

एंजाइम एक प्रकार के सूक्ष्म नाड़ी तंतु हैं, जो साँस द्वारा प्राप्त ऑक्सीजन को सारे शरीर में पहुँचाकर जीवन शक्ति बनाए रखते हैं। मानसिक शक्तियों का शुद्ध परिष्कार भी अधिकांश प्राणायाम के अभ्यास पर ही निर्भर है, उसमें वायु में पाए गए प्राण-तत्त्व (प्राकृतिक ऊर्जा) के द्वारा मन को प्रखर और शुद्ध बनाया जाता है।

डॉ० हर्टलाइन् ने सन् १९६७ में पहली बार नेत्र कोशिकाओं में उत्पन्न विद्युत् आवेगों को इलेक्ट्रॉनिक युक्तियों से रेकार्ड करके बताया कि, प्रत्येक कोष में उस बिंब की सारी बारीकियों अर्थात् रंग, आकार, उभरी-धँसी रेखाएँ आदि निहित होती हैं। प्रत्येक कोष एक सेकंड के भी करोड़वें हिस्से में उस प्रतिबिंब के अगले कोष को पार कर देता है और इस प्रकार सामने दिखाई देने वाले बिंब की सूचना प्रकाश की गति के हिसाब से मस्तिष्क के दृश्य-स्थान (ऑप्टिक सेंटर) में पहुँच जाती है।

इस दृश्य को मन के द्वारा प्रकृति के प्राण-विद्युत् प्रवाह में घोलकर—वह दृश्य जो हमारे मस्तिष्क में है—किसी भी दूरवर्ती व्यक्ति को भेज सकते हैं। उपग्रह-संचार पद्धति के विकास ने इस

मान्यता को भी पुष्ट कर दिया है, अब लंदन में होने वाली शल्य-चिकित्सा को हजारों मील दूर के अस्पतालों में भी देखा जा सकेगा। अभी रायल फ्री हॉस्पिटल के सर्जनों द्वारा संपर्क परीक्षणों को मैनचेस्टर और बर्मिंघम स्थित मेडिकल स्कूल के विद्यार्थियों ने देखा। इसमें भारतीय विद्यार्थियों सहित २००० विद्यार्थी सम्मिलित थे। इस प्रणाली से किसी भी दृश्य को फोटो-सेल्स के मध्यम से आठ संचार उपग्रह (टेलस्टार)—जो पृथ्वी की परिक्रमा लगा रहा है, को भेजा। संचार उपग्रह ने उसे एक नियत फ्रिक्वेंसी पर सारे संसार में फैला दिया। इस तरह एक ही दृश्य को सारे संसार में पहुँचाना तक संभव है। दूरवर्ती दृश्यों को देखने के लिए प्रकाश परमाणुओं पर पड़े बिंबों को ऊर्जा की एक धारा में बहाकर लाना या ले जाना होता है, जिसे नियंत्रित मन से पूरा किया जा सकता है। हम किसी के मन में अचानक संदेश और दृश्य भेज ही नहीं, सुन और देख भी लेते हैं। वह सब इन प्रकाश अणुओं और उसमें व्याप्त चेतना की ही करामात होती है।

सन् १९२७ में डॉ० किलिंटन, लिस्टर एच० जरमर तथा जे० डेवीसन ने बैल टेलीफोन लैबोरेटरी न्यूयार्क में किए अनुसंधान के आधार पर बताया कि, इलेक्ट्रॉन द्वैत प्रकृति तत्त्व है, अर्थात् वह एक कण की तरह भी काम करता है और लहर की तरह भी। उसकी गति ३१,०५० मील प्रति सेकंड होती है। उनकी इस खोज के आधार पर ही इन्हें नोबुल पुरस्कार भी मिला था। इलेक्ट्रॉन जिस तरह एक कण के रूप में स्थिर और गतिशील भी है, उसी प्रकार प्रकाश भी स्थिर और गतिशील है। सर आर्थर-स्टेनले एडिंगटन ने "नेचर ऑफ दि फिजिकल वर्ड" में लिखा है कि—प्रकाश भी छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त है। इन नाचते हुए कणों को "फोटोन्स" कहते हैं और उन्हें "फ्लोरोऐंट स्क्रीन" के प्रकाश में देखा जा सकता है। इनकी गति १,८६,३०० मील प्रति सेकंड अर्थात् इलेक्ट्रॉन से भी ६ गुना अधिक होती है।

इलेक्ट्रॉन और प्रकाश यदि वे शक्ति हैं, तो पदार्थ भी हैं। कण हैं, तो लहर भी। इलेक्ट्रॉन सृष्टि के हर कण में है, पर वह

अपना उत्पादक न होकर नाभिक से बँधा है। उसी प्रकार प्रकाश ब्रह्मांड भर में कहीं भी विचरण कर सकता है, पर स्वयं अपनी उत्पादकता नहीं है। अपने जीवन के अंतिम समय आइन्स्टीन, जो कि ऋषियों के मायावाद सिद्धांत तक पहुँच गये थे, ने यह बताया था कि काल और स्थान सापेक्ष हैं और वे प्रकाश की माप पर निर्भर हैं, (रिलेटिविटी ऑफ टाइम एंड स्पेस इज विद रिफरेन्स टु यार्ड-स्टिक ऑफ लाइट)। वे अब यह सिद्ध करना चाहते थे, कि कोई एकात्म क्षेत्र (यूनीफाईड फील्ड) ऐसा है, जिसमें विद्युत् चुंबकीय बल (इलेक्ट्रोमेगनेटिक फोर्स) भी है और गुरुत्वाकर्षण भी। वह क्षेत्र इन दोनों से युक्त भी है और मुक्त भी। यह इलेक्ट्रॉन की तरह ही द्वैत गुण था और आइन्स्टीन ने उसके अस्तित्व से इनकार नहीं किया, वरन् माना था कि—"मस्तिष्कीय द्रव्य" (माइंड स्टफ) में वह गुण है, वह समय और पदार्थ से परे तत्त्व है, उसकी गति और अगति में कोई अंतर नहीं है, अर्थात् वह (मस्तिष्कीय द्रव्य—माइंड स्टफ) एक ही समय में कलकत्ता या बंबई में भी हो सकता है और उसी समय वह मथुरा में भी उपस्थित रह सकता है। यही वह तत्त्व है, जो प्रकाश को धारण करके उसकी गति से किसी भी वस्तु का स्थानांतरण कर सकता है। पदार्थ को शक्ति में बदलकर उसे कहीं भी सूक्ष्म अणुओं के रूप में बहाकर ले जा सकता है और उसे सेकंड से भी कम समय में बदल सकता है।

योगी और साधक द्वारा मस्तिष्क के इसी एकांत क्षेत्र पर अवस्थित होकर इलेक्ट्रॉन और प्रकाश कणों द्वारा $E=MC^2$ के आधार पर वह शक्ति अपने भीतर से उत्पन्न करते हैं, जो किसी भी परमाणविक शक्ति से बढ़कर होती है, उसमें इलेक्ट्रॉन और प्रकाश कणों की द्वैत शक्ति ही होती है, जिससे वे स्थूल और सूक्ष्म क्रियाएँ संभव है, जो अतींद्रिय घटनाओं के रूप में प्रकट होती हैं।

□ □

श्रवण और दर्शन की दिव्य शक्तियाँ

उस समय की बात है, जब सिकंदर पंजाब की सीमा पर जा पहुँचा। एक दिन, रात को उसने अपने पहरेदारों को बुलाया और पूछा—यह गाने की आवाज कहाँ से आ रही है ? पहरेदारों ने बहुत ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की, पर उन्हें तो झींगुर की भी आवाज न सुनाई दी। भौंचक्के पहरेदार एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, बोले—महाराज ! हमें तो कहीं से भी गाने की आवाज सुनाई नहीं दे रही।

दूसरे दिन सिकंदर को फिर वही ध्वनि सुनाई दी, उसने अपने सेनापति को बुलाकर कहा—देखो जी ! किसी के गाने की आवाज से मेरी नींद टूट जाती है। पता तो लगाना, यह रात को कौन गाना गाता है ? सेनापति ने भी बहुत ध्यान से सुनने का प्रयत्न किया, किंतु उसे भी कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं दी। मन में तो आया कि कह दें, आपको भ्रम हो रहा है पर सिकंदर का भय क्या कम था, धीरे से बोला—महाराज ! बहुत प्रयत्न करने पर भी कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा, लेकिन अभी सैनिकों को आपकी बताई दिशा में भेजता हूँ, अभी पता लगाकर लाते हैं, कौन गा रहा है ?

चुस्त घुड़सवार दौड़ाए गए। जिस दिशा से सिकंदर ने आवाज का आना बताया था—घुड़सवार सैनिक उधर ही बढ़ते गये। बहुत पास जाने पर उन्हें एक ग्रामीण के गाने का स्वर सुनाई पड़ा। पता चला कि वह स्थान सिकंदर के राज प्रासाद से १० मील दूर है। इतनी दूर की आवाज सिकंदर ने कैसे सुन ली ? सैनिक, सेनापति सभी इस बात के लिए स्तब्ध थे। ग्रामीण एक निर्जन स्थान की झोंपड़ी पर से गाता था और आवाज इतना लंबा मार्ग तय करके सिकंदर तक पहुँच जाती थी। प्रश्न है कि, सिकंदर

इतनी दूर की आवाज कैसे सुन लेता था? दूसरे लोग क्यों नहीं सुन पाते थे ? सेनापति ने स्वीकार किया कि, सचमुच ही अपनी ज्ञानेंद्रियों को संतुष्ट कर दे केवल वही सत्य नहीं कही जा सकती है। अतींद्रिय सत्य भी संसार में है, उन्हें पहचाने बिना मनुष्य जीवन की कोई उपयोगिता नहीं।

दूर की आवाज सुनना विज्ञान के वर्तमान युग में कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं है। 'रेडियो डिटेक्शन एंड रेंजिंग' अर्थात् 'रैडार' नाम जिन लोगों ने सुना है, वे यह भी जानते होंगे कि, यह एक ऐसा यंत्र है, जो सैकड़ों मील से दूर से आ रही आवाज, आवाज ही नहीं—वस्तु की तस्वीर का भी पता दे देता है। हवाई जहाज उड़ते हैं, तब उनके आवश्यक निर्देश, संवाद और मौसम आदि की जानकारियाँ 'रैडार' द्वारा ही भेजी जाती हैं और उनके संदेश रैडार आदि द्वारा ही प्राप्त होते हैं। बादल छाए हैं, कोहरा घना हो रहा है, हवाई पट्टी में धुआँ छाया है। रैडार की आँख उसे भी बेधकर देख सकती हैं और जहाज को रास्ता बताकर उसे कुशलतापूर्वक हवाई अड्डे पर उतारा जा सकता है। छोटे रैडार १५० मील तक की आवाज सुन सकते हैं। जापान ने ५०० मील तक की आवाज सुन सकने वाले रैडार बनाए हैं। अमेरिका के पास तो ऐसे भी रैडार हैं, जो 'ह्यूस्टन' के चंद्र वैज्ञानिकों को चंद्रमा में उतरे यात्रियों से बातचीत करा देते हैं। रैडार यंत्र की इस क्षमता पर और उसकी खोज व निर्माण करने वाले वैज्ञानिकों के बुद्धि-कौशल पर जितना ही आश्चर्य किया जाए कम है।

किसी विज्ञान जानने वाले विद्यार्थी से यह बात कही जाए, तो वह हँसकर कहेगा—भाई साहब, इसमें आश्चर्य की क्या बात ? साधारण-सी रेडियो तरंगों का सिद्धांत है। जब ध्वनि लहरियाँ किसी माध्यम से टकराती हैं, तो वे फिर वापस लौट आती हैं, उस स्थान वस्तु आदि का पता दे देती हैं। हवाई जहाज की ध्वनि को रेडियो तरंगों द्वारा पकड़कर यह पता लगा लिया जाता है कि, वे किस दिशा में—कितनी दूर पर हैं ? यह कार्य प्रकाश की गति अर्थात्

१,८६,००० मील प्रति सेकंड की गति से होता है। रेडियो तरंगों की भी वही गति होती है। तात्पर्य यह है कि, यदि उपयुक्त संवेदनशीलता वाला रैडार जैसा कोई यंत्र हो, तो बड़ी से भी बड़ी दूरी की आवाज को सेकंडों में सुना जा सकता है, देखा जा सकता है। प्रकाश से भी तीव्रगामी तत्त्वों की खोज ने तो अब इस संभावना को और भी बढ़ा दिया है, जिससे अब सारे ब्रह्मांड की आवाज को भी कान लगाकर सुने जाने की बात को भी कोई बड़ा आश्चर्य नहीं माना जाएगा।

मुश्किल इतनी ही है कि, कोई भी यंत्र इतने संवेदनशील नहीं बन पाए कि—दसों, दिशाओं से आने वाली करोड़ों आवाजों में से किसी भी पतली से पतली आवाज को जान सकें और भयंकर से भी भयंकर निनाद में भी टूटने-फटने के भय से बचे रहें। रैडार कितना उपयोगी है, पर इतना भारी भरकम कि, उसे एक स्थान पर स्थापित करने में वर्षों लग जाते हैं। सैकड़ों फुट ऊँचे एंटीना, ट्रान्समीटर, रिसीवर, बहुत अधिक कंपन वाली (सुपर फ्रिक्वेन्सी) रेडियो ऊर्जा इंडिकेटेर, आस्सीलेटर, माडुलेटर, सिंक्रोनाइजर आदि अनेकों यंत्र प्रणालियों पर एक रैडार काम करने योग्य हो पाता है। उस पर भी अनेक कर्मचारी काम करते हैं, लाखों रुपयों का खर्च आता है, तब कहीं वह काम करने के योग्य हो पाता है। कहीं बिजली का बहुत तेज धमाका हो जाए, तो यह 'रैडार' बेकार भी हो जाते हैं और जहाज यदि ऐसे हों, जो अपनी ध्वनि को बाहर फैलने ही न दें, तो 'रैडार' उनको पहचान भी नहीं सकें। यह सब देखकर इतने भारी मानवीय प्रयत्न और मानवीय बुद्धि-कौशल तुच्छ और नगण्य ही दिखाई देते हैं।

दूसरी तरफ एक दूसरा रैडार—मनुष्य का छोटा-सा कान, एक सर्वशक्तिमान् कलाकार—विधाता की याद दिलाता है, जिसकी बराबरी का रैडार संभवतः मनुष्य कभी भी बना न पाए। कान हल्की आवाज को भी सुन और भयंकर घोष को भी बर्दाश्त कर सकते हैं। प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि, कानों की मदद से मनुष्य

लगभग ५ लाख आवाजें सुनकर पहचान सकता है, जबकि रैडार का उपयोग अभी तक सीमित ही है।

कान के भीतरी भाग में, जो संदेशों को मस्तिष्क में पहुँचाने का काम करता है, ३०,५०० रोयें पाये जाते हैं। यह रोयें जिस श्रवण झिल्ली से जुड़े होते हैं, वह तो १/२५०००,०००,०००,०००,००० इंच से भी छोटा, अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक माइक्रोस्कोप से भी मुश्किल से दिखाई दे सकने वाला होता है। वैज्ञानिकों का भी अनुमान है कि, इतने सूक्ष्म संवेदनशील यंत्र को बनाने में मनुष्य जाति एक बार पूरी तरह सभ्य होकर—नष्ट हो जाने के बाद, नये सिरे से जन्म लेकर विज्ञान की दिशा में प्रगति करे, तो ही हो सकती है, अर्थात् मानवीय क्षमता से परे की बात है। इस झिल्ली का यदि पूर्ण उपयोग संभव हो सके, तो संसार की सूक्ष्म से सूक्ष्म हलचलों को, लाखों मील दूर की आवाज को भी ऐसे सुना ज़ा सकता है, मानो वह यहीं-कहीं अपने पास ही हो या बैठे मित्र से ही बातचीत हो रही हो। महर्षि पतंजलि ने लिखा है—

श्रोत्राकाशयोः संबंध संयमाद्दिव्यं श्रोत्रम्।

(पा० यो० सूत्र ४०)

अर्थात्—श्रवेणेंद्रिय (कानों) तथा आकाश के संबंध पर संयम करने से दिव्य ध्वनियों को सुनने की शक्ति प्राप्त होती है।

यह बात अब विभिन्न प्रयोगों से भी सिद्ध हो गई है। सामान्यतः हम ६ फुट की दूरी की आवाज का भी अधिकतम १/३००००००वाँ हिस्सा ही सुन पाते हैं। शेष कितनी ही मंद ध्वनि क्यों न हो—वायुभूत हो जाती है। संसार के प्रत्येक पदार्थ में ऊर्जा विद्यमान है और चूँकि कोई भी स्थान ऊर्जा से रिक्त नहीं, अतएव प्रत्येक ध्वनि कुछ ही समय में सारे ब्रह्मांड में उसी प्रकार फैल जाती है, जिस प्रकार जहाँ तक जल होता है—वहाँ तक लहरें चली जाती हैं।

न्यूजर्सी अमेरिका की बेल टेलीफोन प्रयोगशाला के इंजीनियरों और वैज्ञानिकों ने एक ऐसे 'भवन' का निर्माण किया, जो पूरी तरह साउंड प्रूफ था, अर्थात् उसके अंदर बैठने वाले को बाहर

की कैसी भी—कोई भी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ सकती थी। वैज्ञानिकों को अनुमान था कि, उस समय निस्तब्ध, नीरवता का आभास होगा, पर जब एक व्यक्ति को प्रयोग के तौर पर अंदर बैठाया गया, तो उसे यह सुनकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि विचित्र प्रकार की ध्वनियाँ उसके कानों में गूँजने लगीं। एक ध्वनि किसी के सीटी बजाने की थी, एक ध्वनि प्रेस मशीन चलने की तरह धड़-धड़ की थी, एक ध्वनि चट-चट चटखने की सी। पहले तो वह व्यक्ति डरा, पर पीछे ध्यान देने पर मालूम हुआ कि सीटी की आवाज नसों में दौड़ने वाले रक्त-प्रवाह की ध्वनि थी। आमाशय में पाचन रसों की चट-चट और हड्डियों की कड़कड़ाहट की ध्वनियाँ भी अलग-अलग सुनाई पड़ने लगीं, मानो शरीर न हो वरन् पूरा कारखाना ही हो।

सामान्यतः यह ध्वनि हर व्यक्ति के शरीर से होती है, पर अपने कानों की बाह्यमुखी संवेदनशीलता और एकाग्रता की कमी के कारण कोई भी उन्हें सुन नहीं पाता। पर यदि अभ्यास किया जाए और सूक्ष्म कानों की शक्ति जगाई जा सके, तो अनंत ब्रह्मांड में होने वाली हलचल, पृथ्वी के चलने की आवाज, सौरघोष, उल्काओं की टक्कर के भीषण निनाद, मंदाकिनियों के बहने का स्वर, जीव-जंतुओं के कलरव आदि सब कुछ किसी भी स्थान में बैठकर उसी प्रकार सुने जा सकते हैं, जिस प्रकार बेल टेलीफोन लेबोरेटरी के प्रयोग के समय।

योगी पतंजलि ने लिखा है—**'ततः प्रतिभ श्रावण-वेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते'** अर्थात् श्रवण संयम के अभ्यास से प्रतिभ अर्थात् भूत और भविष्य ज्ञान, दिव्य और दूरस्थ शब्द सुनने की सिद्धि प्राप्त होती है। योग विभूति में लिखा है—

'शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यासात् संकरस्तत्प्रविभाग-संयमात् सर्वभूतरुतज्ञानम्' ।। पा० यो० सू० १७।।

अर्थात् 'शब्द—अर्थ और ज्ञान के अभ्यास से अभेद भासता है और उसके विभाग में संयम करने से सभी प्राणियों के शब्दों में

निहित भावनाओं का भी ज्ञान होता है।'—यह सूत्र-सिद्धांत सूक्ष्म कर्णेंद्रिय की महान् महत्ता का प्रतिपादन करते हैं और बताते हैं कि, जब तक मनुष्य के पास ऐसी क्षमता संपन्न शरीर है, उसे भौतिक शक्तियों की ओर आकर्षित होने की आवश्यकता नहीं। सिकंदर १० मील तक ही सुन सकता था। योगी तो अपने कान लगाकर सारे ब्रह्मांड को सुन सकता है। यह बात अब विज्ञान भी स्वीकार करता है। कान की बनावट की नकल करके वैज्ञानिक ऐसे रैडार बनाने के प्रयत्न में है, जो शुक्र, मंगल और उससे आगे की गतिविधियों का पता लगा सकें। यह संभव हो जाएगा, पर कान के मुकाबला बेचारे यंत्र क्या कर सकेंगे ? कानों से तो सारे ब्रह्मांड को सुना जा सकता है।

अमेरिका और इंग्लैंड के मनोविज्ञानशास्त्रियों ने सन् १९५५ में न्यूयार्क और लंदन में 'मनोवैज्ञानिक घटनाओं की खोज' करने वाली दो संस्थाएँ स्थापित की हैं। इनमें अभी तक १०,००० ऐसी रहस्मय घटनाओं का विवरण इकट्ठा किया जा चुका है। यह विवरण अमेरिका तथा अन्य कितने ही देशों के स्त्री-पुरुषों ने स्वयं लिखकर भेजा है और इसकी सच्चाई के प्रति अपना पूरा विश्वास प्रकट किया है।

इन घटनाओं में अधिकांश दूरवर्ती समाचारों का ज्ञान, दिव्य-दर्शन, पूर्वज्ञान से संबंधित हैं। वे जाग्रत्, अर्द्ध-जाग्रत् और निद्रित दशा में अनुभव की गई है। पर प्रायः सभी घटनायें आकस्मिक रूप से अनुभव में आकर चंद मिनट में समाप्त हो गईं। इसलिए वैज्ञानिक प्रयोगशाला के नियमानुसार उनकी जाँच करना संभव है नहीं। उन्हीं के द्वारा मनुष्यों को दूरवर्ती स्थानों के समाचार या भविष्य में होने वाली घटनाओं का आभास मिला है।

इस प्रकार की भविष्य दर्शन (प्रीकॉगनिशन) की घटना प्रायः तब होती है, जब कोई बड़ी दुर्घटना या मृत्यु-संकट शीघ्र ही आने वाला होता है। अधिकांश लोगों के लिए ऐसा अवसर जीवन में एकाध बार ही आता है और वह भी ऐसे आकस्मिक और निराले

ढंग से कि, वह व्यक्ति उसके कारण के संबंध में कुछ अनुमान ही नहीं कर सकता। किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु की सूचना इस रीति से अनेक व्यक्तियों को हफ्तों या महीनों पहले भी मिल जाती है। यद्यपि ये घटनाए प्रायः ऐसे सामान्य व्यक्तियों द्वारा देखी जाती हैं, जिनको कोई महत्त्व नहीं दिया जाता; तो भी यह समस्या बनी ही रहती है कि, उनको किसी घटना का पूर्वज्ञान किस प्रकार हो जाता है ?

इस संबंध में इस क्षेत्र में खोज-बीन करने वाली एक अमेरिकन महिला डॉ० लुइसा ई० राइन ने अपनी पुस्तक 'ट्रेसिंग हिडन चेनल्स' (गुप्त स्रोतों की खोज) में लिखा है कि—"पूर्व दर्शन की घटनाएँ यद्यपि संख्या में बहुत अधिक होती हैं, पर आश्चर्य यह है कि—वे कैसे घट जाती हैं ?" फिर लेखिका स्वयं ही उत्तर देती है कि, ये "घटनाएँ किसी व्यक्ति के दैनिक जीवन के किसी बहुत छोटे अंश से संबंधित होती हैं, चाहे वह देर से सिर के ऊपर मँड़राती हुई हों और चाहे रास्ता चलते-चलते किसी सवारी गाड़ी से टकरा जाने जैसी सर्वथा आकस्मिक। इस प्रकार की घटनाएँ सर्वांगपूर्ण नहीं होतीं और न उनका जीवन से पूरी तरह संबंध होता है। कुछ ही लोग अपनी देखी घटनाओं पर ऐसा विश्वास रखते हैं कि, उनका संबंध उसके समग्र जीवन से है।"

श्रीमती राइन ने आगे चलकर कहा है—"इस प्रकार की 'पूर्व-दर्शन' (प्रीकॉगनिशन) में एक मिलती-जुलती विशेषता यह होती है कि, वे प्रायः सब की सब व्यक्ति संबंधी ही होती हैं। राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय पैमाने की घटनाओं का पूर्व-दर्शन शायद ही कभी किसी को होता है। अधिकांश में लोगों को अपने निकट संबंधियों के संबंध में ही होनहार घटनाओं का अनुभव होता है।"

पर फिर भी अनेक घटनाएँ ऐसी होती हैं और अनेक बार इस विद्या के अभ्यासी ऐसा अकाट्य प्रमाण देते हैं कि—वैज्ञानिकों को भी चुप रह जाना पड़ता है। अमेरिका की 'मनोविज्ञान की खोज करने वाली संस्था' ने जो चौदह हजार उदाहरण इकट्ठे किए हैं,

उनमें से कई ऐसे हैं, जिनमें घोर अविश्वासियों को भी 'पूर्व-दर्शन' की सत्यता को स्वीकार करनी पड़ी। उनमें से 'चाय के प्याले में तूफान' शीर्षक घटना में कहा गया है—

"सेन डियागो (केलीफोर्निया-अमेरिका) का पुलिस सुपरिंटेंडेंट वाल्टर जे० मेसी जब एक दिन अपने दफ्तर से लौटकर घर जा रहा था, तो रास्ते में अपनी पत्नी की सहेली श्रीमती हाफमैन के यहाँ ठहर गया। उस समय वाल्टर की पत्नी भी वहाँ आई हुई थी और उसी को लेने के लिए वह गाड़ी से उतर पड़ा था। श्रीमती हाफमैन ने उससे चाय पीने के लिये कहा। बातों ही बातों में श्रीमती हाफमैन कह बैठी—"वाल्टर ! अगर तुम पसंद करो, तो मैं तुम्हारे चाय के प्याले को देखकर किसी होनहार घटना की सूचना दे सकती हूँ।"

वाल्टर सोलह वर्ष से पुलिस के महकमे में काम कर रहा था और उसे रात-दिन बड़े-बड़े चालाक ठग और जालसाज लोगों के अँगूठे और अंगुलियों के निशान देखकर उनका पता लगाता था। इसलिए वह ऐसी 'दैवज्ञता' की बातों पर जरा भी विश्वास नहीं करता था, तो भी मनोरंजन की दृष्टि से उसने अपना प्याला मिसेज हाफमैन को दे दिया। उसे देखते-देखते उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसने बड़े भयभीत स्वर में कहा—"मैं इस प्याले में मृत्यु को देख रही हूँ। दो मौतें होंगी, उनमें से एक नागरिक है, जो कि गोली से इस तरह मारा गया है कि, उसका बदन छलनी हो गया है। दूसरा आदमी व्यापारी है, उसने वर्दी और काले जूते भी पहिन रखे हैं।"

यद्यपि वाल्टर घोर अविश्वासी था, पर श्रीमती हाफमैन की मुखाकृति को देखकर वह प्रभावित हो गया और दूसरे दिन उसमें इसका जिक्र अपने अफसर 'जी डोरन' से किया। वह उससे भी बढ़कर अविश्वासी था और उसने वाल्टर की खूब हँसी उड़ाई। पर जैसा श्रीमती हाफमैन ने कहा था, आगामी रविवार को जब एक लुटेरे ने 'केलीफोर्निया थियेटर' में घुसकर उसके मैनेजर की हत्या

कर डाली और पीछा करने वाले एक पुलिस सारजैंट को घायल कर दिया, तो वे सब चकित रह गये। पुलिस वाले बराबर लुटेरों का पीछा करते रहे और उनमें से एक को एक तहखाने में छुपा देखकर गोलियों से छेद डाला। उसका बदन छर्रों के मारे वास्तव में छलनी हो गया था।

ऐसा ही एक प्रयोग सर जोजेफ बार्नवी ने कराया। एक विशेष प्रकार के शीशे में जब उन्होंने दृष्टि जमाई और अपनी पत्नी का हाल जानना चाहा, तो उन्होंने एक महिला का चित्र देखा, जो बहुत बढ़िया किस्म के वस्त्र और आभूषण पहने हुई थी। महिला की शक्ल-सूरत तो उनकी धर्मपत्नी से मिलती-जुलती थी, पर उन्होंने बताया—मेरी पत्नी ऐसे आभूषण पहनती ही नहीं, इसलिए उन्हें इस विज्ञान पर विश्वास नहीं हुआ, किंतु, जब वह घर लौटे तो यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि उनकी धर्मपत्नी ठीक वही आभूषण पहने थीं, जो उन्होंने दर्पण में देखा था। तब से बार्नवी भारतीय तत्त्व-दर्शन से इतना प्रभावित हुए कि, उन्होंने तमाम भारतीय दर्शन का कक्षा एक के विद्यार्थी की भाँति अध्ययन किया। उनके मस्तिष्क में बहुत दिन तक यह विचार उठता रहा कि, जो आत्म-शक्ति न देखे हुए को भी देख सकती है, न जाने हुए को भी जान सकती है, वह अपने आप में सब प्रकार की भौतिक शक्तियों से निःसंदेह परिपूर्ण होनी चाहिए। अपनी इस परिपूर्ण चेतन अवस्था को जानना इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि वही जीव की अंतिम स्थिति है और उसे प्राप्त कर लेने पर संसार में और कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

आज वैज्ञानिकों ने ऐसे-ऐसे कंप्यूटर तैयार किये हैं, जिनकी इलेक्ट्रॉनिक शक्ति उन सब बातों को बता सकती है, जो प्रकृति (नेचर) के गणितीय (मैथेमेटिकल) सिद्धांत से संबंधित है। कंप्यूटर शरीर के रोगों का पता बता देते हैं, लाखों प्रकाश वर्ष दूर के सितारों की दूरी, दिशा और कोण तक बता देते हैं, किंतु यह मनुष्य कब मर जायेगा ? एक वर्ष, एक माह, एक दिन बाद इस मनुष्य

की क्या स्थिति होगी ? ऐसा सचेतन ज्ञान न पदार्थ के पास और न किसी मशीन में ही है। वह तो किसी आत्म-चेतना की ही शक्ति हो सकती है, जो ज्ञात-अज्ञात रूप से लोगों को प्रेरित और प्रभावित करती रहती है। ऐसे उदाहरण संसार के हर देश में देखने को मिलते हैं।

पूर्वाभास की अनेक घटनाओं में एक निम्नलिखित घटना भी है, जिसमें पूर्ण स्वस्थ रहते हुए भी मृत्यु का पूर्वाभास मिला और अक्षरश: सही निकला।

उत्तर प्रदेश—मुरादाबाद जिले की बिलारी तहसील में ग्राम सबाई के निवासी एक लोकप्रिय समाज सेवी गजराज सिंह को अपनी मृत्यु का आभास चार दिन पूर्व मिल गया था। यों वे कुछ रुग्ण तो थे, पर चलने-फिरने तथा साधारण काम-काज करते रहने में समर्थ थे। उन्होंने घर वालों को चार दिन पूर्व अपनी मृत्यु का समय बता दिया था और मरघट में जाकर अपने हाथ से जमीन साफ करके दाह´कर्म के लिए स्थान निर्धारित किया था। लकड़ी, कफन यहाँ तक कि जमीन लीपने के लिए गोबर तक समय से पूर्व ही मँगाकर रख लिया था। यों वे अन्न खाते थे, पर चार दिन पूर्व से उन्होंने दूध और गंगा जल पर रहना प्रारंभ कर दिया। आस-पास के गाँवों के लोगों को बुलाकर उन्होंने आवश्यक परामर्श दिये। मृत्यु का ठीक समय मध्याह्नोत्तर दो बजे थे, सो उन्होंने हर किसी को भोजन करके निवृत्त होने के लिए आग्रहपूर्वक प्रेरित किया। आश्चर्य यह कि, मृत्यु उनके घोषित समय पर ही हुई और मरने से पंद्रह मिनट पूर्व तक पूर्ण स्वस्थ जैसी स्थिति में बातें करते रहे।

श्री मेयर्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दि ह्यूमन परसनैलिटी एंड इट्स सरवाइवल आफ्टर बाडीली डेथ" में १३ उदाहरण दिए हैं, जिनमें ऐसी अद्भुत ज्ञान शक्तियों का विवरण देकर यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि, ज्ञान की चमत्कारिक क्षमताएँ पदार्थ की नहीं हो सकती। निश्चय ही कोई चेतन-शक्ति का खेल है। इन

उदाहरणों में प्रसिद्ध गणितज्ञ वास और ऐंपेयर के उदाहरण भी दिए गए हैं।

दो घटनाएँ अमेरिकन इतिहास से संग्रह की गई हैं। वहाँ २८ फरवरी, १८४४ को एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होने को था। 'यू० एस० एस० प्रिंसटन' नाम का एक नया और सबसे बढ़िया युद्धपोत बनकर तैयार हुआ था और उसके उद्‌घाटन के अवसर पर उसके कप्तान राबर्ट स्टाक्टन के अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों को समारोह में निमंत्रित किया इनमें कर्नल डेविड गार्डिनर, उनकी पुत्री जूलिया, जलसेना के सेक्रेटरी थामस गेलमर व उनकी पत्नी एनी भी सम्मिलित थे।

इन दोनों महिलाओं ने २७ दिनांक की रात्रि को ऐसे स्वप्न देखे, जिनमें जूलिया के पिता और एनी के पति की मृत्यु का स्पष्ट संकेत था। इससे भयभीत होकर जूलिया ने अपने पिता से इस समारोह में सम्मिलित न होने का अनुरोध किया। इसी प्रकार एनी ने अपने पति को बहुत रोका। पर उन दोनों ने स्वप्न की बातों को अधिक महत्त्व देना ठीक नहीं समझा और वे जहाज पर चले गए। वहाँ जब एक तोप को समुद्र की ओर चलाया गया, तो वह अकस्मात् फट गयी और कर्नल गार्डिनर तथा थामस गेलमर, जो पास खड़े थे—तुरंत मर गये।

एनी भी वहीं थी, पर वह बच गई। शोक से अभिभूत होकर उसने कहा—"मेरी बात किसी ने क्यों नहीं मानी ?" दुर्घटना के समय जूलिया डेक के नीचे थी और जब उसने अपने पिता की मृत्यु के बारे में सुना, तो वह चिल्ला उठी—"मेरा सपना आखिर सच हो ही गया।"

बाद में यही जूलिया अमेरिका के प्रेसीडेंट टेलर की पत्नी बन गई। उसे कुछ ऐसी शक्ति प्राप्त थी कि, पति से सौ मील दूर रहने पर भी वह उसके संबंध में सब बातें जानती रहती। उनके मन इस प्रकार जुड़े थे कि, एक की अनुभूति दूसरे को सहज में हो जाती थी। जनवरी १८६२ में जब प्रेसीडेंट टेलर रिचमांड में एक

सरकारी जलसे में गए थे, एक रात को जूलिया ने स्वप्न देखा कि 'उनका चेहरा मुर्दे की तरह पीला पड़ गया है, उनके हाथ में कमीज और टाई है तथा वे कह रहे हैं कि—"मेरा सर थाम लो।" सुबह होते ही जूलिया स्वयं रिचमांड को रवाना हो गयी और वहाँ प्रेसीडेंट को सकुशल देखकर उसे प्रसन्नता हुई, पर दूसरे दिन सुबह नाश्ता करते हुए उनकी हालत एकदम खराब हो गई और वे मौत के समय की-सी आकृति में जूलिया के कमरे में घुसे। उनका कोट और टाई उनके हाथ में थी, जैसा स्वप्न में दिखाई पड़ा था। उन्होंने जूलिया से कुछ कहा भी, पर वह स्पष्ट सुनाई नहीं दिया। कुछ घंटों में उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई।

विज्ञानवादी आलोचक ऐसी घटनाओं का कोई कारण नहीं बता सकते। वे तो बराबर यही कहते रहते हैं कि, जो घटना अभी हुई ही नहीं, उसका प्रभाव किसी पर कैसे पड़ सकता है ? पर एक अध्यात्मवादी जानता है कि, मानव-जीवन का निर्णय करने वाली मुख्य घटनायें सूक्ष्म जगत् में पहले से घटती रहती हैं, बाद में वे स्थूल जगत् में प्रकट होती हैं। इसलिए जिन लोगों को पूर्व दर्शन की शक्ति किसी दैवी कारण से कुछ क्षणों के लिए प्राप्त हो जाती है, वे ऐसी घटनाओं को अर्द्ध जाग्रत् अथवा स्वप्न की अवस्था में देख लेते हैं। इसके अतिरिक्त योगी और अभ्यास करने वाले भी अंतरंग शक्ति से अंतरिक्ष में मौजूद भविष्य के चिह्नों को देखकर समझ जाते हैं। यही भविष्य दर्शन अथवा पूर्व दर्शन का वास्तविक रहस्य है।

पूर्वाभास के 'सत्य अनुभव' (ट्रू एक्सपीरिएन्सेज इन प्रोफेसी) नामक पुस्तक के विद्वान् लेखक श्री मार्टिन इवान ने सैकड़ों घटनाओं का वर्णन किया है, जिसमें सामान्य लोगों को भी स्वप्न या साधारण अवस्था में विलक्षण पूर्वाभास हुए। लैंडेड टू, (दो व्यक्तियों की जान बचाई) शीर्षक से हेरोल्ड ग्लूक एक घटना इस प्रकार देते हैं—

'नवंबर १९५०. के एक शनिवार को हमारे घर कोई उत्सव होने वाला था। एक दिन पूर्व शुक्रवार को ही मेरी धर्मपत्नी ने मुझसे कहा—"आज आप बाहर नहीं जाइयेगा। घर की आवश्यक व्यवस्था में आज आपको हाथ बँटाना पड़ेगा।' किंतु उस दिन मुझे ऐसी प्रबल प्रेरणा उठ रही थी कि—आज तो समुद्र की सैर के लिए जाना ही चाहिए। मैंने अपनी धर्मपत्नी की बात को कभी ठुकराया नहीं, पर मैं स्वयं ही नहीं जानता कि, उस दिन मुझे किस अज्ञात शक्ति द्वारा प्रेरित किया जा रहा था कि, मैंने जान-बूझकर अपने मित्र जैक को कार लेकर अपने साथ चलने को राजी कर लिया। उस दिन समुद्र में तूफान आने की घोषणा मौसम विभाग के द्वारा की जा चुकी थी, इसलिए मेरी धर्म पत्नी ने समुद्र की ओर जाने से इनकार कर दिया; किंतु मेरे मन में न जाने क्यों कोई बात चिपक नहीं रही थी। मेरा कोई मन भी नहीं था, पर भीतर से ऐसा लगता था, तुम्हें समुद्र की ओर जाना ही चाहिए।

निश्चित समय पर गाड़ी आ गई, मैं और जैक समुद्र की ओर चल पड़े। हमारे वहाँ पहुँचने से पूर्व ही समुद्र भयंकर आवाज के साथ गरजने लग गया था। तटवर्ती मल्लाह पीछे हट चुके थे, तो भी मेरे मुख से निकल ही गया—"ओ भाई मल्लाह, हमें समुद्र की सैर करनी है, एक बोट तो देना।"

मल्लाह बुरी तरह झल्लाया—"आपको दिखाई नहीं देता, समुद्र किस तरह उबल रहा है! बोट तो डुबोयेंगे ही, आप जान से हाथ धो बैठेंगे।" यही बात जैक ने भी कही, किंतु मुझे तो कोई अज्ञात शक्ति खींच रही थी, मैंने कहा—"यह लो बोट की कीमत और एक बोट मेरे लिए छोड़ दो।"

मेरे हठ के सामने सब परास्त हो गये। बोट, मैं और जैक देखते-देखते समुद्र की लहरों में जा फँसे। मुझे २०० गज की दूरी पर फुटबाल की तरह कोई वस्तु दिखाई दी। मैंने जैक को इशारा किया तो जैक झल्लाया—"आज आपको क्या हो गया है ? एक

साधारण-सी फुटबाल के लिए अपने को मौत के मुख में डाल रहे हैं।"

मुझे वह बातें कुछ प्रभावित न कर सकीं। बोट उधर ही बढ़ा दी। पास पहुँचकर देखता हूँ कि, दो नाविक जो समुद्र के तूफान में फँस गये थे, डूब रहे हैं। हमने किसी तरह उन्हें अपनी नाव में चढ़ाया और डोलते-डगमगाते किनारे आ पहुँचे।

मेरी इस सहृदयता और साहस को जिसने भी सुना, सराहा। मेरी धर्मपत्नी ने उस दिन मुझे हृदय से लगा लिया। तब से बराबर सोचता रहता हूँ, वह कौन-सी शक्ति थी, जो मुझे इस तरह प्रेरित करके वहाँ तक ले गई ? क्या ऐसा भी कोई तत्त्व है, जो अपनी इच्छा से विश्व का सृजन और नियमन करता है ? यदि हाँ, तो क्या मनुष्य इसकी स्पष्ट अनुभूति कर सकता है ?

क्या दृष्टि संपन्न हुआ जा सकता है ?

इन घटनाओं को जानकर प्रश्न उठता है कि, क्या मनुष्य की आँखें वही देख सकती हैं, जो सामने परिलक्षित होता है ? साधारण स्थिति में ऐसा ही होता है। नाक के ऊपर लगे हुए दो नेत्र गोलक केवल सामने की दिशा में और कुछ दायें-बायें एक नियत रूप तक के दृश्य देख सकते हैं। सो भी उन्हें—जो उनकी ज्योति तथा पदार्थों की ध्वनि-तरंगों के संयोग का एक नियत माध्यम बनाते हैं। नेत्र-ज्योति क्षीण हो अथवा पदार्थ जीवाणु-परमाणु जैसी सूक्ष्म आकृति का हो, तो फिर सूक्ष्म दर्शक अथवा दूरदर्शक यंत्रों से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकना नेत्र गोलकों के लिए संभव होता है। यह दृश्य वर्तमान काल के ही हो सकते हैं। आगे-पीछे के नहीं। फोटोग्राफी, चित्रकला एवं फिल्म-टेलीविजन जैसे माध्यमों से भूतकाल के दृश्य भी देखे जा सकते हैं। अब तक इतनी ही उपलब्धियों से मनुष्य को संतुष्ट रहना पड़ा है।

निकट भविष्य में मनुष्य उन चमत्कारों को भी इन्हीं आँखों से देख सकेगा, जो भूतकाल में केवल अध्यात्म विज्ञानियों के लिए ही संभव थे। भूतकाल की घटनाएँ सदा-सर्वदा के लिए सुरक्षित

रखी जा सकेंगी और उन्हें फिल्म—टेलीविजन की तरह आभास मात्र स्तर पर नहीं, वरन् -बिल्कुल उसी तरह देखा जा सकेगा—जिस तरह आँखों से देखा जाता है। तब वह पहचानना कठिन हो जाएगा कि, जो दृश्य देख रहे हैं, वह असली है या नकली। भूतकाल को हम वर्तमान में पूर्णतया वैसा ही देखेंगे, मानो वह सचमुच अभी-अभी ही घटित हो रहा है और हम उसे बिल्कुल असली रूप में देख रहे हैं। ऐसा 'त्रियायतन' फोटोग्राफी के सुविकसित विज्ञान के द्वारा संभव हो सका।

दुर्योधन को पांडवों के घर ज़ाकर थल में जल और जल में थल दिखाई दिया था। वह दर्पण का चमत्कार नहीं था। दर्पण के लिए दूसरी छवि वैसी ही सामने उपस्थित होनी चाहिए। वैसा वहाँ कहाँ था ? खुले आकाश में बिना किसी पर्दे की सहायता के अभीष्ट दृश्यों को देख सकना निःसंदेह बहुत ही अद्‌भुत है। पहली बार जिन्हें वैसा कुछ देखने को मिलेगा, वे निःसंदेह अवाक् रह जाएँगे और अपनी आँखों पर विश्वास न करेंगे। संजय ने घर बैठे महाभारत के दृश्य देखे थे और सारा घटना-क्रम धृतराष्ट्र को सुनाया था। इस संभावना की टेलीविजन ने पुष्टि कर दी थी। अब रही-बची कसर 'होलीग्राफी' ने पूरी कर दी है। उस विज्ञान के आधार पर हम देश-काल की समस्त परिधियों को तोड़कर किसी घटना-क्रम को इतने स्पष्ट और इतने निर्दोष रूप में देख सकते हैं कि, असल-नकल को पहचान सकना ही संभव न रहे।

विज्ञानाचार्य आइन्स्टीन ने देश और काल की मान्यता को भ्रांत—अवास्तविक—सिद्ध किया है। वेदांत दर्शन में जगत् को माया—भ्रांतिवत् कहा है और रज्जु-सर्प का उदाहरण देकर बताया है कि, जो कुछ हम देखते हैं—वह वास्तविक नहीं है। अणु विज्ञानी की दृष्टि में यह संसार अणु-धूलि के आँधी-तूफान से भरा बवंडर मात्र है। इसमें भँवर-चक्रवात जैसे उपक्रम बनते-बिगड़ते रहते हैं, उन्हें ही अमुक पदार्थों के रूप में अनुभव किया जाता है। जो कुछ दिखाई देता है, वह खोखला आवरण मात्र है, उसके भीतर

आणविक हलचलों का अंधड़ भर चलता रहता है। हमारा मस्तिष्क और नेत्र संस्थान अपनी बनावट एवं अपूर्ण संरचना के कारण वह सब देखता है, जिसे हम यथार्थ मानते हैं, पर वस्तुतः होता कुछ और ही है।

स्थिर तस्वीरों को चलती-फिरती दिखाकर सिनेमा ने बहुत पहले ही यह सच्चाई सामने ला दी थी कि, आँखों को प्रामाणिक साक्षी नहीं माना जा सकता। वे जो कुछ देखती या अनुभव करती हैं, वह सब का सब यथार्थ ही नहीं होता। अब रही बची होलीग्राफी ने पूरी कर दी है। वह पर्दे पर नहीं, खुले आकाश में हमें ऐसे दृश्य दिखा सकती हैं, मानो उस देश-काल की स्थिति यथार्थ रूप से देखी जा रही है, जो वस्तुतः दूरवर्ती ही नहीं—भूतकाल की भी है। उस दृश्यावली को फोटोग्राफी कहना—स्वीकार करना भी दर्शक के लिए संभव न रहेगा।

अध्यात्म विद्या के आधार पर देश-काल की परिधि के बाहर के दृश्य को देख सकना संभव रहा है, इसे दिव्य दृष्टि कहा जाता रहा है। दिव्य दृष्टि की बात अविश्वसनीय नहीं है। यह तथ्य होलीग्राफी के रूप में अब सामने आ खड़ा हुआ है। वेदांत का वह कथन भी अब गंभीरतापूर्वक विचार करने योग्य प्रतीत होता है कि, हमारी आँखें धोखा खाती हैं और अवास्तविक को वास्तविक समझती हैं। यह तथ्य भी उभरता आता है कि, हमारे सामने की दिशा में और नियत सीमा के दृश्य ही देखे जा सकते हैं। किसी भी दिशा के, पीठ पीछे के भी—भूतकाल के, दूर देश के भी दृश्य हम इन्हीं आँखों से देख सकते हैं कि, देश-काल की मान्यता भ्रामक है।

प्रकाश किरणों को छवि के रूप में पकड़ने की कला अब फोटोग्राफी—टेलीविजन तक सीमित नहीं रही, अब वे आधार प्राप्त कर लिए हैं, जिनसे तीन आयामों वाले—त्रिविमितीय—चित्र देखे जा सकें। आमतौर से फोटोग्राफी लंबाई-चौड़ाई का ही बोध कराती है, गहराई का तो उसमें आभास मात्र ही होता है। यदि गहराई को भी प्रतिबिंबित किया जा सके, तो फिर आँखों से देख जाने वाले

दृश्य और छाया अंकन में कोई भेद न रहेगा। ऐसा दृश्य प्रचलन संभव हो सका, तो फिल्में अपने वर्तमान अधूरे स्तर की फोटोग्राफी तक सीमित नहीं रहेंगी, वरन् पर्दे पर रेल, मोटर, घोड़े, मनुष्य आदि उसी तरह चलते, दौड़ते दिखाई पड़ेंगे, मानो वे अपने यथार्थ स्वरूप में ही आँखों के आगे गुजर रहे हैं। यदि सामने से अपनी ओर कोई रेल दौड़ती आ रही हो या शेर झपटता आ रहा हो, तो बिल्कुल यही मालूम पड़ेगा कि, अब अपने ऊपर ही चढ़ बैठने वाले हैं। ऐसी दशा में आरंभिक अभ्यास की स्थिति में सिनेमा दर्शक को भयभीत होकर अपनी सीट छोड़कर भागते ही बनेगा।

प्रकाश विज्ञानी एर्नेस्टएये और उनके सहयोगी शिष्य डी० गैवर ने होलीग्राफी के एक नए सिद्धांत का आविष्कार किया, जिसके आधार पर—त्रिविमितीय—स्तर का छाया-चित्रण आँखों से देखा जा सकेगा और भूतकालीन दृश्यों को इन्हीं आँखों से इस प्रकार देखा जा सकेगा, मानो वह घटना-क्रम अभी-अभी ही बिल्कुल सामने घटित हो रहा है।

इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी के इस विधि-विज्ञान को रूस की विज्ञानी यूरीदैनिस्यूक के नेतृत्व में और भी आगे बढ़ाया है। इस युग में वैज्ञानिकों ने परंपरागत पतली परत वाली फोटो 'प्लेटों' के स्थान पर मोटी परत लगाई और उन पर प्रकाश किरणों को गहराई तक प्रवेश कर सकने का अवसर दिया। फलतः तीन आयाम वाले चित्रों की एक विशेषता यह है कि—जिस कोण से इन्हें देखा जाए, वे उसी कोण से खींचे हुए पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई पड़ेंगे। सामने खड़े होकर देखें, तो वे सामने से खिंचे हुए दीखेंगे और अगल-बगल से देखने पर लगेगा, कि उन्हें इसी प्रकार खींचा गया और जितना अंश वहाँ खड़े हुए दृश्य को जिस रूप में देखा जा सकता था, फोटोग्राफ ठीक उसी तरह का दीख रहा है।

होलीग्राफी वस्तुतः 'लेजर' किरणों के अनेक चमत्कारों में से एक है। लेजर का सैद्धांतिक आविष्कार आइंस्टाइन ने किया था। ५० वर्ष बाद उस परिकल्पना को साकार बनाया चार्ल्स टाउनेस

ने—सन् १९५४ में। परमाणुओं को एक विशेष विधि से उत्तेजित करने और उनसे एक जैसी माइक्रो तरंगें निकालने की आरंभिक प्रक्रिया 'मेजर' कहलाती थी। उसी का परिष्कृत रूप चार वर्ष बाद सामने आया और वह 'लेजर' कहलाया।

कुछ पदार्थों को गरम या उत्तेजित करने से एक विशेष प्रकार की ऊर्जा एवं आभा निकलती है, जो रोशनी की बत्ती से भिन्न प्रकार की होती है। साधारण प्रकाश कई रंगों की किरणों से मिलकर बना होता है और वे किरणें अलग-अलग लंबाइयों और कलाओं की होती हैं। इंद्र धनुष पड़ते समय यह लंबाई की भिन्नता ही उस सुंदर दृश्य के रूप में अपना परिचय देती है। इस बिखराव को एक भीड़-भेड़चाल कह सकते हैं। लेजर प्रक्रिया में परमाणुओं को उत्तेजित करके एक ही रंग की, एक ही कद की किरणें निकाली जाती हैं और उन्हें अधिकाधिक सघन बनाया जाता है। इतने से ही वे किरणें इतनी प्रचंड हो उठती हैं कि—गजब का काम करती हैं। इन्हें अब तक के उपलब्ध शक्ति स्रोतों में सबसे अधिक प्रचंड माना जाता है। अणु विस्फोट की शक्ति से भी कई क्षेत्रों में यह अधिक तीखी और पैनी है। लेजर किरणों के प्रयोग से अगले दिनों भौतिक क्षेत्रों में अनोखी एवं क्रांतिकारी प्रतिक्रिया सामने आने वाली है। उन्हीं में से एक होलीग्राफी भी है।

आविष्कार के प्रारंभिक दिनों में यह कठिनाई थी कि, लेजर किरणें केवल एक ही रंग की किरणें उत्पन्न करती थीं, इसलिए फोटो भी एक रंग के बनते थे। दूसरी कठिनाई यह थी कि, खींचने की तरह देखने में भी लेजर किरणों का प्रकाश ही प्रयुक्त करना पड़ता था। स्पष्ट है कि, लेजर अत्यंत खतरनाक होती है। उनका तनिक भी व्यतिक्रम हो जाए तो सर्वनाश निश्चित है। अब उसमें कितने ही सुधार हो गये हैं। विज्ञानी लिपमाना ने तीन आयाम वाली फोटोग्राफी के लिए जो 'प्लेट' बनाई थी, वे होलीग्राफी में फिट् बैठ गई हैं और तस्वीर देखने के लिए साधारण रोशनी के प्रयोग से काम चलने लगा है। यह सुधार हो जाने से अब मार्ग निष्कंटक हो

गया और सर्व-साधारण के लिए होलीग्राफी का आनंद ले सकना संभव हो गया। अब उसके लिए सुलभ यंत्रों का बनना ही शेष रह गया है।

होलीग्राफी का आविष्कार ब्रिटिश नागरिक डॉ० डैनिस गैवर ने किया। उसे इसके उपलक्ष्य में भौतिकी का नोबल पुरस्कार मिला है। चमत्कारी आविष्कारों में इस भौतिकी को अपने ढंग की अत्यंत अद्‌भुत ही कहा जायेगा। यों अभी उसका क्षेत्र निर्धारित प्रयोगशालाओं में ही है। फिल्म या टेलीविजन की तरह उसका विस्तार इतना व्यापक नहीं हुआ है कि, जनसाधारण उससे लाभ उठा सके, पर वह दिन दूर नहीं, जब यह आविष्कार सर्व सुलभ हो जाएगा। फोटोग्राफी का विज्ञान आविष्कृत होने के ११२ वर्ष बाद सर्व साधारण के लिए प्रयोग योग्य बन पाया था। टेलीफोन ५६ वर्ष बाद, टेलीविजन १२ वर्ष बाद, एटम बम ५ वर्ष बाद, अपने आविष्कार के बाद उपयोग में आए थे। होलीग्राफी को भी कुछ समय लग सकता है, पर जब भी वह प्रयुक्त होगी, तब जिन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था, उन्हें बहुत ही अजीब—किसी जादू लोक के तिलस्म जैसा लगेगा।

□□

अंतर्निहित विभूतियों का आभास-प्रकाश

"मुझे अच्छी तरह स्मरण है, तब मैं सात वर्ष का बच्चा था। पिताजी किसी काम से बाहर गये थे। विचार और भावनाएँ कहाँ से आती हैं, मुझे कुछ मालूम नहीं है, किंतु मुझे इनमें मानव-जीवन का कुछ यथार्थ दर्शन और अमरता का रहस्य छिपा हुआ जान पड़ता है। ऐसा मैं इस आधार पर कहता हूँ कि, मुझे उस दिन यों ही एकाएक खेलते-खेलते ऐसा लगा कि, पिताजी एक ट्राम से घर आ रहे हैं। ट्राम दुर्घटना ग्रस्त हो गई है और उसमें पिताजी बुरी तरह घायल हो गए हैं। बिना किसी दूरदर्शन (टेलीविजन) यंत्र के इस तरह का आभास क्या था ? मुझे कुछ पता नहीं है।"

रीडर्स डाइजेस्ट नामक विश्व विख्यात मासिक पत्रिका में "सैम बेंजोन की सूक्ष्म शक्तियाँ" नामक शीर्षक से यह पंक्तियाँ उद्धृत की गई हैं। पूर्वाभास की घटनाओं का उल्लेख करते हुए इसमें लेखक ने स्वीकार किया है कि—"संसार में कोई एक ऐसा तत्त्व भी है, जो हाथ-पाँव विहीन होकर भी सब कुछ कर सकता है, कान न होकर भी सब कुछ सुन सकता है, आँखें उसके नहीं हैं, पर वह अपने आपके प्रकाश में ही सारे विश्व को एक ही दृष्टि में देख सकता है। त्रिकाल में क्या संभाव्य है ? यह उसको पता है। उसका संबंध विचार और भावनाओं से है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि, विचार और ज्ञान की शक्ति चिरभूत और सनातन है।"

सैम बेंजोन अपनी माँ के पास गया और कहा—"माँ ! पिताजी घायल हो गए लगते हैं, मुझे अभी-अभी ऐसा आभास हुआ है कि, वे जिस ट्राम से वापस आ रहे थे, वह दुर्घटना ग्रस्त हो गई है।" माँ ने बच्चे को झिड़की दी—"तुझे यों ही ख्याल आया करते हैं, चल भाग जा, अपना काम कर।"

बच्चा अभी वहाँ से गया ही था कि, सचमुच उसके पिता घायल अवस्था में घर लाये गए। पूछने पर ज्ञात हुआ कि, सचमुच वे जिस ट्राम से आ रहे थे, वह दुर्घटना ग्रस्त हो गई, उसमें कई व्यक्ति मारे गए। माँ को जितना पति की चोट का दुःख था, उससे अधिक पुत्र के पूर्वाभास का आश्चर्य। हमारे जीवन में ऐसे अनेक बार आत्मा से प्रकाश आता है, जिसमें हमें कुछ सत्य अनुभव होते हैं, पर सांसारिकता में अनुरक्त मनुष्य उनसे आत्म-ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता कहाँ अनुभव करते हैं ?

क्रिसमस का त्यौहार आया। घर दावत दी गई। बहुत से मित्र, संबंधी और पड़ौसी आये। लोगों ने अनेक तरह के उपहार दिये। उपहार के सब डिब्बे एक तरफ रख दिये। प्रीतिभोज चलता रहा। सबको बड़ी प्रसन्नता रही। हँसी-खुशी के वातावरण में सब कुछ सानंद संपन्न हुआ।

मेहमान घरों को विदा हो गए, तब डिब्बों की पड़ताल प्रारंभ हुई। माँ ने बच्चे से कहा—'बेंजोन ! तू बड़ा भविष्यदर्शी बनता है, बोल इस डिब्बे में क्या है ?" 'बेसबाल' माँ ! ऐसे जैसे उसने खोलकर देखा हो। जबकि डिब्बा जैसा आया था, वैसे ही बंद था, किसी को भी खोलने तो क्या, देखने का भी अवकाश नहीं मिला था।

डिब्बा खोला गया। माँ अवाक् रह गई। सचमुच डिब्बे में 'बेसबाल' ही था।

अब जब एक्सरे जैसे यंत्र बन गए हैं, जो त्वचा के आवरण को भी पार करके भीतर के चित्र खींच देते हैं, तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं रह गई है। किंतु बिना किसी 'लेन्स' या यंत्र के डिब्बे के भीतर की वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर लेना यह बताता है कि, विचार और भावनाओं की शक्ति इतनी दिव्य और सूक्ष्म है कि, गहन अंतराल में छिपी हुई वस्तुओं का भी ज्ञान बिना किसी माध्यम के प्राप्त कर सकती है। इससे उसकी सर्वव्यापकता का पता चलता है।

सैम बेंजोन की घरों में रंग-रोगन करने वाले एक पेंटर मार्टिन से जान-पहचान थी। एक दिन वह अपने ऑफिस में बैठे हुए कुछ काम कर रहे थे। एक रात सैम बेंजोन घर पर सो रहे थे। एककाएक उनकी नींद टूटी। उन्हें ऐसा लगा कि, कहीं से किसी के जलने की दुर्गंध आ रही है। अपनी धर्मपत्नी को जगाकर उन्होंने पूछा—"देखना चाहिए, कहीं कुछ जल तो नहीं रहा।" पति-पत्नी ने सारा घर ढूँढ़ लिया, कहीं कोई आग या जलती हुई वस्तु नहीं मिली। बेंजोन ने कहा—"मुझे ऐसा लगता है, दुर्गंध तुम्हारी माँ के घर से आ रही है।"

पत्नी ने बिदक कर कहा—"पागल हुए हो, मेरी माता जी का घर आठ मील दूर है, इतनी दूर से कोई दुर्गंध आ सकती है।' सैम बेंजोन ने थोड़ा जोर देकर कहा—"तुम जानती हो मेरा आत्म-विश्वास प्रायः अचूक होता है। देखो टेलीफोन करके ही पूछ लो, सचमुच कोई बात तो नहीं।"

पत्नी ने रिंग बजाई, उधर से कोई आवाज नहीं आई। किसी ने टेलीफोन नहीं उठाया। लगभग १५ मिनट तक प्रयत्न करने के बाद भी जब उधर से किसी ने टेलीफोन 'रिसीव' (उठाया) नहीं किया, तो पत्नी ने झिड़ककर कहा—"सब लोग सो रहे होंगे, व्यर्थ ही परेशान किया।" पर तभी उधर से 'हलो' की आवाज आई—माँ ने बताया कि घर के पिछले हिस्से में आग लग गई थी, पड़ौसियों की सहायता से उसे बुझाया जा सका। इस घटना का पत्नी प्रर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि, फिर उन्होंने आत्मा के अस्तित्व से कभी इनकार नहीं किया। वे रातभर इस विलक्षण तत्त्व के बारे में सोचती रहीं।

यह तो एक व्यक्ति से संबंधित घटना हुई। कई बार साधारण व्यक्तियों को सामान्य अवस्था में भी इस प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं, जो लगती तो स्वप्न जैसी हैं—परंतु उनकी प्रामाणिकता के कारण वे वास्तविक सी भी लगती हैं। उस समय की अनुभूतियों पर भले ही विश्वास न हो, परंतु कालांतर में वही घटनाएँ सत्य सिद्ध होती हैं।

पूर्वाभास और स्वप्न

सन् १९४३ की रात, द्वितीय महायुद्ध, पैसफिक सागर में तेरहवीं एअर फोर्स बटालियन के कमांडर जनरल नेथान एफ० ट्वीनिंग दुर्भाग्यवश युद्ध के दौरान अपने बेड़े से अलग-अलग पड़ गये। वे एस्पेराइट सांतो एअर बेस के लिए अपने चौदह साथियों के साथ रवाना हुए थे। युद्ध के दिन थे ही। बहुत खोज की गई, पर उनका व उनके साथियों का कुछ भी न चला।

जनरल नेथान के पत्नी उस समय अमेरिका में अपने घर में रह रही थीं। प्रगाढ़ निद्रा के समय उन्हें लगा, उनके पति उनके पास खड़े हैं और बेचैनीपूर्वक उसे जगा रहे हैं। श्रीमती ट्वीनिंग ने अपने पति का मुँह और हाथ स्पष्ट देखा। उन्होंने पति के हाथ पकड़ने चाहे, तभी उनकी एकाएक नींद टूट गई। स्वप्न उन्होंने पहले भी देखे थे, किंतु यह स्वप्न उनसे विचित्र था। जग जाने पर भी वह ट्वीनिंग को इस प्रकार रोमांचित कर रहा था कि, उनकी गर्दन के बाल सिहरकर खड़े हो गये थे।

उसके बाद उन्हें नींद नहीं आई। रात पूरी जागकर बिताई। सबेरा हो चला था। तभी एकाएक टेलीफोन की घंटी बजी। उनकी एक सहेली का फोन था। उसके पति भी दक्षिणी पैसफिक सागर पर सैनिक अफसर थे, इसलिए श्रीमती के हृदय में रात की रोमांचकारी घटना ने फिर एक बार उत्तेजना उत्पन्न की। उन्होंने जल्दी-जल्दी में पूछा—कहो सब ठीक तो है ना ! उधर से आवाज आई—सब ठीक है, पर मेरा मन न जाने क्यों बड़ी देर से बार-बार तुम्हें ही याद कर रहा है। मैंने तुम्हारे पास आने का निश्चय किया है, कहीं जाना मत, मैं दो-तीन दिन में तुम्हारे पास आ रही हूँ।

श्रीमती ट्वीनिंग को अब भी आशंका थी कि, उसे कोई बात कहनी है, जों अभी छिपाई जा रही है, किंतु जब वे घर आईं तब भी ऐसी कोई बात उन्होंने नहीं बताई। इतने पर भी श्रीमती ट्वीनिंग की उस स्वप्न के प्रति आशंका गई नहीं।

दो दिन रहकर जब उनकी सहेली वापस लौट गई, तब श्रीमती ट्वीनिंग को सरकारी तौर पर जानकारी दी गई, कि उनके पति अपने बेड़े के साथ लापता हैं, उनकी खोज की जा रही है। खोज करने वाले अधिकारी नियुक्त कर दिये गए हैं। इस समाचार से उनका मन बड़ा व्यग्र हो रहा था। थोड़ी ही देर बाद दूसरी सूचना मिली, जिसमें यह बताया गया था कि, जहाज मिल गया है और श्री ट्वीनिंग शीघ्र ही उनसे मिलने घर आ रहे हैं।

भेंट होने पर श्रीमती ट्वीनिंग ने बताया कि, सचमुच उस दिन ठीक उसी समय वे संकट में पड़े थे, जिस समय उन्होंने स्वप्न देखा। उन्होंने यह भी बताया कि—कितने आश्चर्य की बात है कि—ठीक उसी समय मुझे तुम्हारी (उनकी पत्नी) तीव्र याद आई थी। इस पारस्परिक अनुभूति का कारण क्या हो सकता है ? इसके अतिरिक्त जिस ऑफीसर ने खोज की, वह उनकी सहेली का ही पति था। उसे किसने वहाँ जाने लिए प्रेरित किया, यह सब रहस्य हैं। जीवन में जो कुछ प्रकट है, वही सत्य नहीं, वरन् सत्य का सागर तो अदृश्य में छुपा हुआ है और वह विचित्र संयोगों के मध्य प्रकट हुआ करता है।

सत्य की खोज में "इन सर्च ऑफ दि ट्रूथ" पुस्तक में इस घटना का हवाला देते हुए श्रीमती रूथ मांटगुमरी लिखती हैं कि, युद्धों के समय पाशविक वृत्तियाँ एकाएक आत्म-मुखी हो उठती हैं, तब किन्हीं भी व्यक्तियों को अतींद्रिय अनुभूतियाँ स्पष्ट रूप से होने लगती हैं। युद्ध के मैदानों में लड़ने वाले सैनिक और उनके संबंधी-रिश्तेदारों के बीच एक प्रगाढ़ भावुक संबंध स्थापित हो जाता है, वही इन अति मानसिक अनुभूतियों की सत्यता का कारण होता है। ध्यान की गहन अवस्था में होने वाले भविष्य की घटनाओं के पूर्वाभास भी इसी कारण होते हैं कि, उस समय एक ओर से मानसिक विद्युत् दूसरी ओर से पूरी क्षमता के साथ संबंध जोड़ देती और जिस प्रकार लेजर यंत्र, दूरदर्शी (टेलीविजन) यंत्र हमें दूर के दृश्य व समाचार बताने-दिखाने लगते हैं, उसी प्रकार यह

भाव संबंध हमें दूरवर्ती स्थानों की घटनाओं के सत्य आभास कराने लगते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध की ही एक अन्य घटना का उल्लेख अपने इसी अध्याय में करते हुए श्रीमती रूथ मांटगुमरी ने लिखा है कि, चेकोस्लोवाकिया तथा थाईलैंड के भूतपूर्व राजदूत—जो उसके बाद ही जापान के राजदूत नियुक्त हुए, श्री जानसन तब तक मुकड़ेन नगर में थे। युद्ध की आशंका से बच्चों को अलग कर दिया गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पैट्रोसिया जॉन ने कैलीफोर्निया के लैगुना बीच में एक मकान ले लिया और वहीं रहने लगी।

इस बीच श्रीमती जॉनसन ने कई बार जापान के समाचार जानने के लिए अपना रेडियो मिलाया, पर रेडियो ने वहाँ का मीटर पकड़ा ही नहीं। एक दिन पड़ौस की एक स्त्री ने बताया कि, उनका रेडियो जापानी प्रसारणों को (रेडियो ब्रांड कास्टिंग) खूब अच्छी तरह पकड़ लेता है। तीन महीने तक श्रीमती जॉनसन ने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया। एक दिन उन्हें एकाएक रेडियो सुनने की इच्छा हुई। रेडियो का स्विच घुमाया ही था कि, आवाज आई—हम रेडियो स्टेशन मुकड़ेन से बोल रहे हैं। अब आप एक अमेरिकन ऑफीसर बी० जानसन को सुनेंगे।"

विस्मय विस्फारित श्रीमती जॉनसन एकाग्र चित्त बैठ गई—अगले ही क्षण जो आवाज आई, वह उनके पति की ही आवाज थी। वे बोल रहे थे—मैं बी० एलेक्सिस जॉनसन मुकड़ेन से बोल रहा हूँ, जो भी कैलिफोर्निया अमेरिका का नागरिक इसे सुने, कृपया मेरी पत्नी पैट्रोसिया जॉनसन या माता-पिता श्री व श्रीमती कार्ल टी० जॉनसन तक पहुँचाये और बताए कि, मैं यहाँ कैद में हूँ, स्वस्थ हूँ, खाना अच्छा मिलता है और आशा है—कैदियों की अदला-बदली में शीघ्र ही छूट जाऊँगा, अपनी पत्नी और बच्चे को प्यार भेजता हूँ।"

दो माह पीछे जॉनसन कैदियों की बदली में छूटकर आ गए। पैट्रोसिया पति से मिलने गई, तो वहाँ उसे पति से क्षणिक भेंट होने

दी, क्योंकि कुछ समय के लिए श्री एलेक्सिस जॉनसन को तुरंत जहाज पर जाना था। पैट्रोसिया को थोड़ी ही देर में घर लौटना पड़ा। उसकी सहेलियाँ उसे घुमाने ले गईं पर अभी वे एक सिनेमा में बैठी ही थी कि, पैट्रोसिया एकाएक उठकर बाहर निकल आई और अपने घर को फोन मिलाया, तो दूसरी ओर से अलेक्सिस जॉनसन बोले और बताया कि—मैं यहाँ हूँ मुझे जहाज में नहीं जाना पड़ा। पैट्रोसिया सिनेमा छोड़कर घर चली आई।

३ माह तक कभी भी रेडियो सुनने की आवश्यकता अनुभव न करना और ठीक उसी समय पति संदेशा देने वाले हों, रेडियो सुनने की अंतःकरण की तीव्र प्रेरणा का रहस्य क्या हो सकता है ? कौन-सी शक्ति थी, जिसने पैट्रोसिया को सिनेमा के समय फोन पर पहुँचने की प्रेरणा दी ? जब इन बातों पर विचार करते हैं, तो पता चलता है, कोई एक अदृश्य शक्ति है अवश्य, जिसने मानव मात्र को एक भावनात्मक संबंध में बाँध अवश्य रखा है। हम जब तक उसे नहीं जानते, तब तक मनुष्य शरीर की सार्थकता कहाँ ? दूरवर्ती स्वजनों के साथ घटित होने वाली घटनाओं तथा भविष्य-वक्ताओं का पूर्वाभास कितनी ही बार विचित्र ढंग से सामने आता है, न तो उन्हें झुठलाया जा सकता है और न उनका आधार अथवा कारण समझ में आता है।

इस संदर्भ में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉ० नेलसन वील्ट का कथन है कि—मनुष्य के अंदर एक बलवती आत्म-चेतना रहती है, जिसे जिजीविषा एवं प्राणधात्री शक्ति कह सकते हैं। यह न केवल रोग निरोध अथवा आत्म-रक्षा जैसे अस्तित्व संरक्षण के अविज्ञात साधन जुटाती है, वरन् चेतना जगत् में चल रही उन हलचलों का पता लगा लेती है, जो अपने आगे विपत्ति के रूप में आने वाली है। पूर्वाभास बहुधा अपने ऊपर तथा अपने संबंधियों के ऊपर आने वाले संकटों के ही होते हैं। सुख-सुविधा की परिस्थितियों का ज्ञान कभी-कभी या किसी-किसी को ही हो पाता है।

परा मनोविज्ञानी हैराल्ड कहते हैं कि, स्वप्न में ही नहीं, अपितु जाग्रत् स्थिति में भी कई बार बिल्कुल सही और ऐसे पूर्वाभास होते पाये गए हैं, जिनका सामयिक परिस्थितियों से कोई सीधा संबंध नहीं था। उन्होंने फ्रांसीसी उड्डयन संस्थान में काम करने वाले एक यान चालक की विमान दुर्घटना से मृत्यु होने का उल्लेख किया है और बताया है कि, ठीक दुर्घटना के समय ही रास्ता चलती उसकी एक मात्र बहिन को यह अनुभव हुआ था कि, अभी-अभी उनका भाई वायुयान दुर्घटना में मरा है। दूसरे दिन ठीक वैसा ही समाचार भी उसे मिल गया। इस प्रकार के प्रसंगों में व्यक्तियों की पारस्परिक आत्मीयता की सघनता का बहुत हाथ रहता है।

मनःशास्त्री हेनब्रुक ने अपनी शोधों में इस बात का उल्लेख किया है कि, अतींद्रिय क्षमता पुरुषों की अपेक्षा नारियों में कहीं अधिक होती है। दिव्य अनुभूतियों की अधिकता उन्हें ही क्यों मिली ? इसका कारण वे नारी स्वभाव में कोमलता, सहृदयता जैसे सौम्य गुणों के आधिक्य को ही महत्त्व देते हैं। उनकी दृष्टि में अध्यात्म क्षेत्र में नारी को अपनी प्रकृति प्रदत्त विशेषताओं के कारण सहज ही अधिक सफलता मिलती रहती है।

बीज रूप से यह अलौकिक एवं अतींद्रिय क्षमता हर किसी में मौजूद है और यह संभावना हर किसी के सामने खुली पड़ी है कि, उस दिव्य शक्ति को प्रयत्नपूर्वक विकसित करके न केवल अपना वरन् दूसरों का भी भला कर सके।

मनुष्य शरीर में इनकी संभावना किन स्थानों पर है ? इस संबंध में भारतीय योगियों की मान्यता है कि, मेरुस्तंभ के शिखर पर—सीधे ऊपर खोपड़ी के बीच में, बाल स्थान से थोड़ा हटकर लालिमा लिए हल्के भूरे रंग की कोण की शक्ल की वस्तु मस्तिष्क की पिछली कोठरी के आगे तीसरी कोठरी की तह से मिली हुई पायी जाती है। यह गुच्छी का पुंज है, जिसमें छोटे-छोटे खुरखुरे चूनेदार अणु होते हैं। इन्हें "मस्तिष्क बालुका" कहा जाता है।

पश्चिमी वैज्ञानिक इसे पाइनिअल ग्लैंड या पाइनिअल बॉडी कहते हैं, पर वे अभी उसके कार्य अभिप्राय और प्रयोग से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। कोरी जानकारियाँ ही इस संबंध में मिलती हैं।

दूरवर्ती वस्तुओं और सूक्ष्म से सूक्ष्म मन तक लगाव का कारण योगी लोग इसी स्थान को मानते हैं। यह आत्मा की ज्ञान- शक्ति का कोष कहा जा सकता है। इस अवयव के लिए यह आवश्यक नहीं कि, इसमें कोई बाह्य द्वार हो—जैसा कि कान, नाक, मुँह में होता है। इनसे उठने वाले विचार-कंपन स्थूल पदार्थों का भेदन भी उसी तरह कर जाते हैं, जिस तरह 'एक्सरेज'। वह सूक्ष्म विचार कंपन पहाड़ों की चट्टानों, लोहे आदि का भी भेदन कर, उसके भीतर की आणविक संरचना का ज्ञान प्राप्त करा सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि, जमशेद जी टाटा को खनिज और इस्पात का कारखाना खड़ा करने का स्थान स्वामी विवेकानंद ने लंदन में तब बताया था, जब श्री टाटा जी वहाँ उसकी स्वीकृति लेने गए थे। खनिज पदार्थ, पानी और तेल के कुओं तक का पता धरती के भीतर हजारों फीट निचाई में हों, तो वहाँ भी यह विचार-कंपन पहुँचकर—वहाँ की स्थिति का रहस्य आत्मा को बता सकते हैं।

उन दिनों पाकिस्तान से दिल्ली आए हुए ४० हजार शरणार्थियों के लिए फरीदाबाद के निकट एक बस्ती बसाई जा रही थी। योजना पूरी तैयार थी, पर पानी का विकट प्रश्न था। यमुना वहाँ से १८ मील दूर थी। इतनी लंबी पाइप लाइन का तुरंत बिछाना कठिन भी था और खर्चीला भी। इंजीनियर पहले ही बता चुके थे कि, उस इलाके की जमीन में नलकूप लगाए जाने योग्य पानी नहीं है। समस्या बड़ी विकट थी।

तभी श्री नेहरू को याद आया कि, जामसाहब नवानगर ने एक बार उनसे किसी ऐसे व्यक्ति की चर्चा की थी, जिसमें भूमिगत पानी का पता लगाने की अद्भुत शक्ति है। तत्काल जामसाहब के पास संदेश पहुँचाया गया और वह व्यक्ति साधारण किसान की वेषभूषा वाला "पानी वाला महाराज" दिल्ली जा पहुँचा। महाराज को

लेकर उस क्षेत्र की ३५०० एकड़ जमीन का पर्यवेक्षण किया गया। उसने पैर से ठोक-ठोक कर कई जगह की जमीन जाँची और दस जगहों पर निशान लगवाये, कि यहाँ पानी है, तदनुसार नलकूप खोदे गए और सचमुच ही वहाँ जल के गहरे स्रोत निकले। इनमें से हर कुआँ अभी तीन हजार गैलन पानी हर घंटे की गति से दे रहा है। इससे पूर्व इस पथरीले इलाके में इतना पानी मिलने की किसी इंजीनियर ने कल्पना भी नहीं की थी।

मस्तिष्क के सूक्ष्म स्नायु कोष बेतार के तार की तरह अदृश्य जगत् के सूक्ष्म से सूक्ष्म कंपन को भी पकड़ लेता है, इसलिए जो बात मन में तो न हो—अवचेतन मन में हो, उसे भी जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए कोड़ी वाले बैल देखे होंगे, जो अपने स्वामी के संकेत पर बता देते हैं कि—५ रुपये का नोट किसकी जेब में है ? बैल चलता है और उस आदमी के पास जा पहुँचता है। वह आदमी पूछता है—इनमें 'राम-शंकर' कौन है उस समय भीड़ में खड़ा रामशंकर अपने मन में अपना नाम भी नहीं लेता, उस समय तो उसे केवल कौतूहल होता है, पर चूँकि उसके अवचेतन मस्तिष्क में यह बात रहती है कि—मैं रामशंकर हूँ, उसी को बैल का वह अवयव पकड़ लेता है और उस व्यक्ति के पास जाकर बता देता है।

इस तरह के खेल प्रायः सभी ने देखे होंगे। अभी तक इनको चमत्कार माना जाता है, पर मनुष्येतर जीवों में, सभी में इस तरह की ज्ञान-शक्ति के आधार पर यह पता लग सकता है कि, आत्मा का अस्तित्व मनुष्य में ही नहीं, अन्य प्राणियों में भी है। जिस दिन यह मान्यता लोगों के मस्तिष्क में उतर जायेगी, उसी दिन पुनर्जन्म व कर्मफल के अनेक रहस्य भी मालूम होने लगेंगे और तब अब की तरह चोरी, छल, कपट, धोखा, अपराध, अत्याचार करने वाले लोगों को मालूम होगा कि, इनके कारण दूसरी योनियों में रहकर किस तरह कष्ट उठाना पड़ा और देहासक्ति से अब किस तरह बचा जा सकता है ?

अध्यात्म विज्ञान में स्थान-स्थान पर प्रकाश की साधना और प्रकाश की याचना की चर्चा मिलती है। यह प्रकाश बल्ब, बत्ती अथवा सूर्य, चंद्र आदि से निकलने वाला उजाला नहीं, वरन् वह परम ज्योति है, जो इस विश्व चेतना का आलोक बनकर जगमगा रही है। गायत्री का उपास्य सविता देवता इसी परम ज्योति को कहते हैं। इसका अस्तित्व ऋतंभरा प्रज्ञा के रूप में प्रत्यक्ष और कण-कण में संव्याप्त जीवन-ज्योति के रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर भी देखं सकता है। इसकी जितनी मात्रा, जिसके भीतर विद्यमान हो, समझना चाहिए कि, उसमें उतना ही अधिक ईश्वरीय अंश आलोकित हो रहा है।

मस्तिष्क के मध्य भाग से प्रकाश कणों का एक फौआरा सा फूटता रहता है। उसकी उछलती हुई तरंगें एक वृत्त बनाती हैं और फिर अपने मूल उद्गम में लौट जाती हैं। यह रेडियो प्रसारण और संग्रहण जैसी प्रक्रिया है, ब्रह्मरंध्र से छूटने वाली ऊर्जा अपने भीतर छिपी हुई भाव-स्थिति को विश्व-ब्रह्मांड में ईथर कंपनों द्वारा प्रवाहित करती रहती है, इस प्रकार मनुष्य अपनी चेतना का परिचय और प्रभाव समस्त संसार में फेंकता रहता है। फुहारे की लौटती हुई धाराएँ अपने साथ विश्वव्यापी असीम ज्ञान की नवीनतम घटनात्मक जानकारियाँ लेकर लौटती हैं, यदि उन्हें ठीक तरह समझा जा सके, ग्रहण किया जा सके, तो कोई भी व्यक्ति भूतकालीन और वर्तमान काल की अत्यंत सुविस्तृत और महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति में प्रवाह ग्रहण करने की और प्रसारित करने की जो क्षमता है, उसका माध्यम यह ब्रह्मरंध्र अवस्थित ध्रुव संस्थान ही है। पृथ्वी पर अन्य ग्रहों का प्रचुर अनुदान आता है तथा उसकी विशेषताएँ अन्यत्र चली जाती हैं। यह आदान-प्रदान का कार्य ध्रुव केंद्रों द्वारा संपन्न होता है। शरीर के दो ध्रुव हैं—एक मस्तिष्क, दूसरा जनन गह्वर। चेतनात्मक विकिरण मस्तिष्क से और शक्तिपरक ऊर्जा प्रवाह जनन गह्वर से संबंधित है। सूक्ष्म

आदान-प्रदान की अति महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया इन्हीं केंद्रों के माध्यम से संचालित होती है।

शारीरिक और मानसिक स्थिति के अनुरूप तेजोवलय की स्थिरता बनती है। यदि स्थिति बदलने लगे, तो प्रकाश पुंज की स्थिति भी बदल जाएगी। इतना ही नहीं, समय-समय पर मनुष्य के बदलते हुए स्वभाव तथा चिंतन स्तर के अनुरूप उसमें सामाजिक परिवर्तन होते रहते हैं। सूक्ष्मदर्शी उसकी भिन्नताओं को रंग बदलते हुए परिवर्तनों के रूप में देख सकते हैं। शांति और सज्जनता की मनःस्थिति हलके नीले रंग में देखी जाएगी। विनोदी, कामुक, सत्तावान्, वैभवशाली, विशुद्ध व्यवहार कुशल स्तर की मनोभूमि पीले रंग की होती है। क्रोधी, अहंकारी, क्रूर, निष्ठुर, स्वार्थी, हठी और मूर्ख मनुष्य लाल वर्ण के तेजोवलय से घिरे रहते हैं, हरा रंग सृजनात्मक एवं कलात्मक प्रवृत्ति का द्योतक है। गहरा बैंगनी चंचलता और अस्थिर मति का प्रतीक है। धार्मिक, ईश्वर भक्त और सदाचारी व्यक्तियों की आभा केसरिया रंग की होती है। इसी प्रकार विभिन्न रंगों का मिश्रण मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव के परिवर्तनों के अनुसार बदलता रहता है। यह तेजोवलय सदा स्थिर नहीं रहता। यह रंग स्वतंत्र रूप से कुछ नहीं हैं, वरन् मनोभूमि में होने वाले परिवर्तन, शरीर से निःसृत होते रहने वाले ऊर्जा कंपनों की घटती-बढ़ती संख्या के आधार पर आँखों को अनुभव होते हैं। वैज्ञानिक उन्हें "फ्रीक्वेन्सी ऑफ दी वेव्स" कहते हैं।

दिव्य दर्शन (क्लेयर वाइन्स), दिव्य अनुभव (माइकोमैक्ट्री), प्रभाव प्रेषण (टेलिपैथी), संकल्प प्रयोग (सजैशन) जैसे प्रयोग थोड़ी आत्मशक्ति विकसित होते ही आसानी से किए जा सकते हैं। इन विद्याओं पर पिछले दिनों से काफी शोध कार्य होता चला आ रहा है और उन प्रयासों के फलस्वरूप उपयोगी निष्कर्ष सामने आए हैं। परामनोविज्ञान, अतींद्रिय विज्ञान, मैटाफिजिक्स जैसी चेतनात्मक विद्यायें भी अब रेडियो विज्ञान तथा इलेक्ट्रॉनिक्स की ही तरह विकसित हो रही हैं। अचेतन मन की सामर्थ्य के संबंध में

जैसे-जैसे रहस्यमय जानकारियों के पर्त खुलते हैं, वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता जाता है कि—नर-पशु लगने वाला मनुष्य वस्तुतः असीम और अनंत क्षमताओं का भंडार है। कठिनाई उतनी भर है कि, उसकी अधिकांश विभूतियाँ प्रसुप्त और अविज्ञात-स्थिति में पड़ी हैं।

प्रकाश रश्मियों की लंबाई एक इंच के सोलह से तीस लाखवें हिस्से के बराबर होती है। रेडियो पर सुनी जाने वाली ध्वनि तरंगों की गति एक सेकंड में एक लाख छियासी हजार मील की होती है। वे एक सेकंड में सारी धरती की सात परिक्रमा कर लेती हैं। शब्द और प्रकाश की तरंगों का आकार एवं प्रवाह इतना सूक्ष्म एवं गतिशील है कि, उन्हें बिना सूक्ष्म यंत्रों की सहायता से हमारी इंद्रियाँ अनुभव नहीं कर सकती हैं।

डॉ० जे० सी० ट्रस्ट ने 'अणु और आत्मा' ग्रंथ में स्वीकार किया है कि, मानव अणुओं की प्रकाश-वाष्प न केवल मनुष्यों में वरन् अन्य जीवधारियों, वृक्ष, वनस्पति, औषधि आदि में भी होती है। यह प्रकाश अणु ही जीवधारी के यथार्थ शरीरों का निर्माण करते हैं। खनिज पदार्थों से बना मनुष्य या जीवों का शरीर तो तभी तक स्थिर रहता है, जब तक यह प्रकाश अणु शरीर में रहते हैं। इन प्रकाश अणुओं के हटते ही स्थूल शरीर बेकार हो जाता है, फिर उसे जलाते या गाड़ते ही बनता है। खुला छोड़ देने पर तो उसकी सड़ांध से उसके पास एक क्षण भी ठहरना कठिन हो जाता है।

स्वभाव, संस्कार, इच्छाएँ, क्रिया-शक्ति—यह सब इन प्रकाश अणुओं का ही खेल है। हम सब जानते हैं कि, प्रकाश का एक अणु (फोटॉन) भी कई रंगों के अणुओं से मिलकर बना होता है। मनुष्य शरीर का प्रकाश भी कई रंगों से बना होता है। डॉ० जे० सी० ट्रस्ट ने अनेक रोगियों, अपराधियों तथा सामान्य व श्रेष्ठ व्यक्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण करके बताया है कि—जो मनुष्य जितना श्रेष्ठ और अच्छे गुणों वाला होता है, उसके मानव-अणु दिव्य तेज और आभा वाले होते हैं, जबकि अपराधी और रोगी व्यक्तियों के प्रकाश-अणु

क्षीण और अंधकारपूर्ण होते हैं। उन्होंने बहुत से मनुष्यों के काले धब्बों को अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर उनके रोगी या अपराधी होने की बात को बताकर लोगों को स्वीकर करा दिया था कि, सचमुच रोग और अपराधी वृत्तियाँ काले रंग के अणुओं की उपस्थिति का प्रतिफल होते हैं, मनुष्य अपने स्वभाव में चाहते हुए भी तब तक परिवर्तन नहीं कर सकता, जब तक यह दूषित प्रकाश अणु अपने अंदर विद्यमान बने रहते हैं।

यही नहीं, जन्म-जन्मांतरों तक खराब प्रकाश अणुओं की यह उपस्थिति मनुष्य से बलात् दुष्कर्म कराती रहती है, इस तरह मनुष्य पतन के खड्डे में बार-बार गिरता और अपनी आत्मा को दुःखी बनाता रहता है। जब तक यह अणु नहीं बदलते, न निष्क्रिय होते—तब तक मनुष्य किसी भी परिस्थिति में अपनी दशा नहीं सुधार पाता।

यदि अपने प्रकाश अणुओं में तीव्रता है, तो उससे दूसरों को आकस्मिक सहायता दी जा सकती है। रोग दूर किए जा सकते हैं। खराब विचार वालों को कुछ देर के लिए अच्छे संत स्वभाव में बदला जा सकता है। महर्षि नारद के संपर्क में आते ही डाकू वाल्मीकि के प्रकाश अणुओं में तीव्र झटका लगा और वह अपने आपको परिवर्तित कर डालने को विवश हुआ। भगवान् बुद्ध के इन प्रकाश अणुओं से निकलने वाली विद्युत्-विस्तार की सीमा में आते ही डाकू अंगुलिमाल की विचारधाराएँ पलट गई थीं। ऋषियों के आश्रमों में गाय और शेर एक घाट में पानी पीते थे, वह इन प्रकाश-अणुओं की ही तीव्रता के कारण होता था। उस वातावरण से निकलते ही व्यक्तिगत प्रकाश अणु फिर बलवान् हो उठने से लोग पुनः दुष्कर्म करने लगते हैं, इसलिए किसी को आत्म-शक्ति या अपना प्राण देने को अपेक्षा भारतीय आचार्यों ने एक पद्धति का प्रसार किया था, जिसमें इन प्रकाश-अणुओं का विकास कोई भी व्यक्ति इच्छानुसार कर सकता था। देव उपासना उसी का नाम है।

उपासना एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें हम अपने भीतर के काले, मटमैले और पापाचरण को प्रोत्साहन देने वाले प्रकाश-अणुओं को दिव्य-तेजस्वी, सदाचरण और शांति एवं प्रसन्नता की वृत्ति प्रदान करने वाले मानव-अणुओं में परिवर्तित करते हैं। विकास की इस प्रक्रिया में किसी नैसर्गिक तत्त्व, पिंड या ग्रह-नक्षत्र की साझेदारी होती है—उदाहरण के लिए जब हम गायत्री की उपासना करते हैं, तो हमारे भीतर के दूषित प्रकाश-अणुओं को हटाने और उसके स्थान पर दिव्य प्रकाश अणु भर देने का माध्यम 'गायत्री' का देवता अर्थात् सूर्य होता है।

वर्ण रचना और प्रकाश की दृष्टि से यह मानव-अणु भिन्न-भिन्न स्वभाव के होते हैं। मनुष्य का जो कुछ भी स्वभाव आज दिखाई देता है, वह इन्हीं अणुओं की उपस्थिति के कारण होता है, यदि इस विज्ञान को समझा जा सके, तो न केवल अपना जीवन शुद्ध, सात्त्विक, सफल, रोगमुक्त बनाया जा सकता है, वरन् औरों को भी प्रभावित और इन लाभों से लाभान्वित किया जा सकता है। परलोक और सद्‌गति के आधार भी यह प्रकाश अणु या मानव अणु ही है।

भारतीयों योगियों ने ब्रह्मरंध्र की स्थिति और जिन षटचक्रों की खोज की है, सहस्रार कमल उनसे बिल्कुल अलग सर्वप्रभुता संपन्न है। यह स्थान कनपटियों से दो इंच अंदर भृकुटि से लगभग ढाई या तीन इंच अंदर छोटे से पोले में प्रकाश पुंज के रूप में है। तत्त्वदर्शियों के अनुसार—यह स्थान उलटे छाते या कटोरे के समान १७ प्रधान प्रकाश तत्त्वों से बना होता है, देखने में मर्करी लाइट के समान दिखाई देता है। छांदोग्य उपनिषद् ने सहस्रार दर्शन की सिद्धि पाँच शब्दों में इस तरह प्रतिपादित की—'तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारी भवति, अर्थात् सहस्रार प्राप्त कर लेने वाला योगी संपूर्ण भौतिक विज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। यही वह शक्ति केंद्र है। जहाँ से मस्तिष्क शरीर का नियंत्रण करता है और विश्व में जो कुछ भी मानवकृत विलक्षण विज्ञान दिखाई देता है, उसका संपादन करता है।

आत्मा या चेतना जिन अणुओं से अपने को अभिव्यक्त करती है, वह यह प्रकाश अणु ही है, जबकि आत्मा स्वयं उससे भिन्न है। प्रकाश अणुओं को प्राण विधायक शक्ति, अग्नि, तेजस् कहना चाहिए। वह जितने शुद्ध, दिव्य और तेजस्वी होंगे, व्यक्ति उतना ही महान्, तेजस्वी, यशस्वी, वीर, साहसी और कलाकार होगा। महापुरुषों के तेजोवलय उसी बात के प्रतीक हैं, जबकि निकृष्ट कोटि के व्यक्तियों में यह अणु अत्यंत शिथिल, मंद और काले होते हैं। हमें चाहिए कि, हम इन दूषित प्रकाश अणुओं को दिव्य अणुओं में बदले और अपने को भी महापुरुषों की श्रेणी में ले जाने का यत्न करें।

गायत्री उपासमा में सविता देवता का ध्यान करने की प्रक्रिया इसीलिए की जाती है, कि अंतर के कण-कण में सर्वव्याप्त प्रकाश आभा को अधिक दीप्तिमान् बनने का अवसर मिले। अपने ब्रह्मरंध्र में अवस्थित सहस्रांशु आदित्य सहस्रदल कमल को खिलाए और उसकी प्रत्येक पंखुरी में सन्निहित दिव्य कलाओं के उदय का लाभ साधक को मिले।

ब्रह्म विद्या का उद्गाता 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना में इस दिव्य प्रकाश की याचना करता है। इसी की प्रत्येक जाग्रत् आत्मा को आवश्यकता अनुभव होती है। अस्तु गायत्री उपासक अपने जप प्रयोजन में इसी ज्योति को अंतःभूमिका में अवतरण करने के लिये सविता का ध्यान करता है।

❑ ❑

पूर्वाभास—संयोग नहीं तथ्य

समय और परिस्थति विशेष के अनुसार घटने वाली घटनाओं तथा पूर्वानुमानों को कई लोग संयोग मात्र कहकर उन्हें बहुत हल्केपन से लेते हैं। लेकिन पूर्वाभास की घटनाएँ, जिनका उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है—तथ्यों पर आधारित है। इस तरह की घटनाओं को वस्तुतः पूर्व दैवी चेतावनी के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए।

हमारे बाह्य जगत् की अपेक्षा, अंतर्जगत् की शक्ति और सक्रियता अदृश्य होकर भी कहीं अधिक प्रखर और प्रभावपूर्ण होती है। मस्तिष्क में क्या विचार चल रहे होते हैं, वह दिखाई नहीं देता, पर क्रिया-व्यापार की समस्त भूमिका मनोजगत् में ही बनती है। किसी व्यक्ति को किसी के मन की बात का पता चल जाए तो प्रकारांतर से वह भी लाभ ले सकता है। पूर्वाभासों को इसी रूप में लिया जा सके, तो अनिष्टकारी परिस्थितियों से बचना और लाभदायक संभावनाओं की तैयारी करना किसी के लिए भी संभव हो सकता है।

अंतर्जगत् विशाल और विराट् है। उससे एक व्यक्ति ही नहीं—बड़े समुदाय भी प्रेरित होते हैं। पूर्वाभास की ऐसी ही एक घटना यों है—अमेरफान वेल्स का एक छोटा कस्बा है। वर्षाकाल की बात है। समूचे कस्बे के एक अजीब खलबली मची। अधिकांश लोगों को या तो रात्रि के स्वप्नों में या दिन में यों अनायास ही पूर्वाभास होता है कि, उनकी मृत्यु शीघ्र ही हो जाएगी। अमेरफानवासियों की इस बेचैनी ने इस तरह सार्वजनिक चर्चा का रूप ग्रहण किया कि जर्मनी के सुप्रसिद्ध मानस शास्त्री जान मारकर को घटना के अध्ययन के लिए बाध्य होना पड़ा। सर्वेक्षण के मध्य उन्होंने पाया कि, कस्बे के अधिकांश व्यक्तियों को इस तरह का

पूर्वाभास हो रहा है। यही नहीं, लोगों के चेहरे पर भय की रेखाएँ स्पष्ट झलकती थीं।

मुश्किल से एक पखवाड़ा बीता था कि, सचमुच समीप के पहाड़ से एक दिन ज्वालामुखी फटा—कोयले की राख का भयंकर तूफान उमड़ा और उसने देखते-देखते हजारों व्यक्तियों को मौत की नींद सुला दिया। एक स्कूल की दीवार में हुए भयंकर विस्फोट से तो १०० बच्चे एक ही स्थान पर मृत्यु के घाट उतर गये।

इस विद्यालय की एक नौ वर्षीय बालिका तब तो बच गई थी, किंतु घटना के १० दिन बाद वह एकाएक अपनी माँ से बोली, माँ-मैं मृत्यु से बिल्कुल नहीं डरती, क्योंकि मेरे साथ भगवान् रहते हैं। माँ ने समझा, बच्ची पूर्व घटना से भयाक्रांत है, इसलिए उसने उसे हृदय से लगाकर समझाया, नहीं बेटी, अब तो जो होना था—हो गया, अब तू निश्चिंत रह।

जान मारकर ने उस बालिका से भी भेंट की और पूछा—बेटी तुम ऐसा क्यों सोचती हो ? बालिका ने उत्तर दिया—क्योंकि मुझे अपने चारों ओर अंधकार दिखाई देता है। इस भेंट के दूसरे ही दिन मध्याह्न में बच्ची का निधन हो गया। संयोग से उसे जिस स्थान पर दफनाया। वह स्थान कोयले की राख की ५-६ फुट परत से ढका हुआ था। जान मारकर ने इस अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकाला कि, समस्त प्राणि जगत् एक ही चेतना के समुद्र से संबद्ध है। यह संपर्क जितना प्रगाढ़ और निर्मल हो, जानकारियाँ उतनी ही अधिक और लाभ भी वैसा ही लिया जा सकता है। अतएव आध्यात्मिक साधनों द्वारा अंतर्जगत् का क्षेत्र विकसित किया जाना किसी भी भौतिक हित की अपेक्षा अधिक आवश्यक है।

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का आधार अब विज्ञानवेत्ताओं को एक विशिष्ट तत्त्व 'ग्रेविटी' के रूप में हाथ लगा है। यह ग्रेविटी प्रत्येक पिंड से निकलता है और उसकी आकर्षण शक्ति के स्तर की संरचना करता है। इसी के आधार पर एक ग्रह दूसरे को

खींचता है और यह विश्व ब्रह्मांड एक व्यवस्थित संबंध शृंखला से जकड़ा हुआ है।

ग्रह-नक्षत्रों की तरह ही मनुष्य में भी एक विशिष्ट विद्युत् का प्रवाह निःसृत होता है। वह एक-दूसरे को बाँधता है। इस प्रकार समस्त मनुष्य जाति का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे के साथ अनजाने ही बँधा हुआ है और जिन धागों को यह बंधन कार्य करना पड़ता है, वही एक से दूसरे तक उसकी सत्ता का भला-बुरा प्रभाव पहुँचाता है। एक व्यक्ति दूसरे के विचारों से अनायास ही परिचित और प्रभावित होता रहता है। यह आगे की बात है कि, वह प्रभाव कितना भारी-हल्का था और उसे किस कदर, किसने स्वीकार या अस्वीकार किया।

आइंस्टीन 'समग्र ज्ञान' को सामान्य ज्ञान की परिधि से आगे की बात मानते थे। वे कहते थे—जिज्ञासा, प्रशिक्षण, चिंतन एवं अनुभव के आधार पर जो जाना जाता है उतना ही 'ज्ञान' नहीं है, वरन् चेतना का एक विलक्षण स्तर भी है, जिसे अंतर्ज्ञान कहा जा सकता है। संसार के महान् आविष्कार इस अंतर्ज्ञान-प्रज्ञा के सहारे ही मस्तिष्क पर उतरे हैं। जिन बातों का कोई आधार न था—उनकी सूझ अचानक कहाँ से उतरी ? इसका उत्तर सहज ही नहीं दिया जा सकता, क्योंकि उसका कोई संगत एवं व्यवस्थित कारण नहीं है। रहस्यमय अनुभूतियाँ जिस प्रज्ञा से प्रादुर्भूत होती हैं, उन्हें अतिमानवीय मानना पड़ेगा।

इस तरह के अतींद्रिय प्रत्यक्ष बोध जब कसौटी पर सत्य पाए गए तब वैज्ञानिकों को भी उसके सत्य तक पहुँचने की जिज्ञासा जाग्रत् हुई। इस समय इंग्लैंड, अमेरिका, जर्मनी, रूस चैकोस्लोवाकिया, नीदरलैंड आदि अनेक प्रमुख देशों में "परामनोविज्ञान" की शाखाओं का तेजी से विकास हो रहा है, जो इस तरह की घटनाओं से विस्तृत अध्ययन और विवेचन द्वारा वस्तु स्थिति तक पहुँचने का प्रयास करती हैं। अतींद्रिय बोध या पूर्वाभास को तीन खंडों में विभक्त करते हुए रूसी परामनोवैज्ञानिकों की

मान्यता है कि, मनुष्य के "मन" में कुछ ऐसे तत्त्व विद्यमान हैं, जिनकी जानकारी विज्ञान को तो नहीं, किंतु यदि उनका विकास और नियंत्रण किया जा सके तो यह एक नितांत सामान्य वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में सामने आ सकता है। उनके अनुसार यह इंद्रियों की क्षमता-विस्तार का एक अति प्रारंभिक चमत्कार है। मनीषियों का मत भी यही है कि, मन की सामर्थ्य अनंत और अपार है, उसे जितना अधिक पैना, केंद्रित और सूक्ष्मग्राही बनाया जायेगा, वह उतना ही अधिक विलक्षण और चमत्कारी, ज्ञान-विज्ञान, अनुभूति और क्षमताओं से विभूषित होता चला जायेगा।

पूर्वाभास की तीन कक्षाएँ हैं—(१) परींद्रिय ज्ञान (टेलीपैथी) या किसी जीवित व्यक्ति द्वारा घनीभूत स्मृति, अत्यधिक भावुक होकर हृदय से किसी को पुकारना या संदेश देना। (२) अतींद्रिय ज्ञान (क्लेयर वायेन्स) जिसमें अपनी स्वतः की क्षमताएँ विस्तृत होकर घटना-स्थल से सायुज्य स्थापित करतीं और अपनी अंतःस्थिति के अनुरूप स्थिति का बोध करती हैं। (३) पूर्व संचित ज्ञान—अर्थात् पूर्व जन्मों की स्मृति—जो मस्तिष्क में साइनेप्सेस (मस्तिष्क में भूरे रंग का एक पदार्थ) होता है। उसमें कुछ तरह की विलक्षण आड़ी-टेढ़ी लाइनें आती हैं। जैसे राख के ढेर में किसी कीड़े के रेंग जाने से पड़ जाती है। इन्हें "साइनेप्सस" कहते हैं। इनमें जब मन एक क्षण के लिए एकाकार होता है, तो ग्रामोफोन या टेप-रिकॉर्डर पर सुई घूमने से उत्पन्न ध्वनि की तरह पूर्वाभास या भविष्य ज्ञान जैसा हो सकता है। मानसिक संस्थान की रचना जितनी विलक्षण है, उतनी ही अद्भुत शक्ति और क्षमताओं से वह ओतप्रोत भी है। बिना तार के तार से भी उन्नत प्रकार से यदि इस तरह प्रकृति के अंतराल के रहस्य कभी अनायास ही समझ में आ जाए, तो इस मानसिक संस्थान को प्रौढ़ बनाकर उसे विकसित करके तो और भी महत्त्वपूर्ण लाभ—योगियों जैसी सिद्धियाँ, सामर्थ्य प्राप्त की जा सकती हैं।

पूर्वाभास से मार्गदर्शन

मौंटे कौसिनी के विशप बेनेडिक्ट एक बार गिरजाघर की खिड़की के सहारे खड़े आकाश की ओर देख रहे थे। उन्हें लगा कि, उनकी बहिन श्वेत वस्त्रों में, बादलों में समाती चली जा रही है। यह दृश्य देखते-देखते उनके हृदय की गति तीव्र हो उठी। वे तीन दिन पूर्व ही बहिन स्कोलास्टिका से कन्वेंट में मिलकर आए थे। तब वे पूर्ण स्वस्थ थीं, पर न जाने कैसे उन्हें यह आभास हुआ कि, उनकी बहिन की मृत्यु हो गई। दिन भर विचार आते रहते हैं, पर शरीर संस्थान प्रभावित नहीं होता। इस स्थल पर हृदय का धड़कना विशिष्टता का द्योतक था। सचमुच हुआ भी वैसा ही। जिस क्षण बेनेडिक्ट को यह दिवास्वप्न आ रहा था, ठीक उसी समय उनकी बहिन स्कोलास्टिका अपना इहलोक त्याग रही थी। पीछे पता चला कि, मृत्यु के समय बहिन ने सबसे अधिक अपने भाई बेनेडिक्ट को ही याद किया था। यह घटना इस बात की प्रमाण है कि, भावनाओं की शक्ति और सामर्थ्य भौतिक शक्तियों की अपेक्षा बहुत अधिक है। यदि लोग इंद्रियों के सुखों के छलावे में न आवें, अपितु भावनाओं की सूक्ष्म सत्ता और महत्ता को समझ सकें, तो भौतिक जीवन भी बहुत अधिक सफल और सरल रूप में जिया जा सकता है।

पराविज्ञान की ड्यूक विश्व विद्यालय शाखा ने पूर्वाभास की असंख्य घटनाएँ संकलित की हैं। उसमें एक महिला की अनुभूति बहुत भाव भरे शब्दों में इस प्रकार अंकित है—मेरे पति स्नायविक सन्निपात का, लगभग ५० मील दूर एक कस्बे में इलाज करा रहे थे। उनका प्रतिदिन पत्र आता और उससे स्वास्थ्य की प्रगति का समाचार मिल जाता। एक दिन अनायास ही मेरे मन की बेचैनी बहुत अधिक बढ़ गई। मुझे लगा कि, कोई फोन पर बुला रहा है। सम्मोहित-सी मैं फोन के पास तक गई, पर उन अधिकारी महोदय के भय से फोन न कर सकी, जिनका वह फोन था। मैंने यह बात अपनी पुत्री को भी बताई। दूसरे दिन पति का कोई पत्र नहीं मिला।

तीसरे दिन एक साथ दो पत्र मिले, जिसमें मेरे पति ने अपनी बेचैनी लिखते हुए ठीक उस समय फोन करने की बात लिखी थी—जिस समय मैं फोन करने के लिए अत्यधिक और अनायास भाव विह्वल हो गई थी। दूसरे पत्र में उन्होंने फोन न करने पर दुःख व्यक्त किया था। पत्र समय पर नहीं आया, पर अंतःप्रेरणा किस तरह मन को झकझोर गई, यह रहस्य समझ में नहीं आया।

जीवित आत्माएँ ही नहीं, हमारी अंतरात्मा पवित्र और उत्कृष्ट हो, अंतःकरण की आस्था बलवान् हो और उसकी पुकार को हम संपूर्ण श्रद्धा से सुनने को तैयार हों, तो अंतर्जगत् में निवास करने वाली परमार्थ परायण पितर और देव आत्माओं द्वारा भी आभास—अनुभूतियाँ अर्जित की जा सकती हैं। अमेरिका के इंजन ड्राइवर होरेस एल० सीवर ने तो अपनी इस पूर्वाभास की विलक्षण क्षमता के कारण "किंग ऑफ दि रोड" की सम्मानास्पद उपाधि पाई थी और उसकी गणना सर्वश्रेष्ठ रेल चालकों में की जाती थी। होरेस के जीवन की दो घटनाएँ इतनी विलक्षण थीं, जिन्होंने सैकड़ों अमेरिकियों को अतींद्रिय सत्ता पर विश्वास करने के लिए बाध्य किया। होरेस धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आत्मा के अस्तित्व पर उन्हें आस्था थी। भूत-प्रेतों पर वे पूरी तरह विश्वास करते थे। यही नहीं—उसकी यह मान्यता भी थी कि, घटनाओं से आगाह कराने का पूर्वाभास भी उन्हें कोई अपने साथ रहने वाली अतींद्रिय सत्ता ही कराती है।

उन दिनों होरेस "बिगफोर" ट्रेन के ड्राइवर थे, जो अमेरिका के कैंटकी शहर से चलकर इलिनायस होती हुई शिकागो पहुँचती है। एक दिन उन्हें एक मिलिट्री रेजीमेंट को शिकागो पहुँचाने का कार्य सौंपा गया। गाड़ी ६० मील प्रति घंटा की गति से चल रही थी। एकाएक उन्हें लगा कि—इंजन कक्ष में किसी की आवाज गूँजी—'सावधान ! खतरा है। आगे पुल जला हुआ है।' जबर्दस्त विश्वास के साथ होरेस उठ खड़े हुए और पूरी शक्ति से. गाड़ी रोकने का उपक्रम किया। गाड़ी बीच में ही रुक जाने से परेशान

कमांडर नीचे आए और गाड़ी रोकने का कारण पूछा, तो होरेस ने अपने पूर्वाभास की बात बताई। कमांडर बहुत बिगड़ा और गाड़ी स्टार्ट करने का आदेश दिया, किंतु होरेस ने स्थिति स्पष्ट हुए बिना गाड़ी चलाने से स्पष्ट इनकार कर दिया। पता लगाया तो बात सच निकली। कमांडर ने न केवल क्षमा-याचना की, अपितु हजारों सैनिकों की जीवन रक्षा के लिए होरेस को हार्दिक धन्यवाद दिया। किंतु होरेस कृतज्ञतापूर्वक यही कहते रहे, यह तो उन अज्ञात आत्मा की कृपा है, जो मुझे ऐसा अनुभव कराते रहते हैं।

एक बार तो शिकागो से लौटते समय बड़ी ही विलक्षण घटना घटी। तब एकाएक उन्हें किसी ने कहा—सामने इसी पटरी पर दूसरी गाड़ी आ रही है, गाड़ी को तुरंत पीछे लौटाओ। बड़ी कठिन परीक्षा थी, किंतु अदम्य विश्वास के सहारे पूरी शक्ति और सावधानी से गाड़ी रोक दी और उसकी रफ्तार पीछे को कर दी। गाड़ी में बैठे यात्री चालक की सनक पर झुझँला रहे थे, कि सामने से धड़धड़ाता हुआ इंजन इस गाड़ी पर चढ़ बैठा। एक ही दिशा होने और संभल जाने के फलस्वरूप किसी भी यात्री को चोट नहीं आई, मात्र इंजन को मामूली क्षति पहुँची। पीछे सारे बात ज्ञात होने पर यात्री होरेस के प्रति कृतज्ञता से आविर्भूत हो उठे, साथ ही इस विलक्षण पूर्वाभास पर वे आश्चर्यचकित हुए बिना भी न रह सके।

संत सुकरात को भी इसी तरह पूर्वाभास होता था। पूछने पर वे कहते थे—कोई 'डेमन' उनके कान में सब कुछ बता जाता है। होरेस की स्थिति भी ठीक वैसी ही थी।

ऐसी कितनी ही घटनाएँ देखने में आती हैं, जिनमें लोगों में अनायास ही अद्‌भुत शक्तियाँ विकसित होती देखी गई हैं, जबकि उन्होंने कुछ भी साधना नहीं की है। यह उनके पूर्व जन्मों के प्रयासों का प्रतिफल है। ऐसे कितने ही अतींद्रिय क्षमतासंपन्न विवरण उपलब्ध हैं, जिनमें इस जन्म की कोई विशेष साधनाएँ न होते हुए भी उनके अंदर आश्चर्यजनक विशेषताएँ पाई गईं।

हालैंड की यूट्रेक्ट यूनीवर्सिटी के पैरासाइकोलॉजी विभाग के अध्ययन प्रो० विलियम तेनहाफ ने कितने ही अतींद्रिय शक्ति का दावा करने वाले लोगों की जाँच करने की दृष्टि से उनके साथ भेंट की है। उनके शोध संग्रह में कितनी ही प्रमाणों में सबसे अधिक प्रत्यक्ष उदाहरण यूट्रेक्ट नगर के एक सरल-सौम्य नागरिक जेरार्ड क्रोयसेत का है। यह ५६ वर्षीय व्यक्ति अपने बेटे, पोतों के साथ साधारण आजीविका उपार्जन के घरेलू धंधों में लगा रहता है। दिव्यदर्शन उसका न तो व्यवसाय है और न वह इस क्षेत्र में अपनी कोई शोहरत चाहता है, फिर भी उसमें जो जन्मजात उपलब्धि है, वह लोगों को अचंभे में डाल देती है और कौतूहलों की दृष्टि से कितने ही लोग उसके छोटे से घर पर जा पहुँचते हैं और तरह-तरह की पूछ-ताछ करते हैं।

क्रोयसेत की असाधारण क्षमता की ओर इस संदर्भ में दिलचस्पी रखने वाले कितने ही शोधकर्ता उसके पास पहुँचे हैं। उसने सहज स्वभाव से सबका स्वागत किया है और उस जाँच-पड़ताल में पूरा-पूरा सहयोग दिया है। न केवल हालैंड के वरन् आस्ट्रिया, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्विट्जरलैंड आदि के अतींद्रिय विज्ञान के संबंध में जाँच पड़ताल करने वाले लोग उसके पास पहुँचे हैं। विलियम तेनहाफ ने तो उसके संबंध में क्रमबद्ध खोज की है और उसे सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित भी किया है। उस खोज में कुछ घटनाओं को विशेष महत्त्व दिया गया है।

६ जनवरी सन् १९५७ की बात है। यूट्रेक्ट यूनीवर्सिटी में २५ दिन बाद एक लेक्चर होना था। उसके लिए आगंतुकों की सीटें तो जमा दी गई थीं, पर यह मालूम न था कि, कौन दर्शक आएगा और किस स्थान पर बैठेगा ? प्रो० तेनहाफ ने क्रोयसेत को वह लेक्चर हॉल दिखाया और अन्य प्रोफेसरों की उपस्थिति में यह पूछा कि—क्या आप बता सकते हैं कि, नौ नंबर की सीट पर

३१ जनवरी की मीटिंग में कौन दर्शक बैठेगा ? यह उसके भविष्य ज्ञान संबंधी जानकारी की जाँच के संबंध में पूछा गया था।

क्रोयसेत कुछ देर ध्यान मग्न रहे और फिर बताना शुरू किया कि, दिहेग नगर की रहने वाली एक अधेड़ महिला वहाँ बैठेगी। उसके हाथ की एक उँगली अभी-अभी डिब्बी खोलते समय कट गई है। वह उस पर पट्टी बाँध रही है। यह महिला एक पशु पालक परिवार में जन्मी है। जब वह छोटी थी, तब उसके घर में आग लग गई थी और एक कोठे में बँधे कुछ जानवर जल गये थे ...... आदि।

यह सारा विवरण नोट कर लिया गया। वह बात गुप्त रखी गई। नियत तारीख को सचमुच ही उसी विवरण के अनुरूप एक दर्शक महिला वहाँ जा बैठी और उससे पीछे पूछ-ताछ की गई, तो उसके संबंध में बताई गई बातें सभी सच निकलीं।

क्रोयसेत ने अपराधियों का और चोरियों का पता लगाने में पुलिस की अच्छी मदद की है। एक बार एक बहुमूल्य हीरों का हार चोरी होने की सूचना पुलिस में दर्ज हुई। क्रोयसेत से पूछा गया, तो उसने बताया कि वह हार चोरी नहीं गया। नाली में गिर पड़ा है और बहते-बहते अमुक स्थान पर जा पहुँचा है। लोग दौड़े और बताए हुए ठीक स्थान पर हार प्राप्त कर लिया गया।

नार्वे की मोयराना बस्ती में जा बसे एक डच नागरिक ने क्रोयसेत से टेलीफोन से पूछा उसकी १५ वर्षीय लड़की जोर्ग हाडखेन अचानक लापता हो गई है, क्या आप उसका कुछ पता बता सकते हैं ? क्रोयसेत ने टेलीफोन पर ही उत्तर दिया कि, वह झरने में डूबी है। लाश को अमुक स्थान पर जाकर निकाल लिया जाए। वह आधी डूबी पड़ी है और आधा भाग ऊपर चमक रहा है। ढूँढ़ने पर ठीक उसी स्थान पर लाश प्राप्त कर ली गई।

लंदन के कुख्यात अपराधी जिंजर मार्क को क्रोयसेत की सहायता से पुलिस ने पकड़ा था। ऐसी-ऐसी अनेकों घटनाएँ हैं, जिनमें उसकी अतींद्रिय शक्ति की यथार्थता का समर्थन किया गया

है। उस व्यक्ति को वह क्षमता जन्मजात रूप से प्राप्त है। इसके लिए उसने कोई विशेष साधना आदि नहीं की है। वह भोला व्यक्ति अतींद्रिय शक्ति के सिद्धांतों के बारे में भी अधिक कुछ बता नहीं सकता। केवल जो कुछ वह है, उसे प्रकट करने में बिना संकोच अपने को प्रस्तुत करता रहता है।

अतींद्रिय विज्ञान, एक्स्ट्रासेंसरी, परसेप्शन, द्वितीय दिव्य दृष्टि, सेकेंड साइट, छठी इंद्रियानुभूति, सिक्सथ सेंस के नाम से अति-मानवी चेतना की चर्चा होती रहती है। ऐसे कितने ही मनुष्य देखे जाते हैं, जिनमें इस प्रकार की विलक्षण क्षमताएँ पाई जाती हैं। उनमें अतीत ज्ञान, भविष्य दर्शन, मन: पठन, दूरदर्शन आदि कितनी ही विशेषताएँ ऐसी हैं—जो हर किसी में तो नहीं होतीं, पर किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों में पाई जाती हैं।

❑ ❑

भूत और भविष्य—ज्ञात और ज्ञेय

लंदन में एक ऐसी हत्या हुई, जिसका पता लगाने के लिए पुलिस, सी० आई० डी०, कुत्ते सब नियुक्त किए गए पर अपराधी का कोई पता न चला। अपराधी उसी मुहल्ले का एक संभ्रांत व्यक्ति था। उसके बारे में कोई कल्पना तक भी नहीं कर सकता था कि, वह कभी अपराध कर सकता है।

अंत में प्रसिद्ध भविष्यवक्ता 'क्लेयर वायेंट' की मदद ली गई। क्लेयर वायेंट जो भी भविष्यवाणियाँ करता है, वह अधिकांश सत्य निकलती हैं। वहाँ के बड़े-बड़े व्यापारी, पुलिस और म्युनिसपैलिटी तक उसकी मदद लेते हैं। क्लेयर वायेंट ने अपराधी का पूरा हुलिया और नाम बता दिया। उसके आधार पर अपराधी पकड़ा गया और उसने सारी घटना बड़े रोमांचक ढंग से स्वीकार की। इस घटना से पता चलता है कि, संसार में अतिरिक्त सहजानुभूति (एक्स्ट्रासेंसरी परसेप्शन) मनुष्य-जीवन का एक महान् सत्य है और वह मनोविज्ञान का ही विषय नहीं, वरन् उसे वैज्ञानिक यंत्रों के विकास द्वारा भी उपलब्ध किया जा सकता है।

ऐसी सैकड़ों घटनाएँ होती रहती हैं, जो इस तथ्य के सैद्धांतिक पहलू का समर्थन करती हैं। यह घटनाएँ देखकर यह विश्वास होता है कि, संसार में कोई ऐसी भी सत्ता या तत्त्व है, जहाँ भूत और भविष्य-वर्तमान के दृश्य-पटल की भाँति मिलते हैं। कभी-कभी अनायास दिख जाने वाली घटनाओं की शक्ति को यदि विकसित या नियंत्रित किया जा सके तो सचमुच मनुष्य त्रिकालदर्शी हो सकता है।

१६ अगस्त सन् १९६४ के धर्मयुग के पेज ५० पर दिनकर सोनलकार का एक संस्मरण छपा है। शीर्षक है—'वह स्वप्न और नेहरू अस्थि-विसर्जन दिवस पर बच्चियों की जल-समाधि।' इस

लेख में भी ऐसी ही एक आश्चर्यजनक घटना का वर्णन है, जिसमें कल होने वाली घटना का पूर्वाभास एक साथ कई लोगों को हुआ और उसके बाद वह घटना सचमुच होकर ही रही।

यह घटना इस विश्वास की पुष्टि करती है कि, संसार में एक कोई ऐसा तत्त्व अवश्य है, जिसके अनेक रहस्मय गुणों में सहजानुभूति का गुण भी है। वह तत्त्व भूत-भविष्य सबको जानता है।

तमिल भाषी हिंदी लेखक श्री टी० एस० कन्नन लिखते हैं—"मेरे भाई विजय कुमार विश्व-यात्रा पर गए थे। एक रात मेरे पिताजी ने स्वप्न में देखा, एक जहाज ऊपर उड़ने को है, उसमें विजय कुमार भी है। जहाज जैसे ही उड़ा, उसमें आग लग गई और वह ध्वस्त होकर भूमिसात् हो गया। यह स्वप्न देखने के साथ ही पिताजी के मन में घबराहट बढ़ी और नींद टूट गई। उन्होंने स्वप्न मुझे बताया और बोले—कोई बात अवश्य है। हमने बहुत समझाया कि ऐसे स्वप्न तो आते ही रहते हैं। पर उनकी बेचैनी दूर न हुई। शेष सारी रात प्रार्थना करते रहे—"मेरे विजय कुमार का कोई अहित न हो। हे प्रभु ! उसका ध्यान रखना।"

"दूसरे दिन के समाचार पत्र में एक विमान के दुर्घटना ग्रस्त होने का समाचार छपा था। पर उसमें विजय कुमार रहा हो, ऐसी कोई सूचना नहीं थी। चौथे दिन विजय कुमार का पत्र भी आ गया। हमने पिताजी की हँसी उड़ाई, देखो न, आपका स्वप्न झूठा ही था। पिताजी कुछ न बोले। बात आई गई हो गई।"

"विजय कुमार यात्रा से वापस लौटे। मद्रास हवाई अड्डे पर हम उन्हें लेने गये। उनके आते ही यात्रा की कुशल-मंगल पूछी, तो उन्होंने कहा और सब ठीक रहा, पर एक दिन तो सचमुच मुझे भगवान् ने ही बचाया। हम लोग घर पर आ गए, तब उन्होंने सारी घटना विस्तार से बताई।"

"भाई साहब को टोरेंटो (कनाडा) से न्यूयार्क जाना था। हवाई जहाज बुक हो चुका था। अपने निवास स्थान से वे हवाई

अड्डे के लिए निकले, तब कुल आधा घंटा समय शेष था। उसी बीच एक कनाडियन उन्हें जबर्दस्ती पकड़ ले गया और उन्हें एक होटल में अनिच्छा के बावजूद काफी पिलाई। लगता था, वह जान-बूझकर देर करना चाहता है। किसी तरह जल्दी-जल्दी हवाई अड्डे उसने पहुँचाया तो, पर तब तक जहाज छूट चुका था। विजय कनाडियन पर क्रुद्ध हो रहा था, तभी लोगों ने देखा कि उस जहाज में एकाएक आग लग गई और एक धड़ाके के साथ पृथ्वी पर आ गिरा। उसमें बैठी सभी सवारियाँ जल मरीं। यह घटना सुनकर हम आंश्चर्यचकित सोचते रह गये कि पिताजी के स्वप्न में सचमुच सच्चाई थी। भाई साहब को किसी अज्ञात शक्ति ने ही बचाया।"

स्वप्नों के माध्यम से भविष्य के पूर्वाभास की ये घटनाएँ फ्रायडवादी मनोविज्ञान को जड़मूल से ही निरस्त कर देती हैं, जिसके अनुसार स्वप्नों का कारण केवल अतृप्त यौनाकांक्षा मात्र है। इतना ही नहीं, फ्रायड ने तो मनुष्य की प्रत्येक क्रिया और इच्छा में यौन भावना का आरोपण किया है। उन्हें माँ और बेटे के संबंध में भी यौनेच्छा का ही नर्तन दिखाई दिया। यही नहीं, किसी भी प्रकार के स्वप्नों को उन्होंने यौन भावना का प्रतीक कहा और यह सिद्ध करने की चेष्टा की, कि अतृप्त यौनाकांक्षा किसी भी रूप में—भले ही वह स्वप्न ही हो अपनी पूर्ति कर लेती है। फ्रायड प्रणीत मनोविज्ञान के प्रतिनिधि ग्रंथ 'ए जनरल इंट्रोडक्शन टु साइको एनालिसिस' में उन्होंने ऐसे कई स्वप्नों का विवरण कर अपना सिद्धांत प्रतिपादित करने की खींच-तान की है। एक स्वप्न विवरण इस प्रकार है—"एक स्वप्नद्रष्टा यात्रा करने वाला था और उसका सामान एक गाड़ी में स्टेशन से लाया जा रहा था। उसमें एक-दूसरे पर बहुत से संदूक लदे हुए थे और उनमें दो बड़े काले संदूक थे। उसने दिलासा देते हुए किसी से कहा, "देखो, वे सिर्फ स्टेशन तक जा रहे हैं।"

यह स्वप्न कोई विशेष अर्थ लिए नहीं दिखता, पर फ्रायड ने अपनी उक्त पुस्तक में इस स्वप्न की जो व्याख्या की है, वह द्रष्टव्य है—"दो काले संदूक—दो काली स्त्रियों के प्रतीक हैं।" फ्रायड के अनुयायी ही नहीं, आधुनिक मनोविज्ञान के कई पंडित भी स्वप्नों को अतृप्त वासना की प्रतीकात्मक तृप्ति ही बतलाते हैं।

भारतीय शास्त्र-ग्रंथ स्वप्नों के संबंध में जिस धारणा का प्रतिपादन करते हैं, वह अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति के साथ अतींद्रिय शक्तियों के स्पंदन, स्फुरण को भी पुष्ट करती है। पुराण-ग्रंथों में स्वप्नों को भविष्य दर्शन की भाषा कहकर कई स्थानों पर उनकी विशिष्ट व्याख्या की गई है। इस प्रकार की घटनाओं के कई विवरण भी मिलते हैं, जो स्वप्नों में प्रकट हुई अतींद्रिय चेतना का सिद्धांत पुष्ट करते हैं। भारत ही नहीं, विदेशी इतिहासों में भी इस प्रकार की घटनाओं के विवरण मिलते हैं। ढाई हजार साल पहले मिश्र के राजा फैराओ ने एक अद्‌भुत स्वप्न देखा था, जिसकी व्याख्या करते हुए एक यहूदी बंदी ने सात वर्ष बाद मिश्र में एक भीषण अकाल पड़ने की भविष्यवाणी कर दी। क्लियोपैट्रा के प्रेमी सीजर और हैनरी तृतीय को अपनी हत्या का पुर्वाभास स्वप्न द्वारा ही हो गया था।

इन्हें पुरानी घटनाएँ कह कर गप्प ही माना जाता है। परंतु इसी शताब्दी में स्वप्नों में अतींद्रिय चेतना के अनुभव के सैकड़ों प्रमाण मिले हैं। जिनकी फ्रायडवादी कोई संगति नहीं बिठा पाये हैं। स्वप्नों में होने वाले भविष्य दर्शन के प्रति भारत ही नहीं—विदेशों में भी कई लोग विश्वास करते हैं। कई बार तो सपने इतने आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुए कि, सुनने वालों के साथ-साथ स्वप्न द्रष्टा को भी हत्‌प्रभ रह जाना पड़ा। अमेरिका की प्रसिद्ध रेडराक सोने की खान का पता विनफील्ड स्कॉट स्ट्रेटन को स्वप्न द्वारा ही लगा था। जब वे बेहद आर्थिक तंगी में थे, तो एक रात उन्होंने सपना देखा कि, बैटिल पर्वत के रेडराक क्षेत्र में सोने की खुदाई हो रही है। पहली बार तो स्ट्रेटन ने कोई गौर नहीं किया।

पर बार-बार वह सपना दिखाई देने लगा, तो उन्होंने अपने एक मित्र से चर्चा की। मित्र ने आरंभ में हँसी उड़ाई, पर स्ट्रेटन को उस स्वप्न का इतना विश्वास हो गया था कि, वे जबर्दस्ती अपने मित्र को वहाँ खींचकर ले गए तथा खुदाई करने लगे। कुछ ही गहरा खोदने पर उन्हें एक सोने का टुकड़ा दिखाई दिया। मित्र को अब विश्वास हो गया। उस सोने के टुकड़े को बेचकर दोनों ने वह जमीन खरीद ली और खुदाई द्वारा प्राप्त सोने से अरबपति हो गए।

इसी प्रकार की एक घटना ८ मार्च १९४६ की है। लॉर्ड किल-ब्रेफन तब पढ़ते थे। एक रात उन्होंने सपने में देखा कि, कोई समाचार पत्र पढ़ रहे हैं। समाचार अगले दिन का अर्थात् १० मार्च का था। रह-रह कर उन्हें इस अंक में दो घोड़ों के नाम दिखाई दिये। जो रेस में जीते थे। किल ब्रेफन रेस के न आदी थे और न ही उन्हें इसका शौक था। इस सपने के संबंध में उन्होंने अपने कई मित्रों को बताया, जो रेस में घोड़ों पर दाँव लगाए। मजाक उड़ाते हुए मित्रों ने किलब्रेफन से कहा—"यदि तुम्हें अपने सपनों पर इतना विश्वास है, तो खुद ही बिंदल और जिलादीन दाँव पर क्यों नहीं लगा देते।" ये नाम उन घोड़ों के थे, जो कि उन्होंने रात सपने में देखे थे। न जाने किस शक्ति से प्रेरित होकर किलब्रेफन ने रेस खेली और एक बड़ी रकम जीती, जिसने उनकी आर्थिक स्थिति का ही काया पलट कर दिया।

स्वप्नों के माध्यम से संभावित खतरों का आभास भी हो जाता है। यदि उन्हें समझने की क्षमता हो, तो सचमुच यह संयोग एक वरदान बन सकता है। लिंकन की हत्या का सपना उनकी पत्नी ने एक दिन पहले ही देखा था। इसी प्रकार फ्रांस के एक प्रोफेसर चार्ल्स लंदन में अपने मित्र के यहाँ कुछ दिनों के लिए ठहरे। एक रात उन्होंने स्वप्न देखा कि, एक व्यक्ति ने लंबे चाकू से शयन कक्ष में उनके मित्र की हत्या कर दी है। स्वप्न इतना स्पष्ट—प्रभावशाली था कि, उन्हें स्वप्न के हत्यारे का हुलिया भी हू-बहू याद रहा। सुबह चार्ल्स ने अपने मित्र को इस स्वप्न के

संबंध में बताया और उस व्यक्ति का हुलिया भी। हुलिया मित्र के माली से एकदम मिलता था, जो दस वर्ष से उनके यहाँ नौकरी कर रहा था। चार्ल्स ने माली को निकाल देने की सिफारिश की। उस समय तो उसे नहीं हटाया। पर चार्ल्स जब विदा हुए तो उसे हटाना पड़ा क्योंकि एक रात सचमुच उसने अपने मालिक पर शयन कक्ष में उसी प्रकार हमला बोल दिया था, जिस प्रकार का स्वप्न कि चार्ल्स ने देखा था।

अपने प्रिय परिजनों के लिए ही नहीं, स्वयं के लिए भी संभावित खतरों का आभास स्वप्नों के माध्यम से मिलता देखा गया है। फरवरी १९५३ में एक रात कार्लीमेपल्स ने सपना देखा कि, वह अगले दिन किसी दुर्घटना का शिकार हो गया है। इन सब बातों को ढकोसला मानने के कारण उसने कोई ध्यान नहीं दिया, पर सचमुच अगले दिन वह मोटर साइकिल समेत सड़क की एक रपट पर फिसल गया, इस दुर्घटना में उसे प्राणांतक चोटें आईं।

ब्रिटेन की एक महिला ट्रटिन ने बार-बार यह सपना देखा कि, कोई अजनबी उसके घर में घुस आया है और चीजों को उलट-पलट रहा है। ट्रटिन के सामने पड़ जाने पर उसे डरा-धमका कर अजनबी एक मोटी रकम माँगता है। जिसे वह देने से इनकार करती है। इस पर अजनबी उसे गोली मार देता है। कई रात तक यह सपना देखने के बाद उसे न जाने क्यों सपने की सच्चाई पर विश्वास हो गया और पुलिस से मदद माँगी। सपने के आधार पर पुलिस सहायता देने को तैयार नहीं हुई, तो ट्रटिन ने अपनी निजी व्यवस्थायें कर लीं और संभावित खतरे का मुकाबला करने की पूर्ण तैयारियाँ भी। एक दिन जब वह अपने मकान में अकेली थी, पास वाले कमरे में किसी के चलने-फिरने की आहट सुनाई दी। चुपके से ट्रटिन ने झाँका, आगंतुक अजनबी था और कुछ तलाश कर रहा था। उसका हुलिया भी सपने में दिखाई देने वाले अजनबी की तरह का था, बस ट्रटिन ने हल्ला-गुल्ला मचाकर पड़ोसियों को

इकट्ठा कर लिया और उस अजनबी को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। सचमुच ही उसके पास एक रिवाल्वर भी मिला।

किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों के संबंध में भी स्वप्नों द्वारा पूर्व संकेत मिलने के उदाहरण सामने आए हैं। जिन व्यक्तियों के प्रति हम अपने हृदय में आंतरिक सम्मान रखते हैं, उनसे एक सूक्ष्म आत्मिक संबंध भी बन जाता है, भले ही उनके लिए हम अपरिचित हो। इंग्लैंड के एक सामान्य नागरिक जॉन विलियम्स को तत्कालीन वित्तमंत्री पर्सीवल के प्रति इसी स्तर की आत्मिक घनिष्ठता थी। एक बार जौन ने स्वप्न में देखा कि, पार्लियामेंट में कुछ लोग पर्सीवल की हत्या कर रहे हैं। यह भी कि पर्सीवल सफेद ड्रेस में है और उनकी हत्या करने वालों का हुलिया भी अच्छी तरह दिखाई देता है।

इस सपने का उल्लेख जॉन ने पार्लियामेंट के कुछ सदस्यों से किया। सुरक्षा अधिकारियों को इस संबंध में बताया, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। लेकिन कुछ ही दिनों बाद पार्लियामेंट भवन में ही पर्सीवल की हत्या कर दी गई। पर्सीवल ने उस समय सफेद रंग के कपड़े पहन रखे थे। इतना ही नहीं जब हत्यारों को गिरफ्तार किया गया, तो जॉन ने बताया कि—इन्हीं लोगों को वह स्वप्न में हत्या करते देखता रहा है। बाद में जॉन को स्वप्न के आधार पर हत्या का गवाह भी बनाया गया।

यह जानकर तो और आश्चर्य होता है कि, स्वप्नों के आधार पर अपराधियों की धर-पकड़ भी की गई है। रोम में की गई एक हत्या का सुराग मृतक की पत्नी द्वारा देखे गए सपने के आधार पर मिला। बताया जाता है कि मृतक की पत्नी एमीलिया ने ही सर्वप्रथम पुलिस को यह सूचना दी कि, उसके पति की हत्या की गई है, जबकि उसके पति रूसो का शव एक दुर्घटनाग्रस्त क्षत-विक्षत कार में पाया गया था। जिसके संबंध में यह मान लिया गया था कि, रूसो की मृत्यु कार दुर्घटना के कारण हुई है। जब पोस्टमार्टम हुआ, तब पता चला कि—मृत्यु दुर्घटना से पहले ही हो

चुकी है और मृत्यु का कारण दुर्घटना नहीं, एक तीव्र जहर है, जो शराब में मिलाकर पिलाया गया है।

एमीलिया ने स्वप्न में अपने पति का शव देखा था और उस पर बैठी हुई एक स्त्री भी—जिसने हत्या की थी। इस स्त्री के संबंध में एमीलिया तो कुछ भी नहीं जानती थी, पर वह उसके पति को फाँसने वाली एक चालाक औरत थी, जिसने एक लंबी रकम ऐंठने के बाद रूसो की हत्या कर दी थी। लिसा और उसके सहयोगी भारि को गिरफ्तार कर लिया गया, जिन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया। एमीलिया ने लिसा को देखते ही पहचान लिया और कहा कि—यही है वह औरत, जिसे मैंने स्वप्न में अपने पति के शव पर बैठा देखा है। मैं इस रात वाली इसकी कुटिल मुस्कान को तो जिंदगी भर नहीं भूल सकूँगी।

लिसा के सहयोगी भारि ने अपने बयान में एक विस्मयजनक बात कही कि—जब वह और लिसा रूसो की लाश को खोह में छोड़कर बाहर आ रहे थे, तो उन्हें लगा था कि खोह में उन दोनों के अलावा कोई तीसरा व्यक्ति भी मौजूद है। यह अनुभूति बहुत तीव्र थी। मैंने लिसा को बार-बार बताया भी कि—कोई हमारा पीछा कर रहा है। इस घटना में प्रेम संबंधों की प्रगाढ़ता से व्यक्तियों के घनिष्ठ और सूक्ष्म आंतरिक संपर्क-सूत्रों की प्रतीति होती है, जिसे भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व सिद्ध कर दिखाया है।

अब इस प्रश्न का उत्तर आसानी से खोजा जा सकता है कि, स्वप्न क्या केवल यौनेच्छाओं की प्रतीकात्मक तृप्ति का साधन हैं या और भी कुछ ? यह तो ठीक है कि, व्यक्ति अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति स्वप्नों के माध्यम से भी करता है, पर उसमें केवल यौन जीवन का संबंध नहीं है। स्वप्नों के माध्यम से भविष्य के संकेत भी प्राप्त किए जा सकते हैं। इस विद्या में प्राचीन ऋषियों ने काफी प्रगति भी की है।

परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि, सभी स्वप्न अनागत के संकेत या पूर्व सूचक होते हैं। इस संबंध में जानकार व्यक्तियों का

अभिमत है कि, भविष्य की पूर्व सूचना देने वाले स्वप्न बहुत स्पष्ट, श्रृंखलाबद्ध और क्रमागत होते हैं। प्रायः हम सभी स्वप्न भूल जाया करते हैं, कुछेक दो-चार दिन तक याद भी रहते हैं, पर ऐसे स्वप्न पूरे व्यक्तित्व को झकझोर देने वाले, बहुत दिनों तक प्रभावित करने तथा आजीवन अविस्मरणीय रहते हैं।

सपनों के झरोखे से

प्रायः स्वप्नों में अपने-अपने संबंधी-स्वजनों के संबंध में ही पूर्वाभास होते हैं। हर किसी के बारे में सपने आते हैं। इसका कारण संबंधित जनों के प्रति घनिष्ठता का भाव ही कहा जाता है। सामान्य जीवन में भी आत्मिक घनिष्ठता का बहुत महत्त्व और मूल्य है। उसके आधार पर छोटे-बड़े आदान-प्रदानों का क्रम चलता रहता है। परायेपन का भाव आने और स्नेह-सहयोग का आधार झीना रहने पर अन्यमनस्कता बनी रहती है, पर जब घनिष्ठता का संचार होता है—तो व्यक्तियों का न केवल सहयोग ही प्रखर होता है, वरन् आंतरिक एकता भी सघन होती चली जाती है। इसकी प्रतिक्रिया दोनों पक्षों के लिये हितकारक बनती है। व्यावहारिक जीवन में मित्रता के लाभों से सभी परिचित हैं।

सूक्ष्म जीवन में यह घनिष्ठता मरण काल का आभास आत्मीय जनों के सामने अदृश्य सूचना के रूप में जा पहुँचती है। कितने ही प्रसंग ऐसे हैं, जिनमें एक मित्र या संबंधी की मृत्यु होने पर उसकी सूचना द्वारा दूसरे पक्ष को जानकारी मिली है। कई बार तो यह सूचना स्वप्नों के माध्यम से मिलती है और कई बार ऐसे ही चौंका देने वाली विकलता के रूप में उभरती हैं। कई बार ऐसे आभास मिलते हैं कि, मृतक की आत्मा स्वयं अपने मरण की सूचना देने और अंतिम बार मिलने के उद्देश्य से सूक्ष्म शरीर में समीप आई है। ऐसे अनेकों प्रसंग हैं, जिन्हें विश्वस्त एवं प्रामाणिक ही कहा जा सकता है।

स्वप्नों के संबंध में सोचा जाता है कि, किसी पूर्व संभावना का दृश्य प्रत्यक्ष बनकर दीख सकता है, पर जब उस प्रकार की

कोई कल्पना तक न हो—तो उसे क्या कहा जाए ? अति वृद्ध, अशक्त बीमारी से ग्रसित युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुए अथवा ऐसी ही किसी विपन्न स्थिति में पड़े हुए व्यक्ति के संबंध में उसकी मृत्यु संभावना का, कल्पना क्षेत्र का स्थान हो सकता है और उस स्तर के स्वप्न दीख सकते हैं, किंतु जो पूर्ण स्वस्थ एवं भली चंगी स्थिति में हैं, उनके आकस्मिक निधन की संभावना किसकी कल्पना में होगी और कोई, क्यों उस प्रकार के स्वप्न देखेगा ?

आकस्मिक मृत्यु की सूचना बिना किसी संचार साधन के जब स्वप्न संबंधियों को मिलती है, तो उससे आत्मा के अस्तित्व और सूक्ष्म जगत् में घटित होने वाली हलचलों का सूक्ष्म रूप से प्रमाण मिल जाता है। घनिष्ठता स्नेह सूत्र में बँधे हुए लोगों के साथ किसी विशेष उत्तेजना के समय विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। इस तथ्य को हम मृत्यु की अदृश्य सूचनाओं का विश्लेषण करते हुए सहज ही जान सकते हैं। ऐसी घटनाएँ एक नहीं—अनेक हैं और ऐसी हैं—जिन्हें किंवदंती नहीं, प्रामाणिकता की कसौटी पर खरा मानने में कोई अड़चन नहीं पड़ती।

ऐसी अनुभूतियाँ प्रायः स्वप्नावस्था अथवा अर्ध निद्रा की स्थिति में होती है। गहरी नींद को सुषुप्ति कहते हैं। वह उतनी प्रगाढ़ होती है कि, उसमें मस्तिष्कीय तंतु प्रायः पूरी तरह निश्चेष्ट हो जाते हैं। उस स्थिति में कोई स्वप्न नहीं आता। तंद्रावस्था में अंतर्मन सक्रिय रहता है और यदि उसमें सूक्ष्म जगत् से संपर्क बना सकने लायक संवेदना हुई तो रहस्यमय अदृश्य घटना चक्रों को समझने और पकड़ने में समर्थ हो जाता है। कभी-कभी मृत्यु जैसी घटनाएँ अपने आप में इतनी प्रबल होती हैं कि, वे सामान्य स्तर के व्यक्तियों को भी आत्मीयता का सूत्र जुड़ा रहने के कारण प्रभावित करती हैं और उन्हें उस प्रकार की संभावना का स्वप्न में आभास देती हैं।

नेपोलियन जिस दिन मरा, उसी दिन सैकड़ों मील दूर अपनी माँ से मिलने पहुँचा। माँ ने यही समझा कि, वह सहसा मिलने आ

गया है। मृत्यु की तब कोई सूचना मिलने का प्रश्न भी तो नहीं था। नेपोलियन माँ के पास पहुँचकर बोला—"माँ ! अभी ही झंझटों से मुक्त हो पाया हूँ।" अन्य तीन व्यक्तियों ने भी उसे देखा। बाद में पता चला, नेपोलियन की उसी समय मृत्यु हुई थी।

कवि बायरन ने भी ऐसी अनेक अनुभूत घटनाओं का वर्णन किया है। उनमें से एक यह है—

"एक ब्रिटिश कैप्टन किड गहरी नींद में सो रहे थे। सहसा उन्हें लगा—बिस्तर पर कोई भारी बोझ है। आँखें खोली तो देखा, सुदूर वेस्टइंडीज में नौकरी कर रहा भाई बिस्तर पर बैठा है। उसका उस समय वहाँ होना असंभव था। किड ने सोचा—सपना है और आँख मूँद ली। थोड़ी देर बाद फिर देखा—भाई अभी भी वहीं है। तब भाई की ओर हाथ बढ़ाया। उसका कोट पानी से तर था। हड़बड़ा कर वे उठे। कुछ देर में भाई गायब हो गया। बाद में पता चला—उसी समय भाई के पानी में डूब जाने से वेस्टइंडीज में ही मृत्यु हो गई थी।"

फिल्म तारिका ओलिविया एक शाम को कुछ उदास थी। अपने एक मित्र के यहाँ से काम के बाद पैदल ही टहलती घर की ओर चल पड़ी। घर के पास वह पहुँची तो लगा—उसकी बाँह के नीचे कोई हाथ है और साथ का व्यक्ति धीरे-धीरे एक गीत गुनगुना रहा है। वह बेहद थकी थी। स्वर व स्पर्श परिचित था। अतः मान लिया कि, उसका वह मित्र अभी ही बाहर से आया होगा। घर आने पर यह जानकर कि—मैं अमुक जगह काम पर गई हूँ, वहाँ पहुँचा होगा। फिर वहाँ पता चला होगा कि—मैं अभी-अभी पैदल ही घर चल दी हूँ, तो राह में आ पकड़ा है। यह उसकी आदत थी। ओलिविया को स्वाभाविक ही खुशी हुई। वह चलती रही फिर स्वयं भी उसके साथ गुनगुनाने लगी। जब घर के दरवाजे पर पहुँची तो उसने कहा—"गुडनाइट" और जाकर सो गई। सोचा—मित्र भी घर गया।

सुबह नाश्ते के समय अखबार पलट कर देख रही थीं, तो अंदर के पृष्ठ पर एक खबर छपी थी कि ओलिविया का वह मित्र एक दिन पूर्व दोपहर को मार डाला गया है।

कैप्टन फ्रेडरिक प्रथम बर्मा युद्ध में एक जहाज में कमांडर ऑफिसर के नाते ड्यूटी पर थे। एक रात सहसा उन्होंने एक व्यक्ति को अपने केबिन में घुसते देखा। वे सतर्क हो गए और उस पर आक्रमण करना ही चाहते थे कि, चाँदनी के प्रकाश में उन्होंने स्पष्ट पहचाना—उनका भाई। वे चौंक पड़े। भाई और पास आया। बोला—'फ्रेड, मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ—कि मैं मर चुका हूँ।' फ्रेड सभी घटनाओं का ब्यौरा लिख रखते थे। अतः इस घटना का भी समय व विवरण लिख लिया। इंग्लैंड लौटे तो पता चला, उसी घटना वाले दिन, ठीक उसी समय उनके भाई की मृत्यु हुई थी।

क्वीन्स टाउन की श्रीमती काक्स का अनुभव भी दिलचस्प है। जब वे मायके में थीं, उनका भाई जो कि नेवी में अफसर था और हांगकांग में तैनात था, अपने छोटे बच्चे को उन्हीं की देखभाल में छोड़ गया था। एक रात जब वे नित्य की भाँति उस भतीजे को कमरे में सुलाकर अपने कमरे में आई, तो थोड़ी देर बाद वह बालक भाग आया और डरी-डरी आवाज में बताया—आँटी ! मैंने अभी-अभी पिताजी को अपने बिस्तर के पास चलते हुए देखा। श्रीमती काक्स ने समझाया कि, तूने सपना देखा होगा। बच्चा डरा था, अतः अपने कमरे में नहीं गया। कुछ समय बाद श्रीमती काक्स भी लेट गईं। लेटने के थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा, उनके भाई अँगीठी के पास कुर्सी पर बैठे हैं। उनके चेहरे पर पीलापन है। वे चौंक पड़ी। बाद में वह छाया गायब हो गई। कुछ दिनों बाद पता चला कि, उक्त घटना के कुछ घंटों पहले श्रीमती काक्स के भाई की हाँगकांग में आकस्मिक मृत्यु हो गई थी।

रूसी बैले नर्तक श्री सर्जेक्रेस की १९१६ में एक ड्रामे हेतु रिहर्सल करके लौटे और भोजन के पश्चात् थकान दूर करने बिस्तर पर लेट गये। रात के पहले चरण में ही सर्जे ने स्वप्न देखा

कि, वृक्ष के नीचे क्रिसमस त्यौहार मनाया जा रहा है। वहाँ एक नाटक मंच सजा है—जिस पर 'इन्फांटा' संगीत नाटिका दिखाई जाने वाली है। अचानक पेड़ पर से एक जलती हुई मोमबत्ती मंच पर गिरी और प्रोड्यूसर एडाल्फवाम मंच के पीछे भागते नजर आए और उस स्थान पर सुंदर सफेद फूलों का ढेर लगा हुआ है। इतना देखकर सर्जे की नींद• भंग हो गई। सचमुच ही वह आयोजन जिसके लिए सर्जे रिहर्सल करके लौटे थे, क्रिसमस के दो दिन पूर्व ही हुआ और तैयारी के बीच में ही सूचना मिली कि, संचालक मौत का शिकार हो गया। सर्जे ने अपनी आँखों से पुनः स्वप्न वाले सफेद फूल मृतात्मा की श्रद्धांजलि के रूप में देखे।

अर्थों का सामंजस्य न बिठाये जा सकने वाला एक स्वप्न २७ नवंबर १६१७ को अमेरिका के डॉ० वाल्टर फ्रैंकलिन प्रिंस को आया। उसने देखा, स्वप्न में एक महिला ने आकर उनके हाथ में एक पर्चा दिया, जिसमें लिखा था—"पत्र वाहिका को सजाए मौत दी जाए।" लाल स्याही से लिखी इस बात को पढ़कर उन्होंने उस महिला को बड़े ध्यान से निहारा, इसी बीच उसी महिला ने उनका हाथ पकड़कर जोर से दबा दिया। प्रिंस को ऐसा अनुभव हुआ कि, महिला ने उनके दूसरे हाथ की अँगुलियाँ दाँतों से चबा डालीं और ऐसा करते ही उस महिला का सिर धड़ से अलग होकर गिर गया। यह स्वप्न प्रिंस के मन-मस्तिष्क पर हावी रहा। उन्होंने यह स्वप्न अमेरिकी परामनोविज्ञान शोध समिति की सदस्या किसटवी को सुनाया, तो उन्होंने भी नोट भर कर लिया और अधिक कर भी क्या सकती थीं ? वह सुबह के समाचार-पत्र में एक २७ वर्षीया महिला द्वारा रेल की पटरी पर लेटकर आत्महत्या करने का समाचार देखा उसका हैंड बैग उसका नाम 'सारा-हैंड' बता रहा था। डॉ० प्रिंस ने शव देखा—तो स्वप्न वाली महिला का ही था। तब उन्हें 'हैंड' माने हाथ को दाँत से काटना, सिर धड़ से अलग होना ये सारे संदर्भ जुड़ते नजर आये।

अमेरिका के उच्च सैनिक अधिकारी कर्नल गार्डिनर की पुत्री 'जूलिमा' और जल सेना के तत्कालीन सेक्रेटरी श्री थामस डब्ल्यू० गिलमर की पत्नी 'ऐनी' दोनों ने २७ फरवरी १८४४ को स्वप्न में अपने-अपने पतियों की मृत्यु को देखा तो, दूसरे ही दिन २८ फरवरी को वाशिंगटन में होने वाले राष्ट्रीय उत्सव में जाने से अपने-अपने पतियों को रोका, पर वे गये ही और उत्सव में प्रदर्शन होने वाली दो तोपों के बैरेल में ही गोले फट जाने से उन दोनों की मृत्यु हो गई।

'जुलिमा' सौ मील दूर बैठे अपने पति की स्थिति से अवगत (स्वप्न में) होने का दावा करतीं। एक स्वप्न में उन्होंने अपने नवविवाहित पति प्रेसीडेंट-टेलर का पीला चेहरा देखा—तब वे रिचमांड में थे। स्वप्न में वे हाथ में टाई और कमीज लिए हुए कह उठे—"मेरा सिर थाम लो"। स्वप्न टूटा। घबराई हुई जुलिमा सुबह ही रिचमांड के लिए रवाना हो गई और प्रेसीडेंट टेलर को सकुशल पाया, पर जहाँ वे ठहरे थे, उस होटल में दुर्घटना के कारण एक मृत्यु का ठीक वही दृश्य था।

श्रद्धायुक्त, स्वच्छ, पवित्र मन वाले उपासक आत्मचिंतन करते हुए सार्थक स्वप्न देख मानव कल्याण का हेतु बन सकते हैं।

इंग्लैंड की एक १२ वर्षीय बालिका जेनी को भी सत्यसूचक स्वप्न आते थे। पहले तो उस पर कोई विश्वास न करता। किंतु २६ जनवरी १८६८ के दिन उसके पिता कप्तान स्प्रूइट एक जहाज पर कोयला लादकर विदेश चल दिए। एक रात सहसा बालिका चीख पड़ी। कारण पूछने पर उसने बताया—पिताजी का जहाज डूब गया है, पर उन्हें एक अन्य जहाज ने बचा लिया है। माँ ने डाँटकर जेनी को चुप कर दिया, पर २५ फरवरी को लौटकर स्प्रूइट ने जो कुछ बतलाया—वह जेनी के स्वप्न के अनुसार पूरी तरह घटित हुआ था। सभी विस्मित रह गए।

वर्तमान के घटनाक्रमों का स्वप्न में दिखाई पड़ना इस आधार पर सही समझा जा सकता है कि, सूक्ष्म जगत् में हो रही

हलचलें एक स्थान से दूसरे स्थान तक रेडियो तरंगों की तरह जा सकती हैं और बिना संचार साधनों के भी उनका परिचय मिल सकता है, पर आश्चर्य तब होता है, जब भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का बहुत समय पहले ही आभास मिल जाता है। ऐसे स्वप्नों की भी कमी नहीं—जिनमें मृत्यु अथवा अन्य प्रकार के पूर्व संकेत स्वप्न में मिले हैं और वे सही सिद्ध होकर रहे हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने रात को एक स्वप्न देखा कि, उन्हें रोने की बहुत-सी आवाजें सुनाई पड़ती हैं। वे बिस्तर से उठ कर व्हाइट हाउस के कमरों में चक्कर लगाकर इन रोने की आवाजों का कारण तलाश करते हैं। एक कमरे में वे एक लाश कफन से ढकी हुई देखते हैं और वहीं कुछ सिपाही खड़े पाते हैं। वहाँ बहुत से लोग रो रहे हैं। सपने में ही लिंकन एक सिपाही से पूछते हैं—कौन मरा ? सिपाही कहता है राष्ट्रपति लिंकन की हत्या गोली मारकर कर दी गई है। यह उन्हीं की लाश पड़ी है।

लिंकन ने सपना अपने परिचितों को सुनाया। चार दिन बाद ही वह स्वप्न सच हो गया। जब वे वाशिंगटन के फोर्ड थियेटर में नाटक देख रहे थे, तो एक अभिनेता ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी।

अमेरिका के एक नागरिक एलन बेघन ने एक रात स्वप्न देखा कि, तत्कालीन राष्ट्रपति राबर्ट केनेडी एक भीड़ के साथ किसी पार्टी में जा रहे हैं। रास्ते में विरोधी दल का एक सदस्य उन्हें गोली मार देता है और राष्ट्रपति की मृत्यु हो जाती है।

एलन ने अपना सपना 'स्वप्न अनुसंधान संस्था' के रजिस्टरों में नोट करा दिया और अनुरोध किया कि, वे इस सपने की बात राष्ट्रपति तक पहुँचा दें। इसके एक सप्ताह बाद सचमुच वह सपना सत्य हो गया और राष्ट्रपति गोली से मारे गये।

एक दिन एक आस्थावान् छात्र अपने नास्तिक प्रोफेसर फ्रांज मेमर के पास प्रातःकाल ही पहुँच गया और बोला—सर ! आज बहस करने नहीं, प्रमाण लेकर आया हूँ। जेना विश्वविद्यालय के ये

प्रोफेसर एवं छात्र प्रायः आस्तिकतावाद पर विवाद करते रहते, पर बिना प्रमाण प्रोफेसर महोदय मानने को तैयार नहीं होते। छात्र ने कहना प्रारंभ किया—आज रात मैंने एक स्वप्न देखा है, किंतु आपको बताऊँगा नहीं। मात्र इतना बताता हूँ कि, मेरी मृत्यु शीघ्र ही हो जाएगी। प्रसंग यहीं समाप्त हो गया, घटना घटित होने तक के क्षणों तक के लिए और हफ्ते भर बाद ही सोमवार को वह छात्र बीमार पड़ा और तीसरे दिन तक उसका काम हो ही गया। प्रोफेसर महोदय आतुर मन लिए अंत्येष्टि समाप्त होते ही छात्र के घर पहुँचे और उस दिन छात्र द्वारा मृत्यु के बाद बक्सा खोलकर देखने के लिए दिये संकेतानुसार बक्सा खोलकर उस दिन के स्वप्न का लिखित वृतांत पढ़ा। लिखा था—"तारीख १७ दिन बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पाँच बजे मेरी मृत्यु हो जाएगी मुझे अमुक स्थान पर दफनाया जायेगा। जब मुझे दफनाया जा रहा होगा—तब मेरे माता-पिता आएँगे और मुझे एक बार फिर बाहर रखकर देखेंगे। इसके बाद मुझे दफना दिया जाएगा।" प्रोफेसर महोदय के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। लिखित विवरण के अनुसार ही सारा नाटक आँखों से देखकर अंततोगत्वा उन्हें स्वीकार करना पड़ा उस सत्ता को—जिसे हठवश उपेक्षित किया जाता है।

अबोहर (पंजाब) से छपने वाले पत्र 'दीपक' में ७ अगस्त १९३९ के अंक में एक घटना छपी कि, लुधियाना के पुराना बाजार में एक ब्राह्मण के यहाँ झीवर नौकरी करता और प्रतिदिन पूजन के लिए विल्व-पत्र तोड़ लाता। उसने एक दिन स्वप्न देखा कि, वह बिल्व-पत्र तोड़ने पेड़ पर चढ़ा, तो नीचे खड़ा हुआ भैंसा कह रहा है—कि तुम नीचे उतरे और मैंने तुम्हें मार डाला। यह बात उसने गाँव वालों को सुनाई पर किसी ने उस स्वप्न को महत्त्व नहीं दिया। किंतु सचमुच ही जब वह दूसरे दिन प्रातःकाल विल्व-पत्र तोड़ने पेड़ पर चढ़ा, तो एक क्रोधित भैंसा पेड़ के नीचे आ धमका। उसे देख वह भयभीत हो नीचे गिर पड़ा और मर गया।

एक रात हरफोर्ड के आर्क बिशप की पत्नी ने स्वप्न देखा कि, एक सुअर उनकी डाइनिंग टेबल पर भोजन कर रहा है। प्रातःकाल यह बात बिशप से कही गई तो वे हँसकर रह गए, पर वास्तव में जब पत्नी-पति गिरजा घर से प्रार्थना करके लौटे, तो देखा कि पड़ौसी का पालतू सुअर किसी प्रकार उनके घर में घुस आया है और भोजन की टेबिल पर सवार है। पति-पत्नी के लिए नौकर द्वारा लगाया गया नाश्ता उनके पहुँचने तक सुअर साफ कर चुका था।

एक दुर्घटना की पूर्व सूचना, दुर्घटना तथा दुर्घटना हो जाने के निश्चित समाचार लगातार एक ही स्वप्न के तीन बार आने के रूप में मैनचेस्टर की ही एक स्त्री का अनूठा अनुभव है। तीनों बार स्वप्न में उसने देखा कि, उसकी लड़की की मृत्यु मोटर दुर्घटना से हो गई है और प्रातःकाल सचमुच ही समाचार आ गया कि, उसकी लड़की मोटर दुर्घटना में समाप्त हो गई है। एक ही स्वप्न की तीन बार पुनरावृत्ति के द्वारा पहिले दुर्घटना के भविष्य की रचना, दूसरी बार दुर्घटना एवं तीसरी बार दुर्घटना हो चुकने के समाचार से अवगत कराया गया।

स्वयं डॉ० फ्रायड ने अपनी पुस्तक 'इंटरप्रिटेशन ऑफ ड्रीम' में एक अनूठी घटना से संबंधित स्वप्न के संबंध में लिखा है कि—

"मेरे शहर में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के पुत्र का देहावसान हो गया। रात्रि में अंत्येष्टि संभव न होने से प्रातःकाल करने का निर्णय कर शव के चारों ओर मोमबत्ती जलाकर, एक पहरेदार छोड़ मृतक का पिता अपने कमरे में जा सोया। नींद लगे थोड़ी ही समय हुआ होगा कि—स्वप्न में उनका लड़का उनके सामने खड़ा होकर, कह रहा है कि, मेरी लाश यहीं जल जाने दोगे। यह स्वप्न देखते ही उसकी नींद टूटी और उसने झाँककर देखा, तो लाश वाले कमरे में प्रकाश हो रहा था। वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पहरेदार सो गया है और मोमबत्ती गिर जाने से कफन में आग लगने से लाश ही क्या, यदि विलंब हो जाती तो मकान ही जल जाता।

इस स्वप्न से फ्रायड को यह स्वीकार करना पड़ा कि, स्वप्न जगत् को दृश्य जगत् एवं स्थूल वासनाजन्य कल्पनाओं तक सीमित करना भूल ही होगी। हाँ—अक्षरशः सत्य निकलने वाले स्वप्नों की तह तक हम अवश्य ही नहीं पहुँच पाते।

भूतकाल में हुई घटनाओं के आभास भी कई बार स्वप्नों में मिलते हैं। इस संदर्भ में यह समझा जा सकता है कि, जिस प्रकार मस्तिष्क में भूतकाल की स्मृतियाँ प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती हैं और जब कभी अवसर आता है, तब वे उभरकर सामने आ जाती हैं। इसी प्रकार सूक्ष्म जगत् में भूतकाल की घटना अपना अस्तित्व बनाए विचरण करती रहती होंगी और जब-जहाँ उनका संपर्क बनता होगा, वहाँ स्वप्न अथवा आभास रूप में जिस-तिस को उनका अनुभव हो जाता होगा।

पर मनोविज्ञान की वर्तमान खोजों में इस प्रकार के हजारों प्रमाण बहुत छान-बीन के बाद एकत्रित किए हैं और विशेषज्ञों ने तथ्यों का कारण समझ सकने में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए भी इतना तो स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि, जिन सूत्रों से इन घटनाओं का संकलन पूरी छान-बीन के साथ किया गया है, उनमें अतिशयोक्ति एवं किंवदंतियों का अंश कदाचित् ही कहीं रहा होगा, अन्यथा वे विश्वस्त भी हैं और प्रामाणिक भी।

मैनचेस्टर की घटना है। एक पिता ने अपने दो पुत्रों को एक खंडहर मकान में ले जाकर मार डाला और जलाकर हड्डियाँ गड्ढे में गाड़ दीं और पुलिस मैनचेस्टर के इस दंपत्ति के साथ संवेदना व्यक्त करते हुए लड़कों की खोज करती रही, पर पता न लग सका। एक रात चिंतित माता को स्वप्न आया, जिसमें उसने देखा कि, उसके पति महाशय अपने दोनों लड़कों को साथ लेकर एक खंडहर मकान में घुसे और उनको मौत के घाट उतार दिया। यह निर्मम दृश्य देख माँ का हृदय चीत्कार कर उठा और नींद भंग हो गई। उसने स्वप्न का संदर्भ देते हुए पुलिस में रिपोर्ट की, पर पुलिस बिना प्रमाण मानने को तैयार नहीं हुई। उसने कहा, मैंने उस

जगह स्वप्न में 'चेस्टर सिटी' लिखा देखा था। यदि मुझे चेस्टर सिटी ले जाया जा सके तो मैं उस स्थल को बता सकती हूँ। पुलिस इस आधार पर महिला की मदद के लिए तैयार हो गई और चेस्टर सिटी पहुँचकर महिला ने पहले कभी न देखे उस शहर के गली-कूँचे पार करते हुए उस खंडहर मकान में ले जाकर पुलिस को खड़ा कर दिया, जहाँ शव को जलाने के निशान मिले और गड्ढे में गाड़ी गई हड्डियाँ भी मिलीं।

इन घटनाओं से कुछ ऐसे निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, जो अव्यक्त चेतन सत्ता के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं। अधिक गंभीरता से तो साधना और प्रयोगों द्वारा ही समझा जा सकता है। सामान्य स्वप्नों के माध्यम से भविष्य को परखने की विद्या हमारे यहाँ स्वप्नों के शुभाशुभ निर्णय करने वाले विज्ञान के रूप में भी विकसित हुई है, पर उस संबंध में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि साहित्य और दूसरे सूत्रों द्वारा इस संबंध में जो भी जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं, वे तथ्यों पर आधारित होने की अपेक्षा पेट भरने की विद्या के सिद्धान्त पर ही अधिक आधारित हैं। लेकिन इतना निश्चित है कि, जीवन में विविध दिशाओं से उस अविज्ञात तत्त्व का निमंत्रण मिलता रहता है, जिसे चेतन कहते हैं। वह अपनी उपस्थिति का आभास किन्हीं न किन्हीं रूपों में कराता ही है।

❑ ❑

पूर्वाभास और अतींद्रिय दर्शन के वैज्ञानिक आधार

सामान्यतः वर्तमान में घटित होने वाली घटनाएँ ही उसमें जीवित प्रतीत होती हैं। भूतकाल में जो कुछ घटित हो चुका, वह स्मृतियों में शेष रह जाता है और भविष्य में क्या होने वाला है ? उसका अनुमान अनुभव नहीं होता, क्योंकि वह अनागत है। सत्य और साक्षात् वही लगता है, जो सामने है तथा वर्तमान है। भूतकाल में जो कुछ घटित हुआ—वह सत्य तो है, पर वर्तमान में उसका कोई अस्तित्व नहीं है, इसलिए भूत और भविष्य का सामान्य व्यक्ति के लिए कोई अस्तित्व नहीं है, पर वस्तुतः काल चेतना में ऐसा कोई भेद नहीं है। वहाँ न भूत है, न वर्तमान और न भविष्य। इस प्रकार का कोई विभाजन काल चेतना में है ही नहीं। समग्र काल चेतना अपने आप में एक संपूर्ण इकाई है।

इस तथ्य को अब विज्ञान भी स्वीकार करने लगा है। पहले वैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रकार की मान्यताओं का कैसा उपहास उड़ाया जाता था और इन्हें अवास्तविक-निराधार कहा जाता था। अब वैज्ञानिक भी नये शोध प्रयासों के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर अपनी मान्यताओं में परिवर्तन करने लगे हैं। यह तो पहले भी माना जाता रहा है कि, आवश्यक नहीं कि जो बात एक समय सही मानी जाती है, वही दूसरे समय भी उसी प्रकार मानी जाती रहे। इसी प्रकार यह भी आवश्यक नहीं कि, जिस बात को आज अप्रामाणिक माना जाता है, उसे भविष्य में भी वैसा ही समझा जाए। उदाहरण के लिए, अपने समय के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो ने ब्रह्मांडीय गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत मानने से इनकार किया था। वे पृथ्वी की आकर्षण शक्ति को तो मानते थे, पर यह स्वीकार नहीं करते थे कि, एक ग्रहपिंड की आकर्षण शक्ति दूसरों

को भी प्रभावित करती है और इसी आधार पर एक-दूसरे के साथ बँधे हुए हैं। न्यूटन तक ने ग्रहों के आपस में बँधे रहने वाले गुरुत्वाकर्षण को बहुत पीछे और बड़ी कठिनाई के बाद स्वीकार किया था, पर आज वे विरोध ठंडे पड़ गये और ग्रहों के बीच गुरुत्वाकर्षण की बंधन-श्रृंखला की वास्तविकता स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है।

मात्र एक महत्त्वपूर्ण खोज किस तरह विज्ञान में कई प्रतिष्ठित मान्यताओं को गलत सिद्ध कर देती है, यह सुविदित तथ्य है। हमारा यह विश्व कब अस्तित्व में आया ? इसके बारे में कुछ वर्ष पहले तक खगोलविदों की स्थापना थी कि, इस विश्व की उम्र लगभग १० अरब वर्ष है, पर १९७१-७२ में दूरस्थ ज्योति-पुंजों के प्रकाश को ग्रहण करने वाले यंत्रों द्वारा ऐसा प्रकाश ग्रहण किया गया, जो अपने स्रोत स्थान से २० अरब वर्ष पहले चला था। इससे स्पष्ट हुआ कि, ज्ञेय विश्व कम से कम २० अरब वर्ष पुराना है। इसी से यह भी स्पष्ट है कि, कोई भी नई जानकारी किसी भी क्षण इस मान्यता को लाँघ सकती है। विश्व सचमुच कितना पुराना तथा बड़ा है, यह अज्ञात एवं अनिश्चित है।

इस समय विश्व की उत्पत्ति के बारे में वैज्ञानिकों की मुख्य-मुख्य परिकल्पनाएँ ये हैं—

एक परिकल्पना के अनुसार अरबों वर्ष पूर्व संपूर्ण विश्व का द्रव्य एक पुंजीभूत महापिंड के रूप में था। नाभिकीय कणों का सघन संपीडन किया जाए, तो एक घन सेंटीमीटर स्थान में करोड़ों टन द्रव्य समा सकता है। इसीलिए संपूर्ण विश्व द्रव्य का महापिंड में संपीडन संभव है।

इस महापिंड का विस्फोट हुआ और विस्तार होने लगा। उसी से मंदाकिनियाँ—नीहारिकाएँ बनीं, ग्रह, नक्षत्र बने, यह विस्तार अभी जारी है। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि, दूरस्थ आकाशगंगाएँ हम से लगातार दूर भाग रही हैं। उनमें पृथ्वी से दूर हटने की गति

पृथ्वी से उनकी दूरी के अनुपात में है। इससे स्पष्ट है कि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है।

मंदाकिनियों के लगातार दूर भागने की बात की पुष्टि विख्यात वैज्ञानिक प्रो० फ्रेड हायल के एक परीक्षण से हुई है। सुदूरस्थ आकाशगंगाओं से पृथ्वी तक आने में आकाश-तरंगों का कंपन बढ़ जाता है। दूर से आने वाले प्रकाश का झुकाव, वर्णपट प्राप्त करने पर नीले रंग की ओर होता है और दूर जाने वाले प्रकाश स्रोत के प्रकाश का झुकाव लाल रंग की ओर होता है। आकाशगंगाओं से आने वाली प्रकाश तरंगों के प्रकाश का वर्णपट प्राप्त करने पर, उस वर्णपट का झुकाव लाल रंग की ओर पाया गया। इससे पता चला कि—आकाशगंगाएँ दूर जा रही हैं। माउंट पोलोयर बेधशाला की दूरबीन से भी आकाशगंगाओं के दूर हटने की प्रक्रिया देखी गई। एक सिद्धांत यह है कि—विश्व जैसा अभी है, वैसा ही आरंभ से है। आकाशगंगाएँ दूर भाग रही हैं तो पास भी आ रही होंगी, जो अभी हमें दीखती नहीं। वस्तुतः यह सिद्धांत प्रो० हायल का है, जिसे 'समतुलित अवस्था का सिद्धांत' कहते हैं। प्रो० फ्रेड हायल ने ही सर्वप्रथम यह खोजा था कि, आकाशगंगाएँ पृथ्वी से दूर हट रही हैं। इससे जहाँ कुछ वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि, ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है। लेकिन स्वयं प्रो० हायल का निष्कर्ष यह था कि—पुरानी मंदाकिनियाँ जो दूर भागती दीखती हैं, अस्तित्वहीन होती रहती हैं और मंदाकिनियाँ जन्म लेती रहती हैं। इससे ब्रह्मांड की पिंड संख्या स्थिर रहती है और घनत्व अपरिवर्तित।

टामस गोल्ड, हर्मन वांडो, वेरोजोफ, वेल्मामिनोफ आदि भी इसी सिद्धांत को मानते हैं।

एक मत यह है कि—प्रारंभ में प्लाज्मा रूप में विश्व का समस्त द्रव्य एकत्र था। वह संतुलन की स्थिति थी। धीरे-धीरे असंतुलन का आरंभ हुआ। प्लाज्मा के कणों तथा प्रतिकणों के विस्फोट हुए। इससे फोटॉन—कण निकले। फोटॉन कणों यानी

प्रकाश के कणों से परमाणु बने। समय बीतने पर परमाणु बादल बने, उन्हीं से क्रमशः विविध आकाशीय पिंड अस्तित्व में आए। यह परिकल्पना आल्फवेन तथा क्लाइन की है। इसका आधार कणों तथा प्रतिकणों की खोज है।

कणों तथा प्रतिकणों के ही आधार पर द्रव्य और प्रतिद्रव्य की धारणा परिकल्पित की गई है। गोल्डहारन ने एक परिकल्पना प्रस्तुत की है कि, पुंजीभूत द्रव्य का महापिंड विखंडित होते ही दो विश्वों में बँट गया—एक द्रव्यमय विश्व, दूसरा प्रतिद्रव्यमय विश्व।

गोल्डहारन व अन्य कुछ वैज्ञानिक एक सर्वथा भिन्न प्रति-द्रव्यमय विश्व की परिकल्पना करते हैं, तो कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार—इसी ज्ञेय विश्व में प्रतिद्रव्य वाली आकाशगंगाएँ अस्तित्व में हैं, किंतु हमें उनका ज्ञान अभी संभव नहीं, क्योंकि हम तो मात्र आकाशीय पिंडों से उत्सर्जित विकिरण द्वारा ही उन पिंडों के बारे में जान पाते हैं और द्रव्य तथा प्रतिद्रव्य का विकिरण एक जैसा ही होता है, इसलिए हम उसे अलग से पहचानने में असमर्थ हैं।

विज्ञा फेनयन माँ के अनुसार—ब्रह्मांडव्यापी प्रतिपदार्थ के अति सूक्ष्म घटक—पाजिट्रॉन—काल से पीछे की ओर भी चलते हैं और उनका प्रवाह भविष्य की ओर न होकर भूतकाल की ओर लौटता है। ठीक इसी प्रकर अंतरिक्षवेत्ता फ्रेड हायल का कथन है कि, समय आमतौर पर भूतकाल की ओर गतिशील हो सकता है।

अंतरिक्ष विज्ञान के शोधकर्ता इस तथ्य का समर्थन कर रहे हैं कि, अपने सौरमंडल में तो नहीं, पर अनंत आकाश में ऐसे कितने ही ग्रह हैं, जो पदार्थ से नहीं 'प्रतिपदार्थ' से बने है। वहाँ भरे हुए परमाणुओं को 'टेकयॉन' नाम दिया गया है। उनकी चाल प्रकाश से भी तीव्र तथा गति भविष्य की ओर न होकर भूतकाल की ओर चल रही है।

साधारणतया हम वर्तमान को भविष्य के साथ जोड़ते हैं। भविष्य की तैयारी के लिए वर्तमान को नियोजित करते हैं। कल्पनाएँ और योजनाएँ भविष्य निर्धारण के लिए जुटी रहती हैं।

आकांक्षाओं की पूर्ति आगे चलकर होने की ही बात सोची जाती है और उसी पर विश्वास किया जाता है। अपनी परिस्थितियों में यही संभव भी है। जल की धारा जिस दिशा में बह रही हो, हवा जिस ओर उड़ रही हो—उसी में प्रगति की उपलब्धियों की आशा करना सहज स्वाभाविक है। भूतकाल से तो इतना ही लाभ लिया जाता है कि, उसके आधार पर संग्रह किए गए अनुभवों से लाभ उठाया जाए और भावी गतिविधियों के निर्धारण में उनका ध्यान रखा जाए। मीठी-कड़वी स्मृतियाँ संजोये रहकर उनके दृश्य चित्रों से अठखेलियाँ करते रहने के अतिरिक्त और कोई बड़ा प्रयोजन उनके द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता।

किंतु तथ्य इससे भिन्न भी है। समय की गति पीछे की दिशा में लौट सकने की बात आज तो ठीक से समझ में भी नही आती और उस पर विश्वास करने को भी जी नहीं करता, इतने पर भी तथ्य तो अपने स्थान पर बने रहेंगे। अन्य प्राणी वर्तमान तक ही सीमित रहते हैं। उनकी भविष्य कल्पना आज का आधार पाने के संबंध में कुछ अनुमान भर लगा सकती है। वे हमारी तरह भविष्य कल्पना नहीं कर सकते। ठीक इसी प्रकार हम भी भूतकाल की कुछ अधिक प्रभावोत्पादक घटनाओं की स्मृति तक ही सीमित रहते हैं। यदि भविष्य कल्पना में भूतकाल के अनुभव अपना समुचित योगदान दे सकें तो भविष्य निर्धारण सही भी होगा और सरल भी, किंतु भूत के अनुभवों का लाभ तो हम यत्किंचित् ही उठा पाते हैं।

मोटर और रेलगाड़ी प्रायः आगे की ओर ही चलती है, पर उन्हें पीछे की दिशा में लौटाते हुए भी कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। इसी प्रकार समय का आगे की तरह पीछे लौट सकना भी संभव हो सकता है। आमतौर से नदी में प्रवाह की दिशा में ही तैरा और बहा जाता है, किंतु कुशल तैराक के लिए भी संभव है कि, वह उल्टी दिशा में धारा को चीरता हुआ तैर सके। विज्ञान के तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध किया गया है कि, भूत भी सर्वथा नष्ट नहीं हो जाता। वह मस्तिष्क स्मृति-पटलों की तरह धुँधला भर होता है,

अपना अस्तित्व बनाये ही रहता है। इसी प्रकार भूत गुजर भले ही गया है, पर उसका अस्तित्व इस ब्रह्मांड में अपनी सत्ता अक्षुण्ण रखे हुए है। राम और हनुमान के शरीर अब नहीं रहे, पर उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व अभी भी इस संसार में मौजूद है। यदि कोई मार्ग खोजा जा सके तो हम उल्टी दिशा में तैरने वाले तैराक की तरह उन महामानवों के संपर्क का उसी प्रकार लाभ उठा सकते हैं, जैसा कि उनके सहचर उठाया करते थे।

समय फैलता व सिकुड़ता है

अभी तक तो यह अनुभव में आया है कि—घन पदार्थ ही फैलते व सिकुड़ते हैं, परंतु वैज्ञानिक संवेदनाओं द्वारा अब यह सिद्ध हो चुका है कि, न केवल पदार्थ ही सिकुड़ता है, वरन् समय भी फैलता और सिकुड़ता है।

मालूम तो यही पड़ता है कि, समय बिना किसी की प्रतीक्षा किए अपने ढंग से, अपने क्रम से व्यतीत होता चला जाता है, पर अब इस संबंध में नये सिद्धांत सामने आये हैं कि, गति की तीव्रता होने पर समय की चाल घट जाती है। मौटेतौर से इसका परिचय हम द्रुतगामी वाहनों पर सवारी करके आसानी से देख सकते हैं। एक घंटे में पैदल चलने पर तीन मील का सफर होता है, पर मोटर से ८० मील पार कर लेते हैं। यह समय व्यतीत होने की चाल का घट आना भी कहा जा सकता है।

यह तो मोटा उदाहरण हुआ। वैज्ञानिक अनुसंधान ने समय की गति सिकुड़ने से लेकर उसकी स्थिरता तक को एक तथ्य के रूप में सिद्ध किया है। यद्यपि वैसा कभी प्रत्यक्ष नहीं हो सका, पर वे सभी सिद्धांत प्रामाणिक ठहराये जा चुके, जिनके सहारे समय की गति को शिथिल अथवा अवरुद्ध होने की बात संभव कही जाने लगी है।

आइंस्टीन ने अपनी क्लिष्ट गणनाओं के आधार पर इस संभावना को पूर्णतया विश्वस्त बताया है। वे कहते हैं—गति में वृद्धि होने पर समय की चाल स्वभावतः घट जाएगी। यदि १,८६,००० मील प्रति सेकंड प्रकाश की चाल से चला जा सके, तो समय की गति

इतनी न्यून हो जाएगी कि उसके व्यतीत होने का पता भी न चलेगा। इस चाल के किसी राकेट पर बैठकर सफर किया जाए, तो जिन ग्रह-नक्षत्रों पर घूमकर वापस लौटने पर अपने वर्तमान गणित के हिसाब से एक हजार वर्ष लगेंगे, उस विशिष्ट गणित के हिसाब से एक महीने से भी कम समय लगेगा। ऐसा व्यक्ति पृथ्वी पर लौटेगा तो देखेगा कि वहाँ हजार वर्ष बीत गये और ढेरों पीढ़ियाँ तथा परिस्थितियाँ बदल गईं। इतने पर भी उस लौटे हुए व्यक्ति की आयु में तनिक अंतर दिखाई न पड़ेगा, वह तरुण का तरुण प्रतीत होगा।

पुराणों में ऐसी कथाएँ मिलती हैं, जिनमें समय की सापेक्षता की कल्पना की गई है। भागवत पुराण में वर्णन है कि, पाताल लोक के राजा रेवत अपनी पुत्री रेवती के लिए उपयुक्त वर तलाश न कर सके, तो उस कठिनाई को हल करने के लिए ब्रह्माजी के पास गये। उस समय वहाँ एक संगीत कार्यक्रम चल रहा था। ब्रह्माजी उसी में व्यस्त थे, अस्तु रेवत को प्रतीक्षा में बैठना पड़ा। सभा समाप्त हुई। राजा ने ब्रह्माजी को अपना मनोरथ बताया, तो उन्होंने हँसकर कहा—इतनी देर में तो पृथ्वी में सत्ताईस चतुर्युगी व्यतीत हो गई। जो लड़के तुम्हें पसंद आये थे, वे सब मर-खप गये अब उनके वंश, गोत्रों तक का पता नहीं। इन दिनों नारायण के अंशावतार बलदेव जी विद्यमान हैं, उन्हें, अपनी कन्या दान कर दो।

समय और चेतना से परे

हम देश के यथार्थ को क्यों नहीं समझ पाते ? महान् अणु-विज्ञानी आइंस्टीन अपने सापेक्षवाद सिद्धांत (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) के द्वारा उत्तर देते हैं—"हमारे साधारण विचार, समय और पदार्थमय हो गए हैं, (वी आर वाउंड टु टाइम एंड स्पेस)। हम इनसे मुक्त नहीं हो पा रहे। किंतु हमारा समय और स्थान या पदार्थ से बँध जाना समस्त प्रकृति या विराट् जगत् का दर्शन कराने में असमर्थ है। हम प्रकृति की वास्तविकता को तभी पहचान सकते हैं, जब समय और स्थान (टायम एंड स्पेस) से हम ऊपर उठ जाएँ।"

समय और स्थान क्या है ? यह वास्तव में कुछ भी नहीं है, हमारे मस्तिष्क की कल्पना या रचना मात्र है। लोग कहा करते हैं कि—मैं आठ बजकर आठ मिनट पर घर से निकला। मेरी सगाई २ जुलाई को सायं सात बजे हुई। राम और श्याम में परसों दोपहर १२ बजे लड़ाई हो गई। किशोर ने मई १९५५ में हाईस्कूल की परीक्षा दी आदि-आदि। इन वाक्यों को ध्यान से कई बार पढ़ें तो हमें मालूम होगा कि, प्रत्येक समय किसी न किसी घटना से जुड़ा हुआ है। समय दरअसल कोई वस्तु ही नहीं है। यदि कोई घटना या क्रिया न हुई होती तो हमारे लिए समय का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। आठ बजकर आठ मिनट, सात बजे, मई सन् २०००, परसों—यह सब घटनाओं की सापेक्षता (रिलेटिविटी) मात्र हैं। जिसे हम २००० कहते हैं, उसे हम संवत् २०५७ भी कह सकते हैं। शक संवत् के हिसाब से वह कोई और ही तिथि होगी, आर्य संवत् प्रणाली के अनुसार वह और ही कुछ होगा, क्योंकि वे लोग समय की माप उस अवस्था से करते हैं, जब से यह पृथ्वी या पृथ्वी में जीवन अस्तित्व में आया। कल्पना करें कि, पृथ्वी का अस्तित्व ही न होता, तब हमारे लिए समय क्या रह जाता—कुछ भी तो नहीं। यदि हम घटनाओं से परे हो पाएँ, तो समय नाम की कोई वस्तु संसार में है नहीं। ऐसी कल्पना तभी हो सकती है, जब हम सारा चिंतन, क्रियाकलाप छोड़कर मस्तिष्क बन जाएँ या मस्तिष्क में केंद्रीभूत हो जाएँ अर्थात् समय मस्तिष्क की रचना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जब हम अपने आपको समय के ऊपर उठकर देखते हैं, तो हमें अपनी मस्तिष्कीय चेतना के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता, तब हमारा सही रूप से एक भिन्न व्यक्तित्व होता है। तब हम लगातार विचार, ज्ञान, अनुभूति या प्रकाश की किरण के समान हो जाते हैं और स्थूल शरीर के प्रति अपना मोह भाव समाप्त हो जाता है। मांडूक्यकारिका (२।१४) में इसी बात को शास्त्रकार ने यह शब्द दिये हैं—

चित्ता काला हि येऽन्तस्तु द्वय कालाश्च ये बहिः।
कल्पिता एव ते सर्वे विशेषो नान्यहैतुकः।।

"हे शिष्य ! यह संसार वास्तव में चित्त की अनुभूति और घटनाओं की सापेक्षता मात्र है, सब कुछ कल्पित है। दृश्य संसार में विशेष कुछ भी नहीं है।"

महर्षि पतंजलि ने यही तथ्य इस तरह प्रतिपादित किया है—

क्षणतत्क्रमयोः संयामाद् विवेकजं ज्ञानम्।

—पातंजलि योग दर्शन ३।५२

जब हम अपना ध्यान समय के अत्यंत छोटे टुकड़े क्षण में जमाते हैं तभी संसार की सही स्थिति का निरीक्षण कर सकते हैं।

समय की भाँति ही मनुष्य के सामने आने वाली सभी वस्तुएँ भी सापेक्ष हैं। भौतिक पदार्थ साधारणतया कोई अपरिवर्तनीय (आब्सोल्यूट) मूल्य नहीं रखते, वरन् चुने गये प्रसंग के अनुसार आप जिसे मिट्टी कहते हैं, यदि उसे आप किसी रसायनज्ञ के पास ले जावें तो वह उस ढेले का रासायनिक विश्लेषण (केमिकल एनालिसिस) करेगा और बतायेगा कि, इसमें इतना भाग धातु के कण, इतना नमक है, इतना पानी है और अमुक-अमुक गैसों के समूल कण। इस तरह हमें दिखाई देने वाले सभी भौतिक पदार्थ वैज्ञानिकों की दृष्टि से कार्बनिक (आर्गनिक) या अकार्बनिक (इनार्गेनिक) कण मात्र होते हैं। उन्हीं से यह सारा संसार बना है।

हम जब तक अपने स्थूल रूप से देखते हैं, तब तक संसार की स्थूलता दृष्टिगोचर होती है, लेकिन यहाँ भी किसी प्रकार की सत्यता नहीं है। प्रत्येक परमाणु संसारमय है अर्थात् हर परमाणु की रचना एक भरे-पूरे संसार जैसी है, उसमें पूरे के पूरे संसार के दर्शन कर सकते हैं और उस पर भी मस्तिष्क (सतर्कता) बैठा हुआ होता है। वैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषण करने से पता चलता है कि, परमाणु भी अंतिम सत्य नहीं है, वह और भी सूक्ष्म आवेशों— इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रॉन, पाजिट्रॉन और न्यूट्रॉन से बना होता है। यों समझाने के लिए इन्हें बिंदु के रूप में दिखाया जाता है, किंतु इलेक्ट्रॉन पदार्थ नहीं, तरंग रूप (वेविकल शेप) में है। अर्थात् हम जिन पदार्थों को देख रहे हैं, यदि अपने देखने की स्थूलता हटा दें

और केवल मस्तिष्क से हटा दें, तो वह एक तरंग के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। अर्थात् हम जिस संसार को स्थूल रूप में देख रहे हैं, वह तो हमारा दृष्टि दोष है। क्वांटम सिद्धांत (थ्योरी ऑफ लाइट क्वांटम) के अनुसार, जो वस्तु कण के रूप में है, वह उसी प्रकार से तरंग के रूप में है। साधारण अवस्था में हम उसे ठीक तरंग रूप में नहीं देख पाते। उसका और कोई कारण नहीं, वरन् हमारे मस्तिष्क का पदार्थ से बँधे रहना मात्र होता है।

इस सब जानकारी का उद्देश्य मनुष्य को विभ्रमित या आश्चर्यचकित करने का नहीं, वरन् उसके दृष्टिकोण को चौड़ा करना है, जिससे वह अपने शाश्वत स्वरूप को समझने की चेष्टा कर सकता है। हम अपने आपको कितना ही धोखा दें, कितना ही शरीर, समय और स्थान में बँधे हुए देखकर हमारा विशुद्ध 'अहंभाव' (शाश्वत स्वरूप) तो अपने नियमों से विचलित होने वाला है नहीं। तब फिर हमारे लिए अपने आपको पदार्थों की सीमा में बाँधना कहाँ तक उचित होगा ? कहाँ तक हम अपने मनुष्य-जीवन में आने के लक्ष्य को न पहचानने की भूल करते रहेंगे ?

पदार्थ या स्थान और समय में कोई सत्यता नहीं है। कोई भी निश्चित एक ब्रह्मांड नहीं है, जिसमें कि संसार समा सके। अनेक ब्रह्मांड हैं और वह सब मस्तिष्क में समाये हुए हैं। एक कण प्रकृति का, एक अहंभाव, चेतना या परमेश्वर का—दो ही अनादि तत्त्व हैं। उनका विस्तृत ज्ञान जब तक नहीं, तब तक मनुष्य इस सांसारिक भूल-भूलैया में ही गोते लगाता रहेगा क्योंकि हम जिस सुख-शांति, संतोष और आनंद की खोज में हैं, वह पदार्थ में मस्तिष्क की अपनी अनुभूति है, इसलिए यथार्थ आनंद की प्राप्ति भी स्थान और समय से ऊपर उठकर ही प्राप्त की जा सकती है।

कोई मूलभूत समय भी नहीं है, जिसमें कोई घटना घटित हुई हो। निरीक्षण के अनुभव ही समय की रचना करते हैं और इसी समय से हम ब्रह्मांड को, स्थान को, अपने जीवन को नापते हैं। यदि हम अपने मस्तिष्क को समय से ऊपर उठा दें, तो अपने अमरत्व की अनुभूति ही नहीं—पदार्थ और ब्रह्मांडों के स्वामी बनते

चले जा सकते हैं। हमारा मस्तिष्क अर्थात् हम स्वयं ही—सदैव ही जागरूक रहते हैं। परिवर्तनीय तो यह जड़ या प्राकृतिक परमाणु ही हैं और जब तक हम अपने आप में समाहित नहीं होते, प्रकृति पर न तो नियंत्रण कर सकते हैं और न ही उसका उपयोग।

उपर्युक्त संपूर्ण विवेचन अल्वर्ट आइंस्टीन के सापेक्षवाद (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) की व्याख्या मात्र है। इसे उन्होंने गणित के द्वारा सिद्ध किया है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया कि एक सरल रेखा का सरल या सीधा होना आवश्यक नहीं। संसार अंडाकार है। ब्रह्मांड सीमारहित है, किंतु अनंत नहीं और भी ब्रह्मांड हैं, जिनका ज्ञान पाना मानवीय बुद्धि के लिए संभव नहीं है। प्रकाश-कणों में भार होता है, जबकि भार पदार्थ में ही संभव है शक्ति में नहीं। (स्मरण रहे—प्रकाश पदार्थ नहीं, शक्ति माना गया है।) मस्तिष्क प्रकाश से बना है। इस तरह यह साबित होता है कि, इस संसार में प्रकृति और परमात्मा, प्रकाश और पदार्थ, मस्तिष्क और चेतना दोनों अभिन्न हैं। मनुष्य-शरीर एक छोटा ब्रह्मांड और अपना मस्तिष्क छोटा परमात्मा—हमारे अपने ज्ञान और स्थूलता के आधार पर उन्हीं से यह सारा संसार बना है।

संसार परमाणुमय है। परमाणुओं के मिलने से पदार्थ बनते हैं और पदार्थों से मिलकर स्थान, देश और ब्रह्मांड बने। इस ब्रह्मांड को ही हम पदार्थों के रूप में खाते हैं, पहनते हैं, उसी में रहते हैं। हमारा शरीर भी तो पदार्थ या परमाणुओं से बना हुआ है। यह भी एक प्रकार का ब्रह्मांड ही है। आइंस्टीन ने संभवतः शरीर रूपी पदार्थ जगत् (स्पेस) में एक मस्तिष्क-सतर्कता होने के विश्वास स्वरूप अपना यह मत व्यक्त किया था कि, प्रत्येक ब्रह्मांड को एक सतर्कता (सेंटीमेंट) नियंत्रण करती है अर्थात् पृथ्वी की या प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र की अपनी एक स्वतंत्र चेतना या अहं भाव है और वह मनुष्य के समान ही गणितीय आधार पर (इन दि मैथेमेटिक वे) काम करती रहती है अर्थात् संसार मस्तिष्क द्वारा पदार्थों की रचना के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। ❒ ❒